श्री नाकोड़ा तीर्थ

मेवानगर (राज.)

श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास

श्री शत्रुंजय तीर्थ

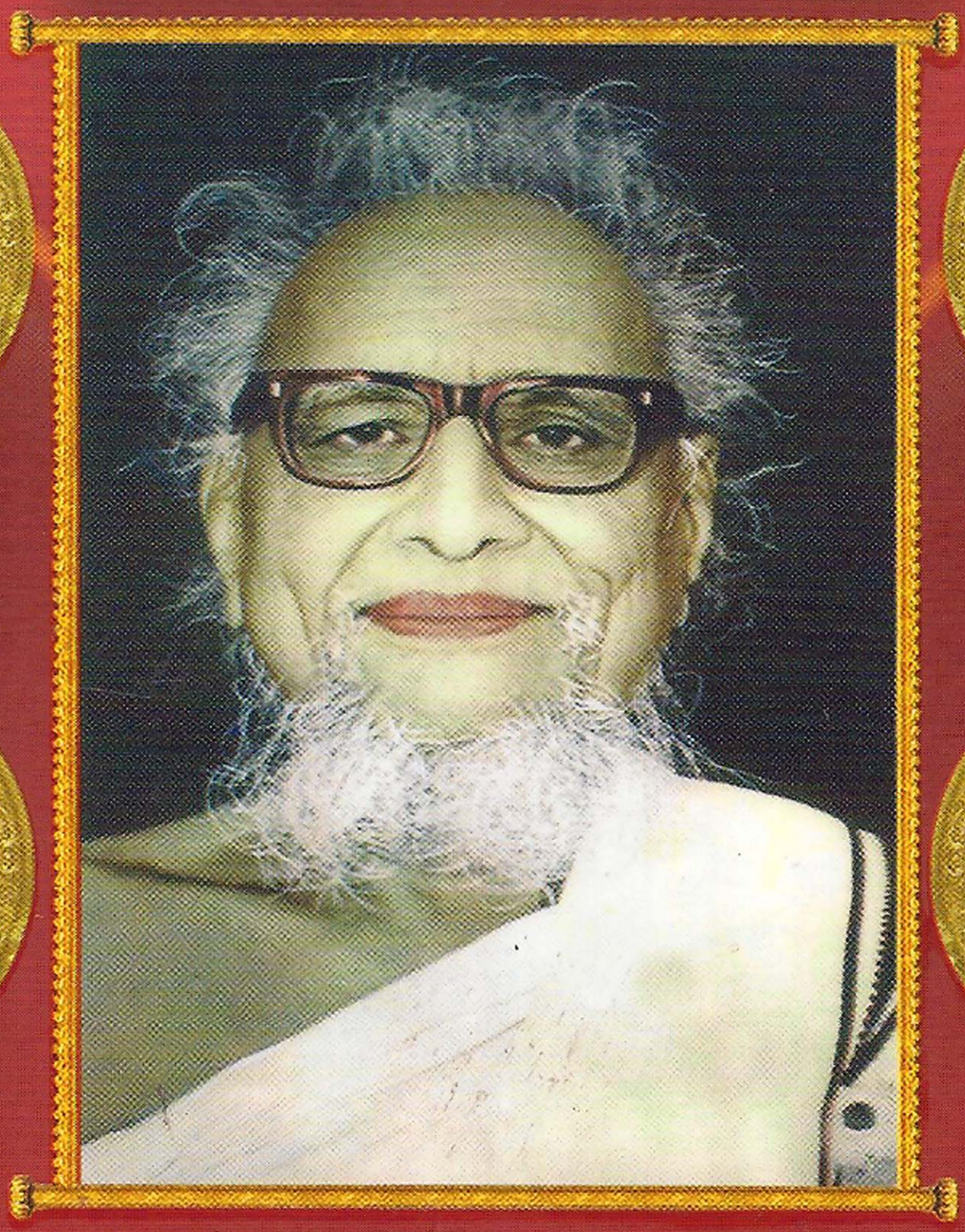

श्री हिमाचलसूरि नगर तीर्थ

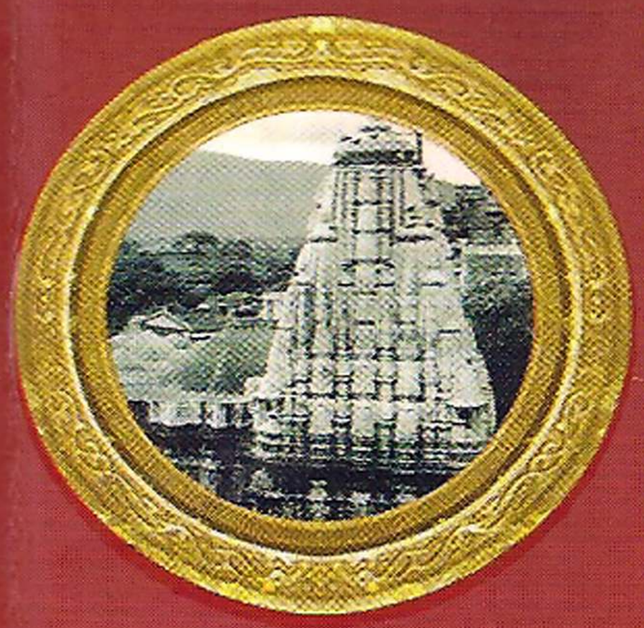

श्री कुंभलगढ़ तीर्थ

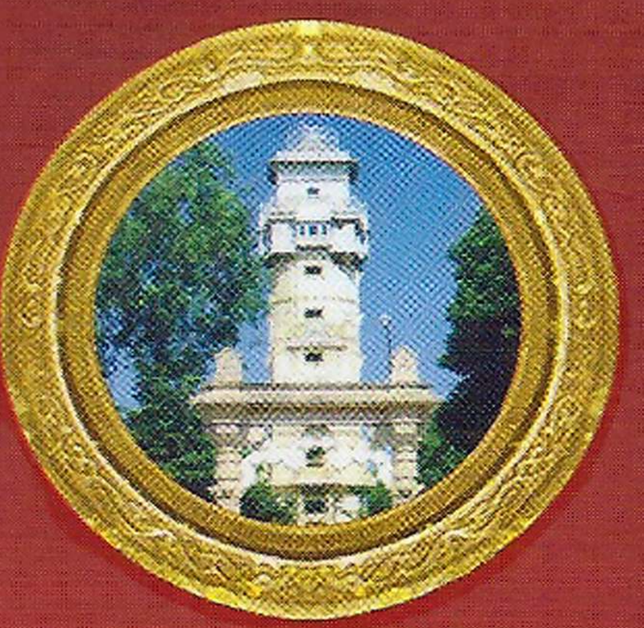

कीर्ति स्तंभ तीर्थ

संकलन सम्पादिका : मेवाड़ दीपिका साध्वीरत्ना श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा.

प्रकाशक : अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई

(झालों की मंदार-मचींद)

दिव्याशीर्वाद

मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू. मालानी उद्धारक आचार्य भगवंत श्री लक्ष्मीसूरीश्वरजी म.सा.

प.पू. समता चक्रवर्ती स्व. साध्वी श्री भक्तिश्रीजी म.सा.

प.पू. तपस्वीरत्ना स्व. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा.

शुभ आशीर्वाद दाता

मेवाड़ दीपक, नमस्कार महामन्त्र के महान् आराधक

प.पू. प.प्र. श्री रत्नाकर विजयजी म.सा.

प.पू. प.प्र. श्री विद्यानन्द विजयजी म.सा.

प.पू.प.प्र. श्री रविशेखर विजयजी म.सा.

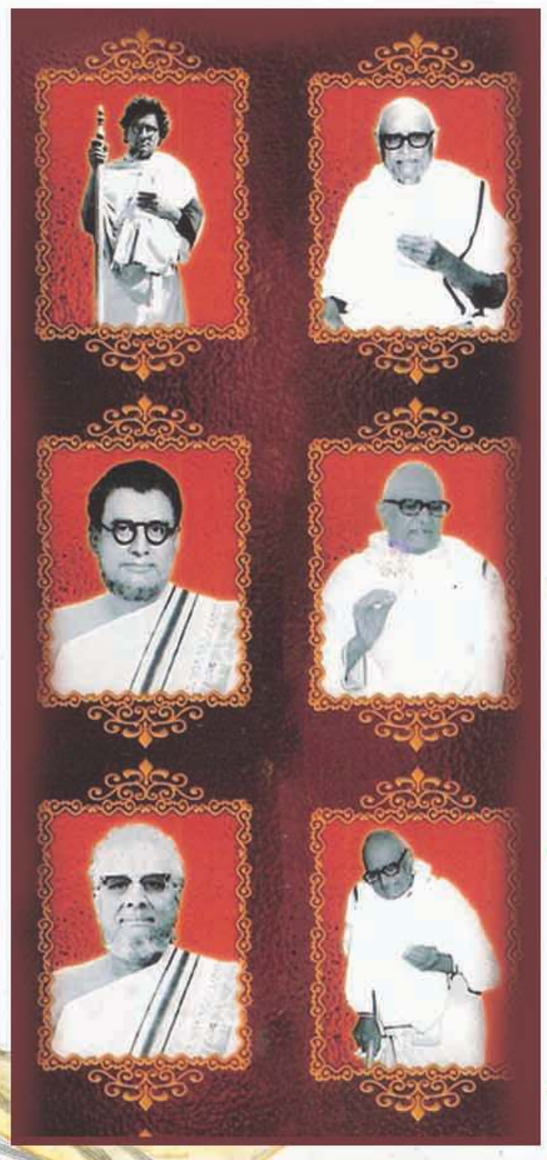

संकलन सम्पादिका

प.पू. मेवाड़ दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा.

प्रकाशक

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई (मेवाड़)

मुद्रक

नेटवर्क प्रकाशन-मुंबई

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

कैसे भूले आपका यह उपकार

सिंह सत्त्व के स्वामी मेवाड़ केशरी गुरुदेव

ओ गुरुदेव! आपका शासन पर महान् उपकार है ।

मेवाड़ की धन्यधरा पर विशेष उपकार है ।

इसलिए आप मेवाड़ केशरी से प्रसिद्ध हुए यह,

श्री मेवाड़ जैन संघ का सौभाग्य है ॥

आज वे हम सबके बीच में नहीं रहे फिर भी उनकी अनुपस्थिति में भी अनुभव गम्य हो रहा है और युग युग तक रहेगा ।

सत् पुरुषों का अवतरण प्रकाशमय होता हैं तो उनका देह विलय भी क्षितिज पर एक प्रकाश पुंज छोड़ जाते हैं। जो युग-युगान्तर तक उनकी स्मृतियों से सबका मार्गदर्शन करते हैं और करते रहेंगे।

यही आशा से आभार,

समस्त मेवाड़ जैन संघ

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

श्री आत्मरक्षा नवकार मन्त्र स्तोत्र

ॐ परमेष्ठि-नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं,
आत्मरक्षाकरं वज्र-पंजराभम् स्मराभ्यहं. ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितं,
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम्. ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी,
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम्. ॥३॥
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे,
अेसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले. ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिं,
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका. ॥५॥
स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवई मंगलं,
वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे. ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव-नाशिनी,
परमेष्ठि-पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः. ॥७॥
यश्चैनं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा,
तस्य न स्याद् भयं, व्याधि-राधिश्चाऽपि कदाचन. ॥८॥

जेना प्रचंड प्रभावथी, बिखराय बादल कर्मना ।।
त्रण लोग ना जीवो मली, करे हर्ष धरीने वंदना ।।
जेना स्मरणथी थाय छे, पापो तणी निकदंना ।।
अेवा श्री नवकार मंत्रने, भावे करुं हुं वंदना ।।
मारा श्री नवकार मंत्रने, भावे करुं हुं वंदना ।।

श्री जगतगुरू पाट परम्परा हीरसूरि वंशावली

साधना के प्रणिधान, सिद्धि के निधान, मैत्री भावना के अखंड उपासक
समता प्रेमभाव के स्वामी , जीवन शिल्पी आचार्य संयम वृत्ति और संयमी प्रवृत्ति के स्वामी
पुण्य वैभव , प्रज्ञा वैभव ,पवित्रता वैभव,प्रत्युत्पन्नमति सम्पन्न सूरिदेव
यशस्वी पाट-परम्परा को वंदना.....

१. अकबर प्रतिबोधक जगत गुरुदेव श्री हीर सूरीश्वरजी महाराज
२. पंडितवर्य प.पू. पन्यास प्रवर श्री तिलकविजयजी महाराज
३. पंडितवर्य प.पू.प.प्र. श्री रिद्धि विजयजी महाराज
४. प.पू.प.प्र. श्री चारित्र विजयजी म.सा.
५. प.पू.प.प्र. श्री रंग विजयजी म.सा.
६. प.पू.प.प्र. श्री तेज विजयजी म.सा.
७. प.पू.प.प्र. श्री यशवन्त विजयजी म.सा.
८. प.पू.प.प्र. श्री कुशल विजयजी म.सा.
९. प.पू.प.प्र. श्री जित विजयजी म.सा.
१०. प.पू.प.प्र. श्री विजयजी म.सा.
११. प.पू.प.प्र. श्री जय विजयजी म.सा.
१२. प.पू.प.प्र. श्री हर्ष विजयजी म.सा.
१३. प.पू.प.प्र. श्री चंद्र विजयजी म.सा.
१४. शास्त्र विशारद पंडितवर्य प.पू.प.प्र. श्री हित विजयजी महाराज

१५. मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक दो सत् बत्रिश प्रतिष्ठा कारक
ज्योतिष शिल्प दिवाकर आचार्यदेव श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी महाराजाधिराज
हित विजय बगीयों देखो है फूल की क्यारी

वंदना.... वंदना....

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

गुरु श्रद्धा में पूजित होकर, भक्ति थाल सजाएं हम ।
उन उपकारी गुरुदेव को, सादर शीश झुकाएं हम ।।

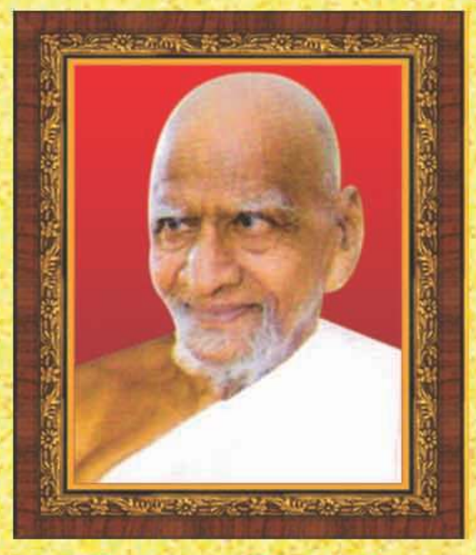

प.प.श्री रत्नाकरविजयजी म.सा.

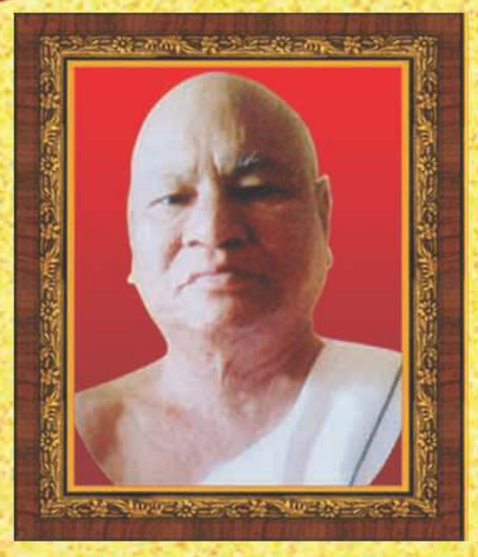

प.प.श्री विद्यानंदविजयजी म.सा.

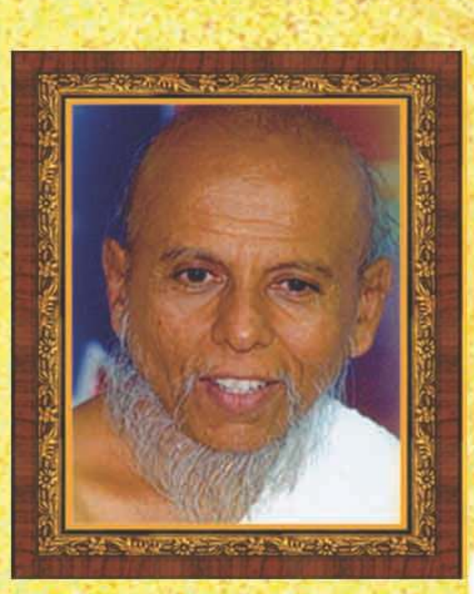

श्री रविशेखर विजयजी म.सा.

श्री ललितशेखर विजयजी म.सा.

परम पूज्य मेवाड़ केशरी,
नाकोड़ा तीर्थोद्धारक
श्रीमद् विजयहिमाचल सूरीश्वरजी म.सा.

सा. श्री भक्तिश्रीजी म.सा.

सा. प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिटे न भेद ।
गुरु बिन संशय ना मिटे, चाहे पढ़लो चारो वेद ।।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

श्री गुरुदेवाय नमः

हिमाचल संत वासी / पंजली

ओ गुरुदेव

मव अटवी के भंवर-मार्ग मे हम यहाँ-वहाँ भटक रहे थे हमारी करुणा जनक स्थिति को देखकर आप हमारे सामने दौड आये। आप मिले---समझे आँख मिली---पैर मिले--राह मिलि सहारा मिला---आपने ज्ञान का दीप जलाया। हमारा मोह अंधकार नष्ट किया आपने हमे राह पर चलाया हमारी दृष्टी सम्यग् बनायी ज्ञान सम्यग् बनाया कदमों को सही मार्ग दर्शन दिया और लक्ष्य केन्द्र दिखाकर आप अचानक नजरों से ओझल हो गये गुरुदेव पर कितिरुपी शरीर से आज भी आप विद्यमान है आपका सम्पूर्ण गुण आलेखना शक्य नही पर सा. श्री कमल प्रभा श्री द्वारा पू. गुरुदेव के पावन मयी गरिमा समाज के बीच आज जो प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास होने जा रहा है। इस अवसर पर संपादक प्रकाशक एवं सभी सहयोगीयों की खुब-खुब सराहना करता हूँ अन्तःकरण से आशीर्वाद देता हूं

मेवाड केशरी की कुछ जीवन झलक पावन ग्रंथ मे उनसे जुडे संस्मरण, जीवन, वृतांत के वांचन-मनन एवं चिंतन से सभी आनंदित हो उठेंगें एवं उनका पथ प्रदर्शक बनेगा व अपना जीवन गुरुतत्व ऐसे गौरवान्वित बनायेंगे। इस पुस्तक की उपादेयता स्वयं सिद्ध होगी। सुखद भविष्य की मंगल कामना के साथ

रत्नाकर विजय
गणि

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

धर्म लाभ

मेरे हृदय का हर अणु, उपकार का सुमरिण करें।
मेरे हृदय की धड़कने, गुरु नाम को ही रटन करें।
हे पास मेरे क्या गुरु, जो आपको अर्पण करु।
ऐसे गुरु हिमाचल सूरि को, भाव से वंदन करु।

जीवन में सद्गुरु का मिलना बहुत ही कठिन हैं। सद्गुरु एक विलक्षण अध्यात्मिक शक्ति हैं जो मानव को नर से नारायण आत्मा से परमात्मा और इन्सान से भगवान बना देती हैं, सद् गुरु जीवन के एक श्रेष्ठ कलाकार है । अनगढ़ पत्थर को सुघड़ प्रतिमा का रूप देकर उसकी गौरव गरिमा में अभिवृद्धि करते हैं। आपका जीवन गुणों का भण्डार हैं, जैसे गुलदस्ते में रंग-बिरंगे फूल अपनी मधुर सौरभ से जनमन को ताजगी प्रदान करते हैं वैसे ही सत् गुरुदेव के सत्गुणों की सुमन नई दिशा प्रदान करती हैं, शरीर आवरण छोड़कर जैन जगत की वह प्रदिप्त ज्योति समाज की आँखों से ओझल हो गयी । भौतिक शरीर से नहीं लेकिन कीर्तिरुपी शरीर से गुरुदेव हमारे लिए आज भी जीवित हैं। जीवन की सही दिशा और मार्गदर्शन कराने वाले थे । हमारा कर्त्तव्य बनता हैं कि हम उनके गुणों की महिमा गायें । विश्व मानस कमलों मे सद्गुण परागों से गुण मधु का संवरकर उसी मधुकोष से प्रतिफल वितरित किया करते थे। इस विश्व वाटिका में अनंत आत्माएं होती हैं और चली जाती हैं । पर सभी आत्माएं सरल हो यह सम्भव नहीं है। हजारों में कुछ आत्माएं ही ऐसी होती हैं जो प्रकृति एवं प्रवृत्ति में सरल होती है। इस विराट भूमि में अनेक आत्माएं जन्म लेती हैं और अनेक आत्माएं कालकवलित हो जाती है। परन्तु परिवर्तनशील यह संसार का नियम ही हैं। उनकी कोई गणना नहीं है। परिवर्तनशील संसार में जो महान् आत्माएं स्वपर की कल्याण साधना में समरस होती हैं। अहिंसा, संयम, तप की त्रिवेणी गंगा में जो मन का कषाय धोकर निर्मल बनते हैं, साधना के सरोवर में राजहंस बनकर ज्ञान के अनमोल मोती चुगे हैं। जनता को समता, सरलता का अमर संदेश प्रदान किया।

स्वयं ज्ञानलोक से आलोकित और संसार को आलोक प्रदान करने वाले मेरे गुरुदेव सदा के लिए अजर अमर है। अपने यशस्वी कार्यों से वे संसार में अक्षय कीर्ति अर्जित कर लेते हैं, ऐसी ज्योति पुंज, गुण पुंज, तपो पुंज व्यक्ति संसार के लिए युगों-युगों तक प्रकाशमान ज्योति स्तम्भ के समान पथ के प्रदर्शक होते हैं। उनके जीवन का क्षण-क्षण देह का कण-कण, जन-जन के होने के लिए समर्पित होता है। सचमुच गुरुदेव की महिमा अनंत हैं। गुरुदेव के उपकार अनंत हैं, अंधेरी गलियों में प्रकाश करने वाले हैं। गुरु पारसमणी के समान है। गुरु यह लोक और परलोक के परमोकारी हैं, गुरु के गुण अनेक हैं वो मानव जीह्वा से वर्णन करना असक्य हैं। मेवाड़ केशरी गुरुदेव जिस युग में जन्में उस युग में हमारा जन्म हम भाग्यशाली ही नहीं पर महा भाग्यशाली हैं।

सौरभ सुमन समाये, तुममें, सुगन्ध की बहे अविरल धारा
सबकी खुशियों से भर जाये, यह प्यारा जन्मदिन तुम्हारा
जीवन में ये बार-बार मौका आये, हम तुम्हारे तुम हमारे काम आये

-साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा.

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

My Gurudev is Number one

गुरुदेव की रुह में बसी है वही सूरत

मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक 232 प्रतिष्ठा शिरोमणि प.पू.आ.भ. श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वर म.सा. आज शारीरिक रुप से हमारे बीच में नहीं रहे लेकिन आत्मिक रुप से हमारे जिनशासन में नींव के पाये की तरह विद्यमान है।

आज जब प्रथम पेज की शुरुआत ही की है लेकिन हाथ कांप रहे हैं कि महान् विरल विभूति के मोतीरूपी गुणों का एक माला में कटि बद्ध करना बहुत ही मुश्किल कार्य है। लेकिन प्रयास नहीं करुँ तो यह मेरी सबसे बड़ी नादानी होगी, गुरुदेव गुणों के भंडार ही नहीं पर गुणों की खान है। जिन्होंने अपना पूरा जीवन पालन से लेकर अंतिम शिबिका तक जिन शासन के हित में समर्पित कर दिया। आज इस "श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास" पुस्तक छपवाने का मुख्य कारण यह है कि अपने जैन शासन पर कितना उपकार था गुरुदेव का वह इतिहास के पन्नों पर अमर हुई है। वे जन-जन के दिलों में बिराजित रहे, तो हमें एक ऐसी यादगार पुस्तक (धरोहर) सजोनी (बनानी)चाहिए जो जन-जन के मानव के स्मृति पटल पर उनके व्यक्तित्त्व का प्रकाश डाल सके। वैसे अमूल्य विखरे मोतियों को अब एक माला का रूप दे दिया जाये तो उसका रूप व मान मोल और बढ़ जाता है।

गुरुदेव तो वे मानवता की मसीहा थे। जिनके दर्शन मात्र से भाव विभोर हो जाते थे।

आपको पढ़ सकूं ऐसी किताब चाहिए
गुण कितने हैं आप में मुझे हिसाब चाहिए
कैसे बने आप इतने महान
इस प्रश्न का जबाव चाहिए।

हम सोचते हैं कि सागर में जितने मोती है। वे सारे पा लूं तो यह हमारी मूर्खता है। सागर के चन्द मोती पाने के लिए हमें सागर की तह तक जाना पड़ता है तब कहीं जाकर एकाध मोती हाथ आता है। तो मैं नादान क्या गुरुदेव के गुणों का उल्लेख एक ही पुस्तक में कर सकती हूँ। गुरुदेव के गुणों को एक पुस्तक में आलेख करना सूर्य की किरणों को अपने हाथ में पकड़कर

सोचना कि मैंने सूर्य को पकड़ लिया है और बस मैं यही नादानी कर सकती हूँ प.पू. मेवाड़ दीपक नमस्कार महामंत्र के महान् आराधक प.पू.पं.प्र. श्री रत्नाकर विजयजी म.सा. के आशीर्वाद से प.पू. पन्यास प्रवर श्री विद्यानंदजी म.सा. के मार्ग दर्शन एवं प.पू. मेवाड़ दीपिका सा. श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से मेवाड़ केशरी के गुणों को रंग विरंगे फूलों के गुलदस्ते की भांति विविध गुणों के सौरभ से सुरभित था बस उसे ही सामान्य भाषा शैली में प्रस्तुत किया गया है इसमें किसी भी प्रकार की बनावट, कुडीमता नही, सहजता व स्वाभिकता है प्रदर्शन नहीं स्फुर्ति भावना है। अतिशयोक्ति नहीं यर्थाथता हैं। आप विदेहा हो गये पर कीर्तिरुपी शरीर से आज भी विद्यमान हैं। भाग्यशाली उदारमना व अंहिसा पार्श्व पूनम मंडल प्रति हार्दिक आभार प्रगट करते हैं की इस पुस्तक हेतु तन-मन-धन से सहयोग देकर ग्रंथ को साकार रूप दिया। पुस्तक के लेखन कार्य काफी सावधानी के उपरान्त भी काफी त्रुटी रही होगी इसलिए हम क्षमासार हैं।

पू. गुरुदेव के विषय में कई लेखों की कई बातों की पुनरावृत्ति भी हुई थी। फिर भी गुरु भक्ति से लिखे वे सारे सुनहरे शब्दों को ऐसे ही ले लिया है। आंतरिक भावना व सहजता से लिखे हुए सभी लेखों को वास्तव में बार-बार पढ़ने का मन होगा ऐसा हमें सम्पूर्ण विश्वास है। वितराग की आज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो अथवा भावुकता के विवश होकर अतिश्योक्ति हुई तो त्रिविध मिच्छामि दुक्कड़म्

माता-पिता के नाम को,
गुरुदेव धन्य आपने कर दिया।
माँ शारदा की गोद को भी
सृजन करके भर दिया ।।
ऐसी महान् विभूति को कोटि-कोटि वंदना

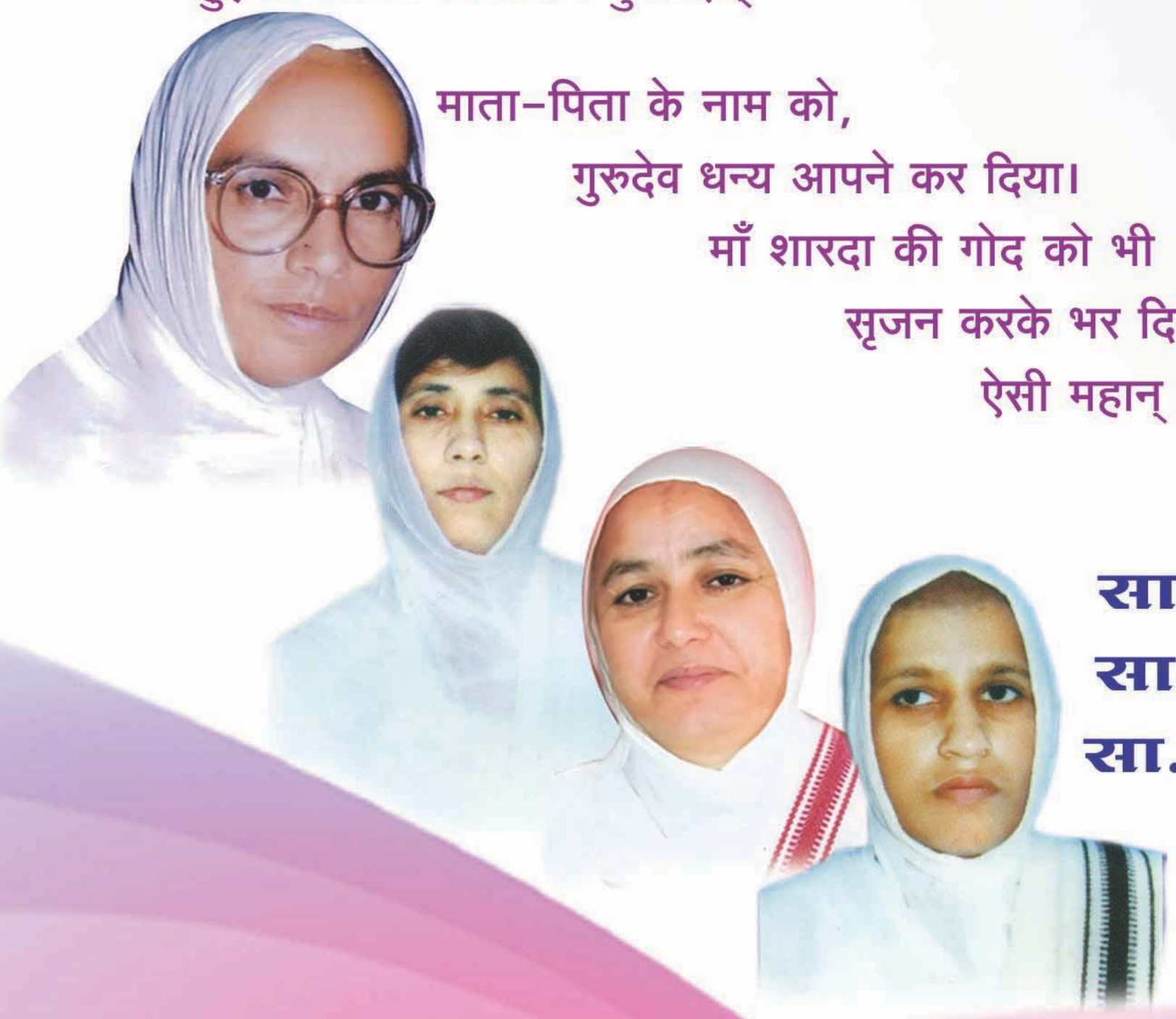

कमल शिशु
सा. सौम्यप्रभा श्रीजी
सा. प्रियदर्शना श्रीजी
सा. कल्पदर्शना श्रीजी

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

आत्मा नहीं तो शरीर निष्काम, गुरु नहीं तो जीवन निष्काम

सौ-सौ सूरज उगे, और चंदा उगे हजार

चंदा सूरज हो मिले, फिर भी बिन गुरु अंधार

नदी-पहाड़ों से निकलकर प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी बनती है। कमल कीचड़ में पैदा होकर जगत को सुवासित बनाता है। वृक्ष पत्थर की मार खाकर भी जगत को मीठे मधुर फल प्रदाता करता है और महान् पुरुष जन्म धारण करके प्राणी मात्र के कल्याणकारी होते हैं। उच्च आत्माएँ अपना भविष्य उज्जवल बनाकर पूरे देशों को उज्जवल बनाता है। रत्न खदान से पैदा होकर, जगत का अनमोल मनमोहक रत्न बन जाता है। उसी प्रकार हमारे मेवाड़ की धन्यधरा पर एक रत्न चिंतामणि एवं पारसमणि की तरह जन्म धारण करके पूरे जगत के आधार भूत बनकर प्राणी मात्र के कल्याणकारी हुए ऐसे हमारे गुरुदेव श्री मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक दो सत् बत्रिस प्रतिष्ठा-अंजनशलाका शिरोमणि ज्योतिष मार्तण्ड शिल्प दिवाकर प.पू. आ. देवेश श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. को वंदना वंदना ....

सा. साध्वी कल्पदर्शनाश्रीजी

मेवाड़ केशरी गुरुदेव विधिपूर्ण वंदना....

भक्तिपूर्ण भावांजली .....

अक्षुण्य आदराजंली ....

विवेकपूर्ण विनयाजंली ....

शब्द नहीं है इस महारथी के विसर्जन के, आँखों में आँसू है हजारों हजार उपकार के प्रेममय ममतामय स्नेह की गंगा बहाते , क्या शब्द लिखूँ श्रद्धांजलि के.....?

- मुमुक्ष रसिला कोठारी रिछेंड

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

शुभकामना संदेश

गुरुदेव ने समाज पर अंनत उपकार किया है...

जैन मोहन बी. पामेचा

अध्यक्ष

- मेवाड भवन–पालीताणा
- श्री जैन संघ–झालो की मंदार

विश्ववंद्य विभूति महान् ज्योर्तिधर नवयुग के निर्माता मेवाड़ केशरी, नाकोड़ा तीर्थोद्धारक जन–जन के श्रद्धा के केन्द्र हमारे मेवाड़ संघ के महान् उपकारी पू. 1008 गुरुदेव श्री हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. का समाज एवं शासन पर इतना उपकार है की उनके गुणानुवाद के लिए शायद शब्द कम पड़ जाये। परन्तु महान् विभूति की महानता का परिचय जन–जन तक पहुँचाने के लिए शब्द ही श्रेष्ठ माध्यम है, उनके प्रति समाज में गहरी आस्था, श्रद्धा व लगाव था । उनको विस्मृत करने के लिए पूज्य. साध्वीजी भगवंतो द्वारा सर्व प्रथम बार "श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास" की पुस्तक का विमोचन होने जा रहा है। वह बहुत ही अनुमोदनीय है साथ में अंहिसा पार्श्व पूनम मंडल मुंबई को धन्यवाद है कि यह अनुपम मौका गुरुदेवों ने आपको दिया ऐसे ही धार्मिक कार्यों में आगे बढ़ते रहो । यही शुभ भावना के साथ

सदी की महान विभूति थी गुरुदेव...

कनकराज लोढ़ा

अध्यक्ष

- श्री घाणेराव जैन संघ
- श्री क्षैत्रपाल अतिथी भवन

प.पू. नाकोड़ा तीर्थोद्धारक एवं नाकोड़ा भैरव संस्थापक आ.भ. श्रीमद् विजयहिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. का जैन शासन पर महान उपकार है। वह शब्दों से कभी भी वर्णनातित नहीं होता है ऐसी विरल विभूति की सर्व प्रथम बार **"श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास"** नामक पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है। यह बहुत ही अनुमोदनीय है। अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल मुंबई के सदस्यो बहुत बहुत धन्यवाद तथा ऐसा अनुमोदनीय लाभ ऐसा लाभ आप जीवन में लेते रहना यही शुभेच्छा।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

शुभकामना संदेश

गुरुदेव ने मेवाड़ वासीयो को धर्ममय बनाया..

चंदनमल वी. संघवी

मजेरा (मेवाड़)

अध्यक्ष

श्री हिमाचलसूरि नगर

आप अपने गुरुदेव श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्री 1008 श्री हिमाचल सूरीश्वरजी महाराज साहेब की 26 वी पुण्यतिथि पर गुरुदेव के जीवन परिचय पर आप बुक बना रहे हो वह हमारे समाज के लिए बहुत याद गार रहेगी क्योंकि गुरुदेव ने पूरे मेवाड़ के मगरों को विहारकर मेवाड़ वासियों को नमस्कार पट्ट पर लाये है उनकी यादगार में यह हिमाचल समवसरण तीर्थ–चारभुजा बनाया गया । अतः अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल द्वारा जो यह पुस्तिका छापकर गुरुदेव को याद कर रहे हो आगे भी हर धर्म कार्य में आगे बढ़ते रहें गुरुदेव को नाम लेकर जो भी कार्य करोगे वह पूर्ण रूप से सिद्ध होगा अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल के सभी सदस्य को मेरा तथा हिमाचल नगर ट्रस्ट मंडल से बहुत धन्यवाद तथा शुभ कामना।

गुरुदेव की प्रतिमा नाकोड़ाजी तीर्थ में हो...

अशोक जी. बाफना

चारभुजा (मेवाड़)

अध्यक्ष

बोम्बे मेटल एक्सचेंज लि.

नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी आ.भ. श्रीमद् विजयहिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. के "अमर इतिहास" के जीवन परिचय के अनावरण पर मैं पं.प्र. रत्नाकर विजयजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या "मेवाड़ दीपिका" सा. श्री कमलप्रभाश्रीजी, सा.श्री सौम्यप्रभाश्रीजी आदि ठाणा को वंदन करता हूँ। जिन्होंने गुरुदेव श्री के अमर इतिहास का दर्शन हम सभी गुरुभक्तों तक पहुँचाने का एक संकल्प लिया और इस सपने को साकार करने हेतु निरन्तर सतत् प्रयन्त कर सभी यादगार इतिहास का संकल्न किया और यह सपना साकार हुआ। इस सपने को साकार करने में अहिंसा पार्श्वपूनम मंडल के सभी गुरुभक्तों को दिल की गहराईयों से खूब–खूब अनुमोदना करता हूँ और बधाई देता हूँ । मेरा सभी गुरुभक्तों से विशेष अनुरोध है कि सही मायने में नाकोड़ा तीर्थोद्धारक गुरुवर को श्रद्धांजलि तब होगी। जब हम सब मिलकर नाकोड़ा तीर्थ के परिसर में हमारे दिलों में जागृत गुरुदेव की प्रतिमाजी की स्थापना करने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। प्रभु से ऐसी मंगलकामना करता हूँ आपका मंडल सदैव धर्म और कर्म के इस मार्ग पर आगे बढ़ते हुए जिन शासन की शोभा बढ़ावे

मेरी आस्था...मेरा मंथन...

मेरे गुरुदेव ही मेरे सबकुछ है ... हाँ सबकुछ !

अनिल भंवरलालजी पामेचा

झालों की मंदार (मेवाड़)

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई (मेवाड़)

"गु" अर्थात् अंधकार "रु" अर्थात् प्रकाश.... अतः शब्द बना "गुरु"।

हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये उन्हीं का नाम गुरु है।

जो हमारे रोंम-रोंम में अर्थात् रूह में समाया होता है हमें हर समय अच्छे बुरे का ज्ञान करवाता है, वह गुरु होता है। गुरु शब्द की महिमा का बखान करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। शास्त्रों ने भी गुरु की महिमा को अपरम्पार बताया है किसी ने ठीक ही कहा है;-

सब धरती कागज करुं, लेखनी सब वन राय,
सात समंदर मसी (स्याही) करुं, फिर भी गुरु गुण लिखियों न जायें।

एक ऐसे असाधरण गुरु जिन्होंने मानव जाति को एवं सकल जैन संघ को अपने उपदेशों से सिंचित किया। उन्हें मानव धर्म सिखाया वह गुरु है श्री परम पूज्य मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजयहिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. जो आज भी हमारे दिलों में बसकर हमें कुमार्ग से सुमार्ग की ओर प्रेरित करते हैं।

गुरुदेव की अमृतवाणी सुनकर पक्षी भी चहकते थे। कल-कल करती नदियों एवं झरनों से संगीत फूटता था। पक्षी कलरव करने लगते थे और जहाँ पतझड़ था वहाँ बसंत हो जाता था, ऐसे गुरु को करोड़ों बार प्रणाम! उनके लिए इतना ही लिखने की योग्यता है।

करुणा सत्य, दया और मानवता, जिनके जीवन का श्रृंगार करती है,
मानव तो मानव ऐसे सद्गुरु को, सृष्टि भी शत् शत् प्रणाम करती है।

मैं परम् पूज्य मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजयहिमाचल सूरीश्वजी म.सा. के शिष्य रत्न प.पू.पं.प्र. रत्नाकरविजयजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या "मेवाड़ दीपिका" सा.श्री कमलप्रभाश्रीजी, सा.श्री सौम्यप्रभाश्रीजी, सा.श्री कल्पदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा को वंदन करता हूँ। आपश्री की प्रेरणा और मार्गदर्शन से अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल को "**श्री नाकोड़ा तीर्थोद्धारक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास**" नामक ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल आपका बहुत-बहुत अभारी है। आप भविष्य में भी इसी तरह लाभ का अवसर दीजिएगा। जय जिनेन्द्र।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

गुणगान हमारे आपके सबके गुरुदेव की...

पूज्य गुरुदेव श्री शासन की एक शान बन गये ,समस्त जगत जाति के अरमान बन गये ।
पूज्य गुरुदेव श्री के वाणी में था जादू सा असर, जिनको लगी हवा वे भटकते राह से ठिकाने आ गये ।

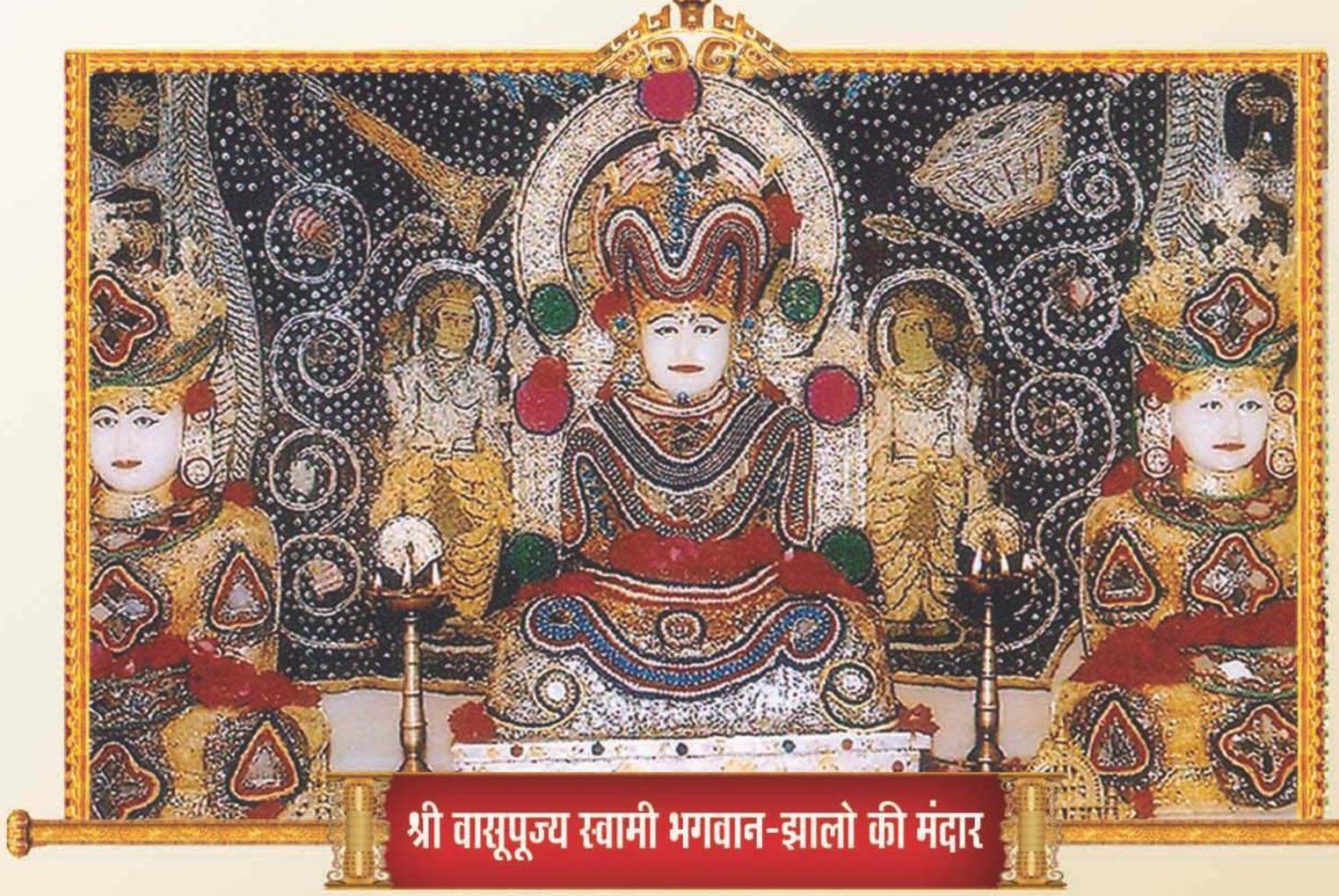

श्री वासूपूज्य स्वामी भगवान-झालो की मंदार

मंदार के महान उपकारी
गुरुदेव मेवाड़ केशरी
जिसने मिटाई दूसरों की पीर हैं,
जिसने बनाई स्वयं ही तकदीर हैं,
अभिनन्दन हो उन पूज्यवरों का,
जो जैन धर्म का वीर हैं।

धरती की कोख में गिरा हुआ हर बीज वटवृक्ष का रूप धारण करें जरुरी नहीं है। कुछ बीज ऐसे भी होते हैं, जो प्रस्फुटित होने से पहले ही वसुंधरा के कोख में धुल सुंधारित होते हैं। अस्तित्व समाप्त हो जाता हैं, बीज अंकुरित होने से पहले ही मुरझा जाते हैं। कुछ बीज अंकुरित होते हैं, किन्तु न तो उस पर फूल लगते हैं, न फल, न ही पथिक को छाया दें सकते और न उनका कोई नाम जानता हैं। किन्तु वटवृक्ष का बीज दिखने में अत्यंत छोटा होता है लेकिन उसके विशाल वटवृक्ष का निर्माण होता हैं, वटवृक्ष आने जाने वाले राहगीरों को छाया भी देता हैं । सुन्दर देखकर क्षुधितों की क्षुधा शांत करते हैं, और ये वृक्ष चिरस्मरणीय होता है, इसी तरह संसार में हर जन्म लेने वाला हर व्यक्ति महान् नहीं होता हैं। लाखों करोड़ों व्यक्तियों के अन्दर एक व्यक्ति विशेष पुण्य लेकर इस धरा पर आता हैं स्व पर कल्याण करके अपनी अमिट छाप छोड़कर जाता हैं। वो सदियों तक उनकी अमर कहानी चलती है, वैसे मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचलसूरिजी महाराज इस धर्म विह्व वंजर भूमि में विचरण करके धर्म की फसल लहराई–पूज्य गुरुदेव ने स्व पर दोनों का कल्याण करने की भावना ओत–प्रोत थी पूज्य गुरुदेव की हमारे श्री संघ पर असीम कृपा हैं और सदा आप देवलोक से असीम कृपा बरसाते रहना, हम इतने पुण्यशाली हैं कि इसी महान् विभूति की जन्म शताब्दी महोत्व मनाने का सुअवसर मिला यह हमारे प्रबल पुण्योदय हैं, झालों की मंदार की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव के कर कमलों द्वारा हुई... आज गाँव में हर व्यक्ति सुखशांती सम्पन्न है, उसके बाद पुज्य गुरुवरों का चार्तुमास–मेवाड़ केशरी गुरुदेव का एक चातुर्मास हुआ । पूज्य हमारे पामेचा परिवार का कुल दीपक ही नहीं बल्कि शासन दीपक, मेवाड़ दीपक प.पू. पन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी महाराज का प्रथम चातुर्मास हुआ ।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

मेवाड़ केशरी की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. स्व. सा श्री भक्तिश्रीजी म.सा. की शिष्या सरलमना मातृ हृदया साध्वीजीश्री कमलप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 का झालों की मंदार के अन्दर द्वितीय चातुर्मास हुआ पहला चातुर्मास 1996 में प.पू. साध्वी श्री कमलप्रभा श्रीजी. म.सा. आदि ठाणा 2 का हुआ था उस समय तपस्या के चार चाँद लगे थे। चार महिने लगातार तपस्या चली थी जिसमें जैन अजैन सभी ने भाग लिया अजैन जाति में भी बहुत तपस्या हुई थी । उसके बाद सालों-साल धर्म की प्रभावना मंदार में होती रही प.पू. मेवाड़ केशरी गुरुदेव की गुरुमूर्ति मेवाड़ केशरी द्वारा प्रगट किये हुए नाकोड़ा भैरव के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प.पू. योग दिवाकर आचार्य भगवंत श्रीमद् विजयजी आनंदघन सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा, प.पू. साध्वीजी श्री कमलप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में धूमधाम से प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। उसके बाद छगनीबाई बख्तावरमलजी पामेचा (धुलेवा मेटल) द्वारा धुलेवा एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा 1000 व्यक्तियों का 16 दिन का संघ जिसमें समेत शिखर आदि तीर्थों की यात्रा करवाकर संघ माला अपने वतन में झालों की मंदार में रखी थी। उस समय प.पू. मेवाड़ दीपक प.प्र. श्री रत्नाकर विजयजी म.सा. विराजमान थे। उस समय प.पू. साध्वीजी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा. 300 कि.मी. का विहार करके मंदार पधारे थे । उसके बाद साध्वीजी की निश्रा में हर साल कार्यक्रम होता गया-हर साल हमारे धर्मरुपी बगीचे को जिनवाणी से सिंचन करते गये । वापस श्री संघ के अति आग्रह भरी विनती को स्वीकार कर सन् 2007 का चातुर्मास हमारे श्री संघ की झोली में आया, इस चातुर्मास की आराधना तपस्या रंग-बिरंगे कार्यक्रम-मेवाड़ के इतिहास की लड़ी में एक कड़ी जुड़ी-आपश्री के (1) चातुर्मास प्रवेश पर विशाल जन समुदाय (2) श्रावण सुदी पंचमी के दिन नेमीनाथ भगवान का भव्यातिभव्य मंच प्रोग्राम सहित जन्मकल्याणक उजमणी दूसरे दिन भव्याति भव्य दीक्षा वरघोड़ा (3) पर्युषण महापर्व की आराधना तपस्वियों का भव्यातिभव्य ऐतिहासिक वरघोड़ा...उसके बाद मेवाड़ केशरी गुरुदेव की 21वीं स्वर्णारोहण पुण्य तिथि पर आठ दिन का महोत्सव रखा उसमें 108 जोड़े गौतम लब्धि महापूजन 108 सजोड़े सरस्वती महापूजन मणीभद्र महापूजन सहित शालिभद्र की नवाणुं पेटी आदि चित् आकर्षक कार्यक्रम हुआ ।

22/11/2007 को मेवाड़ केशरी गुरुदेव की पुण्यतिथि पर 52 गाँव मगरा प्रांत, वोराट क्षेत्र के सभी लोगों ने सभी (गाँव) झालों की मंदार में सामूहिक रूप से पुण्यतिथि मनाई गई। विजय हिमाचल सूरि नगर चारभुजा चौराया के विजय हिमाचल सूरि हॉस्पीटल के शिलान्यास की बोली लगवाई गई उदार दानवीर भामाशाह श्री मोडीलालजी मोहनलाल मांगीलालजी ओमप्रकाश (निवासी मजेरा) हाल पारस पेपर्स अहमदाबाद वालों ने ली-यह हमारे मंदार श्री जैन संघ पर गुरुदेवों की महेर हैं। हमेशा महेर रहेगी । आज मंदार का जैन संघ जो हमेशा पूर्णिमा को सामूहिक रुप से यात्रा करने जाते हैं। धर्म के हर कार्य में आगे हैं और सदा आगे रहे यह गुरुदेवों से आशीर्वाद प्राप्त करने की भावना रखते हैं।

लि. अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई (मेवाड़)

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

जगद्गुरु आचार्य भगवंत श्री हीरसूरीश्वरजी महाराज साहेब का इतिहास

History.....

भारत देश

गुजरात प्रांत की पुण्यभूमि प्रह्लादनपुर नगर । पल्लविया पार्श्वनाथ आदि जिनमंदिरों से विभूषित प्रह्लादनपुर आज 'पालनपुर' के नाम से जग मशहूर है। उसी नगर में कुरांशाह नाम का श्रेष्ठी रहता था। जिसकी धर्मपत्नी का नाम नाथीबाई था। कुरांशाह न्यायप्रिय, नेक और ईमानदार थे। परम्परागत रूप से उन्हें जैन धर्म की प्राप्ति हुई थी। जैन धर्म के आचार-विचारों से उनका जीवन भावित था।

संघजी, सूरजी और श्रीपाल नामक तीन पुत्रों के बाद वि.सं. 1583, मगसर सुदी 9 के दिन शुभ दिन वेला में नाथीबाई ने एक सुंदर तेजस्वी पुत्र रत्न को जन्म दिया। उस समय किसे पता था कि यह छोटा सा नन्हा बालक आगे चलकर जैन शासन के गगन मण्डल में एक तेजस्वी सूर्य की भांति चमक उठेगा। आगे चलकर उस बालक का नामकरण किया गया हीरजी । गौरवर्ण, सुदृढ़ शरीर और आकर्षक मुख मण्डल के कारण हीरजी सभी को प्यारा था। माँ ने बचपन से हीरजी को सुंदर संस्कार प्रदान किये।

माँ तो 100 शिक्षक से भी बढ़कर है। प्रेम और वात्सल्य से नहलाकर वह बालक में इस प्रकार के सुंदर संस्कारों का भी बीजारोपण कर सकती हैं, जो आगे चलकर वटवृक्ष बन जाय।

माता-पिता ने हीरजी में सुसंस्कारों का बीजारोपण किया। उस समय नगर का वातावरण भी धर्ममय था। इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि उस समय प्रतिदिन जिन मंदिर में 50 मण चावल और 16 मण सुपारी आती थी। इससे अनुमान कर सकते हैं कि लोगों के हृदय में जिनेश्वर भगवंत के प्रति कितनी श्रद्धा, आस्था और सर्मपण की भावना होगी ।

भागवती दीक्षा

हीरजी की उम्र मात्र 12 वर्ष की थी और उस समय उसे अपने माता-पिता का वियोग हो गया । माता-पिता की अकाल मृत्यु से हीरजी को अत्यंत ही आघात लगा। उसके वज्राघात हृदय को आश्वासन देने के लिए उसकी बहिन उसे पाटण ले आई।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के चरणकमलों से पावन बनी पाटण की पुण्य भूमि। जिस भूमि पर से सम्राट कुमारपाल महाराजा ने 18 देशों में जीवदया का डंका बजाया था। जहाँ उत्तुंग और गगनचुंबी शताधिक जिनमंदिर आज भी विद्यमान है। प्रातःकाल की मधुरबेला से ही जिनमंदिरों में प्रभुभक्ति के उद्घोष सुनाई देते थे। विशाल पौषधशालाओं में आचार्य भगवंत जिनवाणी का मेघ बरसाते थे। पाटण का वातावरण चारों ओर धर्ममय था। उस समय पाटण में पूज्य आचार्यदेव श्री दानसूरीश्वरजी महाराजा बिराजमान थे। उनकी धर्मदेशना को सुनने के लिए सैकड़ों नर नारी उपस्थित रहते थे। एक दिन बहिन विमला अपने छोटे बंधु हीरजी को लेकर उपाश्रय में उपस्थित हुई । हीरजी भी ध्यानपूर्वक आचार्य भगवंत की अमृत समान देशना का पान करने लगा। उस दिन आचार्य भगवंत ने संसार की असारता को समझाते हुए कहा, यह संसार अनन्त दुःखों से भरा हुआ है। इस संसार के सभी सुख इंद्रवारण नामक फूल की भांति परिणाम में अत्यंत ही भयंकर है। जिस प्रकार कीचड़ से

भरे कुएं में से बाहर निकलना कठिन है, उसी प्रकार इस संसार से बाहर निकलना अत्यंत ही कठिन है। चारगति और चौरासी लाख योनि रूप इस संसार में यह जीव भयंकर वेदनाओं को सहन करता है।

जब तक मुक्ति की प्राप्ति न हो तब तक यह संसारी जीव चारगति और चौरासी लाख योनि में भटकता रहता है। संसार के समस्त दुःखों से मुक्ति पाने के लिए जिनेश्वर भगवंत ने दो मार्ग बतलाएं है। पहला मार्ग सर्व विरति रूप है, जो सरल है और दूसरा मार्ग देश-विरति रूप है, जो विषम है। यदि इस संसार से शीघ्र मुक्त बनना हो तो सर्वविरति रूप धर्म का स्वीकार करना चाहिए।

इस संसार के सभी पदार्थ अनित्य हैं, अशाश्वत है। यह जीवन तो संध्या के रंग की भांति क्षण विनश्वर है। नदी के वेग की भांति यह यौवन शीघ्र बह जाने वाला है और लक्ष्मी भी आकाश में उत्पन्न हुई बिजली की भांति अत्यंत ही क्षणिक है।

आयुष्य का कोई भरोसा नहीं है, अतः आत्म कल्याण चाहते हो तो शीघ्र ही धर्म पुरुषार्थ करना चाहिए । आचार्य भगवंत के मुख से वैराग्य-वाहिनी धर्मदेशना के श्रवण के साथ ही हीरकुमार का मन द्रवित हो उठा और उसके मन में वैराग्य की भावना पैदा हो गई।

हजारों व्यक्ति उपदेश सुनते हैं किंतु वह उपदेश विरल आत्माओं को ही परिणत होता है। उपजाऊ भूमि में वर्षा होती हैं और उसमें अनाज पैदा होता हैं, जब कि पर्वत की चट्टानों पर पानी बरसता हैं और वह पानी बेकार चला जाता है। स्वाति नक्षत्र की जल बूंद सीप के मुँह में गिरती है तो मोती बन जाती है और वो ही बूंद सांप के मुँह में गिरे तो जहर बन जाती है। आचार्य भगवंत का उपदेश हीरजी के दिमाग में बैठ गया। और उसने मनोमन गुरुचरणों में अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय कर लिया ।

वैराग्य का वय के साथ कोई एकांत सम्बंध नहीं है, योग्यता हो तो बाल्यवय में भी संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और योग्यता न हो तो वृद्धावस्था में भी संसार के प्रति वैसी ही आसक्ति बनी रहती है।

13 वर्ष के हीरकुमार ने अपनी भावना आचार्य भगवंत को कही, 'हे प्रभो! आप मुझे कल्याणकारिणी भागवती दीक्षा प्रदान करो, जिससे मेरी आत्मा का कल्याण हो।' आचार्य भगवंत महान् थे। वे शरणागत के आत्म कल्याण की इच्छा वाले थे, अतः उसकी भावना को प्रोत्साहित करते हुए बोले, हे वत्स! तेरी भावना अति उत्तम हैं। अपनी इस भावना को फलीभूत करने के लिए अपने कुटुंबीजनों की अनुमति लेकर आ जा।

जिनेश्वर भगवंत के शासन की यह मर्यादा है कि यदि कोई संयम की भावना से आए और उसे अपने परिवारजनों की अनुमति लेनी हो तो कहे, 'माँ पडिबंधं कुणह' अर्थात् तूं अपने कुटुंबीजनों के स्नेहजाल में फंसना मत।

लोहे की मजबूत जंजीरों को तोड़ना आसान है किंतु स्नेह के बंधन को तोड़ना अत्यंत ही कठिन है। माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी आदि के स्नेह का बंधन आत्म-साधना में अत्यंत ही बाधक है। जो आत्माएं उस स्नेहजाल में फंस जाती है वे आत्माएं संयम के मार्ग में प्रबल पुरुषार्थ नहीं कर पाती है, जब कि जो आत्माएं उन बंधनों को तोड़ डालती हैं, वे ही आत्माएं संयम के मार्ग में प्रबल पुरुषार्थ कर सकती है। दीक्षा के लिए 16 वर्ष की उम्र तक माता-पिता आदि की अनुमति अनिवार्य है। उससे अधिक उम्र हो तो मुमुक्ष अपने मोहाधीन बने माता-पिता को समझाने का पूरा पूरा प्रयत्न करे, खूब समझाने पर भी वे दीक्षा के लिए अनुमति देने के लिए तैयार न हो तो ग्लान-औषध न्याय से उनका त्याग कर सुंदर चारित्र धर्म का पालन करे और बाद में मिथ्यात्व के रोग से ग्रस्त अपने माता-पिता को भी सम्यक्त्व,

सर्वविरति आदि औषध प्रदान कर उन्हें पूर्ण स्वरुप बनाए।

मानव जीवन की सफलता और सार्थकता रत्नत्रयी की आराधना में ही है। यह बात हीरजी के दिमाग में ठस गई थी। अतः वह अपने घर आये। उनके माता-पिता तो पहले ही स्वर्गवासी हो चुके थे, अतः अपनी बहिन के पास गया और बोला, 'बहिन! मुझे संयम लेने की भावना हुई है, मैं तेरी अनुमति लेने आया हूँ। अपने आश्रितों के हित की कामनावाले व्यक्ति आत्म कल्याण के मार्ग में जाने वाले को कभी विघ्न नहीं करते है।' सच्चे आश्रतदाता वे ही है जो अपने आश्रितों का आत्महित चाहते हैं।

मात्र इस लोक के सुख के साधना देने वाले, अपने आश्रितों के सच्चे हितैषी नहीं है। आत्मा का सच्चा हित तो संयम की साधना में रहा हुआ है, अतः सच्चे माता-पिता के दिल में यह पवित्र भावना होनी चाहिए कि हम तो इस संसार की माया जाल मे फंस गये... यह हमारी कमजोरी है, किन्तु हमारी संतानें इस माया जाल में नहीं फंसनी चाहिए।

हीरजी की दीक्षा की भावना को जानकर एक बार तो उस बहिन ने कह दिया, 'भाई! तेरी काया अत्यंत ही सुकोमल है, संयम का पालन अत्यंत ही कठिन है...तूं उस संयम का पालन कैसे कर पायेगा?'

हीरकुमार ने कहा, 'बहिन! क्या भूतकाल में अपनी आत्मा ने कम कष्ट सहन किया है। संयम का पालन कठिन है, परन्तु किसके लिए? कायरों के लिए! शूरवीर के लिए संयम के कष्ट, कोई कष्ट नहीं है। बहिन विमला के दिल में संयम के प्रति अनुराग तो था ही, फिर भी भाई की दृढ़ता को जानने के लिए ही उसने संयम को कष्टरूप बताया था ।

भाई की दृढ़ता देखकर बहिन ने कहा, 'भाई! तूं धन्य है । संसार भयंकर है, फिर भी उसे छोड़ने की इच्छा विरल आत्माओं में ही पैदा होती है। जा, तेरा यह संयम मार्ग निष्कंटक बने ।'

बस, ज्येष्ठ बहिन की अनुमति मिलते ही हीरकुमार का हृदय खुशी से नाच उठा। उसने आचार्य भगवंत को सब बात कह दी! और एक शुभ दिन पाटण नगर में हीरकुमार की भागवती दीक्षा निमित्त परमात्म-भक्ति के महोत्सव की नौबत बज उठी । बहिन ने खूब धूमधाम से अपने लघु बंधु की भागवती दीक्षा निमित्त परमात्मा का भव्य महोत्सव किया।

एक शुभ दिन...शुभ मुहूर्त में हीरकुमार की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। और उनका नाम 'हीरहर्ष मुनि' रखा गया। उनके साथ अन्य स्त्री-पुरुषों की आठ दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई। हीरहर्ष मुनि पूज्य आचार्यदेव श्री दानसूरिजी म. के शिष्य बने ।

दीक्षा अंगीकार करने के बाद हीरहर्ष मुनि ज्ञान ध्यान की साधना में लीन बन गये। गुरुसमर्पण भाव और कुशाग्र बुद्धि होने के कारण अल्प वर्षों में ही हीरहर्ष मुनि ने प्रकरण आदि ग्रंथों का अभ्यास कर लिया।

उनकी विशेष योग्यता जानकर गुरुदेव ने उन्हें न्याय शास्त्र के विशेष अभ्यास के लिए देवगिरि भेजने का निर्णय लिया।

गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य कर एक दिन हीरहर्ष मुनि ने धर्मसागरजी और राजविमलजी इन दो मुनियों के साथ देवगिरि की ओर प्रस्थान कर दिया। क्रमशः आगे बढ़ते हुए हीरहर्ष मुनि देवगिरि पहुँच गये।

न्याय शास्त्र के गहन अध्ययन के लिए तीनों मुनि देवगिरि पहुँच गये... किन्तु वहाँ जाने के बाद पंडितजी को वेतन देने का प्रश्न खड़ा हुआ। जैन मुनि तो परिग्रह रहित होते है अतः उनके पास वेतन देने के लिए कुछ भी रकम नहीं था। परन्तु भाग्य योग से जसबाई नाम की श्राविका को इस बात का पता चल गया। वह अपने पतिदेव देवसीभाई के साथ उपाश्रय में उपस्थित हो गई। सुश्रावक देवसीभाई ने अत्यंत ही नम्रता पूर्वक पूज्य गुरु भगवंतो को निवेदन

करते हुए कहा, हे भगवंत! आप बाल मुनिराज श्री के विशेष अध्ययन के लिए गुजरात से विहार कर यहाँ पधारे हो, आपके अध्ययन की प्रवृत्ति शीघ्र चालू हो, उसके लिए पंडितजी को वेतन आदि का जो भी कार्य हो उसका लाभ मुझे देने की कृपा करें।

पूज्य मुनिवरों ने देवसीभाई की भावना को जानकर प्रसन्नता व्यक्त की। बालमुनि के सद्भाग्य से अध्ययन सम्बंधी जो समस्या थी उसका समाधान तत्काल हो गया।

बस, अब हीरहर्ष मुनि दुगुने उत्साह के साथ न्याय शास्त्र के अध्ययन में जुट गये। अल्पावधि में ही उन्होंने उन सभी ग्रंथों का सांगोपांग अध्ययन कर लिया।

न्याय क्लिष्ट ग्रंथों के अध्ययन के बाद देवगिरि से विहार कर तीनों मुनि पू. दानसूरिजी म. के पावन चरणों में उपस्थित हो गये।

हीरहर्ष मुनि की विशिष्ट योग्यता को देखकर पू. आ. श्री दानसूरिजी म. ने वि.सं. 1607 में हीरहर्ष मुनि को पंन्यास पद वि.सं. 1608 में नाडलाई गाँव में उपाध्याय पद और वि.सं. 1610 में राजस्थान के सिरोही शहर में आचार्य पद प्रदान किया। तत्पश्चात् वे आचार्य हीरसूरीश्वर जी म. के नाम से प्रख्यात हुए। आचार्य पदवी के समय उनकी उम्र 27 वर्ष की थी । 14 वर्ष के दीक्षा पर्याय में मात्र 27 वर्ष की लघुवय में वे जिनशासन के तृतीय पद पर आरुढ़ हो गये। यह सब उनके निर्मल संयम जीवन, उत्कृष्ट तप धर्म की आराधना और प्रवचन लब्धि का ही प्रभाव था।

वि.सं. 1622 में वडावली में पू.आ. श्री दानसूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गवास हो गया। अतः हीरसूरिजी म. को भट्टारक की पदवी प्रदान की गई और वे समस्त संघ के शिरताज बने ।

खंभात में उपद्रव

पू. हीरसूरिजी म. का पुण्य प्रभाव चारों और फैल रहा था। उनके शुभ सानिध्य में शासन प्रभावना के अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे थे।

गुलाब के बीच कांटों का होना सहज हैं, उसी प्रकार कई बार इस जगत् में उत्तम महापुरुषों को भी हैरान होना पड़ता है।

एक मुस्लिम सम्राट का हृदय परिवर्तन कराकर जैन शासन की अद्भुत प्रभावना करने वाले जगद्गुरु पू.आ. श्री हीरसूरिजी म. भी बाकी नहीं रह पाये...दुर्जन व्यक्तियों ने उन्हें भी हैरान करने में कोई कमी नहीं रखी, फिर भी क्षमा के भंडार पूज्य आचार्यदेव ने वे सब परिषह और उपसर्ग समतापूर्वक सहन किये।

एक बार पू. आचार्य भगवंत विहार करते हुए खंभात पधारे। खंबात में रत्नपाल दोशी के रामजी नाम का तीन वर्ष का इकलौता बेटा था। छोटी उम्र में ही रामजी को गम्भीर बीमारी ने आ घेरा।

रत्नपाल ने आकर पू. आचार्य भगवंत को विनंती की, 'प्रभो !' आप मेरे घर पधारे... मेरे पुत्र को धर्मलाभ का आशीष प्रदान करे ... यदि यह पुत्र जी गया और दीक्षा लेने की उसकी भावना हो गई तो यह पुत्र आपको सौंप दूंगा। रत्नपाल की विनंती को स्वीकार कर पू. आचार्य भगवंत उसके घर पधारे और मांगलिक उपदेश प्रदान के बाद पू. आचार्य भगवंत ने वहाँ से विहार कर दिया।

पुण्ययोग से धीरे–धीरे रामजी का स्वास्थ्य सुधर गया। कुछ वर्षो बाद पू. आचार्य हीरसूरिजी म. पुनः खंभात पधारे... पू. आचार्य भगवंत ने देखा रामजी की उम्र 8 वर्ष की हो गई हैं। उन्होनें रत्नपाल को अपनी प्रतिज्ञा याद दिलाई और रामजी को सौंपने के लिए कहा।

आचार्य भगवंत की इस बात को सुनकर रत्नपाल और उसकी पत्नी को

गुस्सा आ गया और उन्होने आचार्य भगवंत से खूब झगड़ा किया । इतना ही नहीं रामजी की बहिन अजा ने अपने श्वसुर के कान फूंके और कहा, 'ये हीरसूरिजी म. मेरे भाई रामजी को जबरदस्ती दीक्षा दे देंगे।' खंभात के सत्ताधीश सूबा शिताबखान के साथ हरदास के अच्छे सम्बंध थे, अतः हरदास ने जाकर सूबा को शिकायत की, ये हीरसूरिजी म. आठ वर्ष के रामजी को चमत्कार से साधु बनाते है।

रामजी को दीक्षा देने के लिए पू. हीरसूरिजी म. का कोई चमत्कार नहीं था, फिर भी दुर्जन का स्वभाव ही जैसे सज्जन को पीड़ा पहुँचाने का होता हैं, बस, उसी समय शिताबखान ने पू. हीरसूरिजी म. को पकड़कर लाने का आदेश दे दिया। पू. हीरसूरिजी को जैसे ही इस बात का पता चला, वे वहां से रवाना हो गए। उन्हे 23 दिन तक गुप्त रहना पड़ा। उसके बाद जब शिताबखान को सही जानकारी मिली, तब उसने अपना वारंट वापस ले लिया।

जगमाल का उपद्रव

वि. सं. 1630 की घटना है। पू. आ. हीरसूरिजी म. बोरसद में बिराजमान थे। उस समय कर्णऋषि के शिष्य जगमल ऋषि ने आकर पू. आचार्य भगवंत को कहा, 'मेरे गुरु मुझे ग्रंथ देते नहीं हैं।' पू. आचार्य भगवंत ने कहा, 'इस बात को मानने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ, तेरे में योग्यता नहीं होगी, इसलिए तेरे गुरू तुझे ग्रंथ नहीं देते होंगे। तुझे उनकी आज्ञा में रहना चाहिये।'

पू. आचार्य भगवंत ने जयमल को सही मार्ग बतलाया। परन्तु, आचार्य भगवंत की बात जयमलऋषि को पसंद नहीं पड़ी। अयोग्य आत्मा को दिया गया हितोपदेश भी लाभ के बदले नुकसान का ही कारण बनता है। सांप को पिलाया गया दूध भी विष में ही रूपांतरित होता है।

जगमल को आचार्य भगवंत के प्रति गुस्सा आ गया। आचार्य भगवंत ने इसे

अपने गच्छ में से बाहर निकाल दिया।

जगमल ऋषि का आवेश खूब बढ़ गया। उसने पैदल जाकर वहां के हकीम के कान फूंके और पू. आचार्य भगवंत के विरूद्ध झूठी बातें की।

उसी समय हकीम ने आचार्य भगवंत को पकड़ने के लिए सिपाहिंयो को आदेश दिया। श्रावकों को इस बात का पता चलते ही उन्होने पू. आचार्य भगवंत को गुप्त गृह में छिपा दिया। इस बार भी आचार्य भगवंत को गुप्त रीति से रहना पड़ा। उस समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का साम्राज्य था। वे लोग निर्दोष लोगों को खूब हैरान करते रहते थे।

अहमदाबाद में उपद्रव

वि. सं. 1636 में पूज्य आचार्य हीरसूरिजी म. ग्रामानु ग्राम विहार करते हुए अमहदाबाद पधारे। वहां पर शाहिबखान का नाम का हकीम था। किसी दुश्मन ने जाकर हकीम के कान फूंके और कहा, 'हीरसूरिजी म. ने बरसात रोक दी हैं, इसलिए बरसात नहीं हो रही है।' हकीम ने हीरसूरिजी म. को बुलावा भेजा। हीरसूरिजी म. हकीम के पास आए।

हकीम ने कहा, वर्षा क्यों नही हो रही हैं? तुमने वर्षा को रोक दी है? आचार्य भगवंत ने कहा, 'हम कभी भी दुष्अकाल नहीं चाहते है.... और वर्षा को कोई रोक नहीं सकता है।' उसी समय शाही सौदागर कुंवरजी झवेरी वहां आये। उन्होने हकीम को समझाया, ये महात्मा कभी भी वर्षाद को रोकते नहीं है। वे तो सबका भला चाहते है। वर्षा बिना सबका भला कैसे हो सकता हैं?

हकीम समझ गया। कुंवरजी भाई आचार्य भगवंत के साथ वापस लौट आए। प्रजा का प्रेम जीतने के लिए कुंवरजी ने बड़ा महोत्सव किया और याचकों को खूब दान दिया। एक बार कुंवरजी भाई का किसी सिपाही के साथ झगड़ा हो गया।

आठ दिन बाद कोपायमान बने उस सिपाही ने कोतवाल के कान फूंके कोतवाल ने जाकर हकीम को बात की। उसी समय हकीम ने हीरसूरिजी म. को पकड़ने का आदेश दे दिया गया। कुछ सिपाही पू. आचार्य भगवंत को पकड़ने के लिए झवेरीवाड में आए और आचार्य भगवंत को पकड़ने लगे। उस समय राघव गंधर्व और सोमसुंदर मुनि बीच में पड़े। इससे राघव के हाथ पर चोट लगी और आचार्य भगवंत के कपड़े फट गए। उन्हे नग्न ही भागना पड़ा। उस समय देवजी लोंका ने आचार्य भगवंत को अपने घर में ले लिया और उनका रक्षण किया। उसने आचार्य भगवंत को अपने घर में ही छीपा दिया।

सिपाहियों ने जाकर कचहरी में बात की, हीरसूरि भाग गए हैं और हमको भी पीटा गया है। हकीम को बड़ा गुस्सा आया। उसने हीरसूरिजी म. को पकड़ने के लिए चारों ओर छानबीन चालू की। वे सिपाही प्रत्येक घर की तलाश लेने लगे। उस समय पू. आचार्य भगवंत के रक्षण के लिए देवजी ने विपरित चाल चली और वह भी सिपाहियों के साथ हो गया और दूसरे घरों में ही आचार्यश्री की दिखावे में तलाश करने लगे उसने सिपाहियों से कहा, 'हीरसूरि तो हमारे भी दुश्मन हैं, अतः उन्हे पकड़ो।' इस प्रकार उसने सिपाहियों को अपने पक्ष में कर लिया। सिपाहियों ने सभी घरों में तलाश की। जबकि देवजी के घर को छोड़ दिया। इस प्रकार देवजी ने युक्तिपूर्वक आचार्य भगवंत को पकड़ने से बचा दिया।

उस समय धर्मसागरजी व श्रुतसागरजी नामक दो मुनि पकड़े गए। उन्हें वे सिपाही कचहरी में ले गए। वहाँ उनके साथ खूब मारपीट की। उसके बाद उन्हें छोड़ दिया गया। कुछ दिनों के बाद मामला शांत हुआ।

कई दिनें तक आचार्य भगवंत को गुप्त रीति से रहना पड़ा। उसके बाद वे वहाँ से विहार कर गए। पूज्य आचार्य भगवंत निर्दोष थे, फिर भी कर्मसंयोग से अज्ञानी लोगों के द्वारा उन्हें भी कष्ट सहन करने पड़े।

उत्कृष्ट तप साधना का प्रबल निमित्त

जैन शासन में तप धर्म का खूब-खूब महत्त्व है। तप से अहिंसा व संयम को पुष्टि मिलती है। तप से नवीन कर्मो का आगमन रोकने से संवर होता है और पूर्वोपार्जित कर्मो का क्षय होने से निर्जरा भी होती है। तप के बाह्य और अभ्यंतर भेद के साथ नित्य और नैमेत्तिक नाम के दो भेद भी है।

नित्य तप अर्थात् जो नियमित रूप से नित्य किया जाय। साधु के लिए एकासना नित्य तप है। श्रावक को भी जघन्य से नित्य प्रातः नवकारसी और शाम को तिविहार/चोविहार अवश्य करना चाहिये। नैमेत्तिक तप - किसी निमित्त को पाकर जो तप किया जाय उसे नैमेत्तिक तप कहा जाता है।

पर्वाधिराज महापर्व का आलंबन लेकर जैन शासन में अनेक प्रकार का दीर्घ तपश्चर्याएं होती है। भगवान महावीर प्रभु के शासन में उत्कृष्ट से छःमासी अर्थात 180 उपवास का तप बतलाया है।

अपनी शक्ति अनुसार जिनाज्ञा के पालन पूर्वक किया गया विशिष्ट बाह्यतप जैन शासन की प्रभावना का कारण बनता है। जिस प्रकार प्रवचन लब्धि के धारक महात्मा जैन शासन की अद्‌भूत प्रभावना करते हैं उसी प्रकार विशिष्ट तपस्वी भी तप द्वारा जैन शासन की विशिष्ट प्रभावना करते हैं।

उस समय दिल्ली में सम्राट अकबर का साम्राज्य चल रहा था सम्राट अकबर अत्यंत ही क्रूर व हिंसक था। परंतु एक चम्पाश्राविका के तप ने एक ऐसा निमित्त लाकर खड़ा कर दिया, जिसके प्रभाव से अकबर के जीवन में भी अद्‌भूत परिवर्तन आ गया।

पर्वाधिराज महापर्व को लेकर चम्पाश्राविका ने फतेहपुर-सिकरी (दिल्ली) में छःमास की दीर्घतपश्चर्या का मंगल प्रारम्भ किया। ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे। त्यों-त्यों उसके महान् तप की सुवास चारों ओर फैलने लगी।

एक बार जैन संघ की ओर से तपस्विनी चम्पाबाई के तप धर्म की अनुमोदना हेतु भव्य शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। उस शोभा यात्रा में हजारों नर-नारी जुडे हुए थे।

सम्राट अकबर के महल के पास से जब यह शोभा यात्रा निकली तब उसने आश्चर्य के साथ पूछा, 'यह किसकी शोभा यात्रा है?'

परिचारक ने कहा, 'जहांपनाह! एक जैन स्त्री ने छः मास के उपवास किए हैं, उसकी यह शोभा यात्रा हैं।

छःमास के उपवास? सुनकर अकबर दंग रह गया।

अकबर को इस बात का पता था कि जैन लोगों के उपवास कैसे होते हैं? वे लोग उपवास में कुछ नहीं खाते हैं और दिन में भी उबाला हुआ पानी पीते है।

अकबर सोचता है, हम लोग रोजा करते हैं... तो भी ऊंचे नीचे हो जाते हैं...तो यह औरत इतने उपवास कैसे कर सकती है?

अकबर के दिल में सत्य जानने की जिज्ञासा पैदा हुई। उसने जैन संघ के अग्रणी थानसिंह और मनुकल्याण को बुलाया और चंपाबाई से भेंट करने की भावना व्यक्त की।

अकबर आदेश होते ही कुछ श्रावकों के साथ चंपा श्राविका को अकबर के राज दरबार में लाया गया।

अकबर ने उसे बैठने के लिए योग्य आसन प्रदान किया।

चंपाबाई की देहलता कृश हो चुकी थी, परंतु उसके मुख मंडल पर अपूर्व तेज था।

अकबर ने पूछा, 'तुम इतने उपवास कैसे कर पाती हो?'

चंपा श्राविका ने कहा, 'देव गुरू की कृपा से।'

कौन है तुम्हारे देवगुरू?

चंपा ने कहा, 'वीतराग परमात्मा मेरे देव हैं और पूज्य हीरसूरिश्वरजी म. मेरे गुरू हैं, उन्हीं की असीम कृपा से मैं इतना दीर्घ तप निर्विघ्नतया कर पाई हूँ।

तेरे गुरू अभी कहां है?

वे गुजरात के गंधार शहर में बिराजमान है।

उसी समय अकबर सम्राट ने पास में खड़े अतिमितखान को पूछा, तुम गुजरात में रहकर आए हो, क्या हीरसूरिजी को पहचानते हो?

उसने कहा, 'जहांपनाह! मै उन्हे अच्छी तरह से पहचानता हूँ, वे एक सच्चे फकीर हैं, वे गाँव-गाँव पैदल ही चलते हैं...वे कभी एक स्थल पर नहीं रहते हैं...स्त्री और पैसे से सदैव दूर रहते है...हमेशा खुदा की बंदगी करते रहते है।

हीरसूरिजी म. के त्याग-तपोमय जीवन की इन बातों को सुनकर अकबर अत्यंत ही प्रभावित हुआ। उसके मन में हीरसूरिजी म. को मिलने की भावना पैदा हुई। उसने सोचा, हीरसूरिजी म. यहां आए तो उनसे धर्मचर्चा भी हो सकती है। उसी समय सम्राट अकबर ने थानसिंह और मनुकल्याण को कहा, 'तुम जैन संघ की ओर से आचार्य हीरसूरिजी म. को यहाँ पधारने के लिए विनंति पत्र लिखो...इधर मैं भी विनती पत्र लिखता हूँ।

सम्राट अकबर ने अपनी ओर से आचार्य हीरसूरिजी म. को दिल्ली पधारने के लिए आमंत्रण पत्र लिखा और साथ में गुजरात के सूबा शिहाबखान को भी आज्ञा फरमाई कि हाथी, घोड़ा, पालखी, सुखासन आदि प्रदान कर अत्यंत ही बहुमान के साथ आचार्य श्री हीरसूरिजी म. को दिल्ली भेजे।

सम्राट अकबर और जैन संघ विनती पत्र लेकर मोदी और कमाल ये दोनों अनुचर अहमदाबाद आए। उन्होंने शिहाबखान को सम्राट् अकबर का फरमान दे दिया।

शिहाबखान ने सम्राट् अकबर का फरमान पढ़ा और स्तब्ध हो गया । वह सोचने लगा, 'अहो! कुछ समय पहले ही आचार्य हीरसूरिजी म. को परेशान करने में मैने कोई कमी नहीं रखी। क्या वे मेरे अपराधों को माफ कर देगें?'

शिहाबखान ने अहमदाबाद के जैन संघ के अग्रणियों को बुलाया और सारी बात की।

शिहाबखान ने कहा, 'आचार्य श्री को हाथी-घोडें आदि जिस सामग्री की जरूरत होगी, उसकी पूर्ति मैं कर दूंगा।

उसके बाद वे अग्रणी श्रावक बादशाह के फरमान को लेकर गंधार आए। खंभात के अग्रणी श्रावक भी वहां उपस्थित हो गए थे।

तत्पश्चात् पूज्य आचार्य भगवंत के साथ अहमदाबाद, खंभात व गंधार के श्रावक विचार विमर्श करने लगे।

कुछ श्रावकों ने कहा, 'सम्राट् अकबर का कोई भरोसा नहीं हैं...वह तो अत्यंत ही क्रूर है, क्या पता कुछ अनर्थ हो जाए तो? अतः वहाँ जाने की जरूरत नहीं है।'

जब की कुछ श्रावकों का मत इससे विपरीत ही था वे कह रहे थे, सम्राट् अकबर इतना आग्रह करके बुला रहा हैं तो अवश्य ही लाभ होगा। राजा प्रभावित हो गया तो जैन शासन की अच्छी प्रभावना हो सकेगी।'

श्रावकों के इन विरोधी मंतव्यों को जानकर उपाध्याय श्री विमलहर्ष ने कहा, 'सब की बात ठीक है, किंतु बादशाह को अवश्य मिलना चाहिए।'

अंत में आचार्य हीरसूरिजी म. ने सभी को शांत करते हुए कहा, सम्राट् अकबर को अवश्य मिलना चाहिए इससे जैन शासन की प्रभावना होगी।

पू. आचार्य हीरसूरिजी म. ने गंधार प्रतिष्ठा की जवाबदारी उपाध्याय श्री विमलहर्ष को सौंप दी और कहा, 'प्रतिष्ठा का कार्य पूर्ण कर तुम भी आ जाना

और तुम्हे मुझसे भी पहले दिल्ली पहुँचना है।'

पौष वदी 7 के शुभ दिन शुभ मुहुर्त में पूज्य आचार्य श्री हीरसूरिश्वरजी म. ने गंधार से अपना विहार प्रारंभ कर दिया।

पूज्य आचार्य भगवंत गंधार से विहार करते हुए वडाली पधारें । वहां एक चमत्कारिक घटना बनी। रात्रि में शासन देवी ने आकर कंकु से आचार्य भगवंत को बधाई दी।

देवी ने कहा, 'जिस प्रकार सती स्त्री अपने पति को चाहती है, उसी प्रकार पूर्व दिशा में सम्राट् अकबर आपको चाहता हैं, आप जल्दी पधारें । दूज के चांद की भांति आपकी कीर्ति में अभिवृद्धि होगी।' इतना कहकर शासन देवी अदृश्य हो गई।

प्रातःकाल होने पर पूज्य आचार्य भगवंत ने अहमदाबाद की ओर अपना विहार प्रारंभ किया। क्रमशः आगे बढ़ते हुए पूज्य आचार्यदेव अहमदाबाद पधारे। श्री संघ ने उसका भव्य स्वागत किया। उस समय शाहिबखान भी सामने आया और बोला आप हाथी, घोड़े, पालखी तथा सुवर्ण–मणि–मोती आदि का स्वीकार करे। बीच मार्ग में धन की आवश्यकता हो तो उसे भी स्वीकार करे। मैनें आपको पहले खूब हैरान किया था। आप उस ओर ध्यान न देकर मुझे क्षमा कर दे।

शाहिबखान की इस बात को सुनकर पूज्य आचार्य भगवंत ने जैनमुनि के आचार समझाते हुए कहा, 'जैन मुनि सोना, चांदी, हीरा, मोती, माणिक, हाथी, घोड़े, पालखी आदि के त्यागी होते है। वे तो भिक्षा वृत्ति से अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। जगत् के जीवों को धर्मोपदेश देते हैं, वे किसी का भी बुरा नहीं चाहते है।' पू. आचार्य भगवान ने कहा, 'मुझे तुझ पर लेश भी दुर्भाव नहीं हैं, और मुझे इन में से कुछ भी नहीं चाहिये। हम अपने आचार के अनुसार पाद विहार करते हुए आगे बढेंगे।'

आचार्य भगवंत की आचार-संपन्नता और निःस्पृह वृति को देखकर शाहिबखान अत्यंत ही प्रभावित हुआ। उसने अकबर बादशाह को लिखा, 'मैने आज तक ऐसे फकीर कभी देखे नहीं है, ये तो महान् फकीर हैं, इनका त्याग अपूर्व कोटि का है।'

साधु जीवन की महत्ता-आचार संपन्नता से

जैन शासन में निर्दिष्ट चारित्रमार्ग स्वोपकार प्रधान है। अपनी आत्मा का आत्महित करने वाले ही जगत् में सच्चा परोपकार कर सकते है। जहां आत्महित की उपेक्षा रही हुई है, वहां वास्तविक परोपकार ही नहीं है।

अकबर सम्राट् के दिल में आचार्य भगवंत के प्रति पूर्ण आदर सम्मान था....आचार्य भगवंत के दर्शन के लिए वह अत्यंत ही उत्सुक था और इसी के लिए उसने हाथी, घोड़े, पालखी का उपयोग करने की भी विनती की...परंतु अपने साध्वाचार के पालन में सुदृढ़ पूज्य हीरसूरिजी म. ने शासन प्रभावना के नाम पर किसी भी अपवाद मार्ग का सेवन नहीं किया। वे पाद विहार करते हुए ही क्रमशः आगे बढ़े।

आचार मार्ग की उपेक्षा कर प्रवचन प्रभावना की बात करना सिर्फ वाणी का विलास ही है।

वर में से मुनिवर

एक बार पूज्य आचार्यदेव हीरसूरिजी म. सा. सिरोही (राज.) में बिराजमान थे। कई श्रावकजन श्वेत वस्त्रों में सुसज्जित होकर सुबह शाम प्रतिक्रमण की आराधना करते थे।

एक बार उसी नगर में वरसिंह नामक युवक के लग्न का महोत्सव चल रहा था। वह भी प्रतिदिन प्रतिक्रमण की आराधना करने के लिए पूज्य आचार्यदेव श्री सानिध्य में उपाश्रय में आता था।

एक दिन की बात है, ठंडी के दिन होने से वरसिंह अपने शरीर पर सफेद कामली ओढकर बेठा हुआ था।

उसी समय प्रातःकाल में पूज्य आचार्यदेव श्री के वंदन करने लिए एक कन्या वृंद ने उपाश्रय में प्रवेश किया। पू. आचार्यदेव श्री के वंदन के बाद उन्होने पास में बैठे वरसिंह को भी साधु समझकर वंदन कर लिया।

उस कन्या वृंद में वह कन्या भी थी, जिसका उसी वरसिंह के साथ पाणिग्रहण होने वाला था।

वरसिंह को जब इस बात का पता चला तो उसने मनोमन निर्णय किया, इस कन्या ने मुनिवर समझकर मुझे वंदन कर लिया है तो अब उसके साथ लग्न संबंध कैसे हो सकता है?

उसने तत्क्षण ही दीक्षा अंगीकार करने का निर्णय कर लिया। उसने घर जाकर अपने दिल की बात की । घर में चारो ओर विरोध का वातारण था, फिर भी वह अत्यंत ही दृढ रहा। अंत में उसने दिक्षा अंगीकार की और वर में से मुनिवर बन गया।

पल्लिपति को बोध

अहमदाबाद से विहार करते हुए पूज्य आचार्य श्री हिरसूरिजी म. पाटण होते हुए रोह पधारें वहां पर सहस्त्र अर्जुन नाम का पल्लिपति अपनी आठ स्त्रियों के साथ रहता था । वह आचार्य भगवंत को अपने घर ले गया और घोडे पालखी आदि लेने के लिए आग्रह करने लगा। पू. आचार्य भगवंत ने उसे जैन मुनि के आचार समझाए। वह पल्लिपति जैन साधु के आचारों को सुनकर अत्यंत ही प्रभावित हुआ.. और उसने हमेशा के लिए निरपराधी जीवों की हिंसा के त्याग की प्रतिज्ञा ले ली।

सिरोही सुल्तान को प्रतिबोध

क्रमशः आगे बढते हुए पूज्य आचार्य भगवंत सिरोही पधारे। सिरोही संघ ने पूज्य आचार्य भगवंत का भव्य स्वागत किया। सिरोही के राजा ने भी पूज्य आचार्य भगवंत का सत्कार किया। पूज्य आचार्य भगवंत ने उसे सच्चा धर्म समझाया। उसके फलस्वरूप इसने शराब–शिकार मांसाहार और परस्त्री गमन के त्याग की प्रतिज्ञा स्वीकार की।

उपाध्याय श्री विमलहर्ष की गुरूभक्ति

गंधार में जिन मंदिर की पतिष्ठा विधि संपन्न कराकर पू. उपाध्याय श्री विमलहर्ष आदि गंधार से विहार कर बीच मार्ग में पूज्य आचार्य आगवंत को मिल गए। तत्पश्चात् केवल गुरू भक्ति से प्रेरित होकर पू. उपा. श्री विमलहर्षजी आदि क्रमश उग्र विहार करते हुए फतेहपूर सिकरी पहुँच गए। उपाध्याय विमलहर्षजी यह जानना चाहते थे कि अकबर बादशाह ने पू. आ. श्री हीरसूरिजी म. को क्यों बुलाया है?

वे सम्राट अकबर के विचित्र स्वभाव को अच्छी तरह से जानते थे, अतः पू. आचार्य भगवंत का आगमन उचित न लगे तो पहले ही उन्हे सुचित किया जा सके, इस हेतु से ही उपाध्यायजी म. पहले आ गए थे।

थानसिंह आदि सुश्रावकों ने उपाध्यायजी म. के विहार की क्षेम कुशलता पूछी। उसके बाद पू. उपाध्यायजी म. ने कहा, मै अकबर बादशाह से मिलनो चाहता हू।

श्रावकों ने कहा, भगवंत! अकबर को मिलने के पूर्व अबुलफजल के घर पधारे। उसने सभी मुनियों का भावभीना स्वागत किया। पू. उपा. म. ने हाँ भर दी। उसके बाद पू. उपाध्यायजी म. अन्य तीन मुनियों साथ अबलुफजल के घर पधारें उसने सभी मुनियों का भावभीना स्वगत किया।

थानसिंह मे पू. उपाध्यायजी म. का परिचय दिया। तत्पश्चात बात ही बात में पू. उपाध्यायजी म. ने अबुलफजल को पूछ ही लिया। हम मंत्र तंत्र करते नहीं है, फिर अकबर बादशाह ने हमें क्यों बुलाया है?

अबुलफजल ने कहा, उपाध्यायजी! बादशाह के दिल में सिर्फ श्रवण की जिज्ञासा है, उन्हे आप से अन्य कोई अपेक्षा नहीं है।

उसके बाद अबूलफजल पू. उपाध्यायजी म. को बादशाह के महल में ले गया। अबुलफजल ने सम्राट अकबर को महात्माजी का परिचय कराया। अम्राट् अकबर भी अपने सिंहासन पर से खडा हो गया और उसने मुनियों का भावभीना स्वागत किया। उपाध्यायजी म. ने धर्मलाभ की आशीष दी।

अकबर ने कहा , मुझे आचार्य श्री के दर्शन कब होंगे? उपाध्यायजी म. ने कहा, वे सांगानेर पधार चूके हैं, अब शीघ्र ही यहां पधार जाएंगे।

इस प्रथम मुलाकात से पूज्य उपाध्यायजी भगवंत समझ गए कि अकबर ने पूज्य आचार्य भगवंत को क्यों बुलाया है। उन्हे अब पूरा विश्वास हो गया कि आचार्य भगवंत के आगमन से जैन शासन की सुंदर प्रभावना होगी।

पूज्य आचार्य आगवंत सांगानेर से विहार करते हुए अभिरामाबाद पधआरें। इधर पू. उपाध्याजी म. भी फतेहपुर से अभिरामाबाद पहुँच गए।

पू. उपाध्याजी म. ने सम्राट अकबर की नम्रता आदि की बात आचार्य भगवंत को कह दी।

भव्य नगर प्रवेश

वि. सं. 1639 जेठ वदी 13 के शुभ दिन पूज्य आचार्यदेव श्री हीरसूरिजी म. ने 67 साधुओं के साथ फतेहपुर सिकरी में प्रवेश किया, उस प्रवेश महोत्सव में 6 लाख लोग इकट्ठे हुए। बादशाही सत्कार के साथ पूज्य आचार्य भगवंत का भव्य नगर प्रवेश हुआ।

उसके बाद आचार्यदेव श्री की सर्वप्रथम मुलाकात अबुलफजल से हुई । उस दिन पू. आचार्य भगवंत ने आयंबिल का तप किया था। अबुलफजल ने कुछ प्रश्न पुछे। पू. आचार्य भगवंत ने अत्यंत ही संतोषकारक जवाब दिए । अबुलफजल खुश हो गया।

सम्राट अकबर की ओर से निमंत्रण मिलने पर अबुलफजल और थानसिंह आदि अनेक श्रावकों के साथ पूज्य आचार्य भगवंत सम्राट अकबर के महल में पधारें उस समय अकबर भी आचार्य भगवंत के लेने के लिए सामने आया।

अकबर ने आचार्य भगवंत का भावभीना स्वगात किया और मंत्रणा गृह के बाहर बातचीत प्रारंभ हो गई। आचार्य भगवंत के मुखारविंद से सत्य प्रिय व मधुरी बातों को सुनकर अकबर अत्यंत ही प्रभावित हो गया।

तत्पश्चात सम्राट् अकबर ने पूज्य आचार्य भगवंत को मंत्रणा गृह में पधारने के लिए आमंत्रण दिया। आचार्य भगवंत ने देखा, सामने गलीचा बिछा हुआ है अतः वे उस पर पैर देने के लिए तैयार नहीं हुए । सम्राट अकबर ने उसका कारण पूछा। पू. आचार्य भगवंत ने कहा, वहां जीवजंतु की संभावना हो सकती हैं, अतः गलीचे पर पैर रखना उचित नहीं है। इस बात को सुनकर सम्राट अकबर को आश्चर्य हुआ। गलीचा एकदम स्वच्छ था तो इसके नीचे जीवजंतु कैसे हो सकते हैं?

पूज्य आचार्य भगवंत ने उस गलीचे को उंचा करने को कहा और उसी समय वहां पर चींटियों की कतारें दिखाई दी। यह दृश्य देख सम्राट अत्यंत ही प्रभावित हो गया। वह सोचने लगा इस इतने छोटे से प्राणियों के प्रति भी जिनके दिल में इतना स्नेह हैं... उनका जीवन कितना महान् होगा? प्रथम मुलाकात से ही सम्राट अकबर अत्यंत ही प्रभावित हो गया। पूज्य आचार्य भगवंत के मुख से उपदेश को सुनकर उसका हृदय प्रसन्नता से भर आया।

अकबर द्वारा परीक्षा

एक बार सम्राट् अकबर ने पूछा, गुरूदेव मेरे मीन राशि के शनि की दशा चल रही हैं, मुझे डर लगता है, क्या इस दशा से बचने का कोई उपाय बताएंगे? उसी समय पूज्य आचार्य भगवंत ने निर्भीकता से कहा, मेरा विषय धर्म का उपदेश देना हैं, ज्योतिष का फलादेश बताना हमारा कर्त्तव्य नहीं है। पूज्य आचार्य भगवंत की इस आचार-दृढता को देखकर सम्राट अकबर खूब प्रभावित हुआ।

आचार्य भगवंत की निःस्पृहता

एक बार सम्राट् अकबर ने अपने ज्येष्ठ पुत्र शेखजी के पास से बहुत ही सुंदर ग्रंथ मंगवाए और आचार्य भगवंत को अर्पित कर बोला, यहां नागपुरीया तपागच्छ के पद्मसुंदर नाम के जैन साधु का अलभ्यज्ञान भंडार था। उनकी मृत्यु के बाद वह भंडार मैंने सम्हाल कर रखा हैं, आप उसे स्वीकार करने की कृपा करे।

अकबर की इस प्रार्थना को सुनकर आचार्य भगवंत ने कहां, मुझे यह ज्ञान भंडार नहीं चाहिये। हाँ, जब किसी ग्रंथ की आवश्यकता होगी, हम वह ग्रंथ पढने के लिए ले लेंगे और वापिस सौंप देंगे। सम्राट अकबर के अतीव आग्रह करने पर आगरा में ही सम्राट अकबर के नाम से वह ज्ञान भंडार बनाया गया और जरूरत पडने पर उसका उपयोग किया। आचार्य भगवंत की इस निःस्पृहता वृति अकबर अत्यंत प्रभावित हुआ।

हिंसा-त्याग

अकबर का जीवन अत्यंत ही हिंसक था वह प्रतिदिन 500 चिडियों की जीभ खाता था।आगरा से अजमेर के मार्ग में उसने 114 हजीरा बनाए थे। प्रत्येक हजीरे पर 500 हिरण के सिंग लागए थे। उसने 36000 शेख

परिवारों को 1-1हिरण का चमडा, दो-दो सिंग व एक सोना महोर भेंट दी थी। ई. स. 1566 में लाहोर के पास के जंगल में 50,000 लोगों को रोककर निरंतर 1 मास तक आसपास के विस्तारों में से पशुओं को मंगवाकर 10 मील के क्षेत्र को पशुओं से भर दिया था। फिर उसने निरंतर 5 दिन तक उस पशुओं की कत्ल कराई थी।

अकबर ने डाबर सरोवर के तट पर हजारों पक्षियों को पींजरे मे बंद करवाया था। परंतु पू. आचार्य श्री हीरसूरिजी म. सा. के दयामय निरंतर धर्मोपदेश के श्रवण से अकबर सम्राट का भी हृदय पिघल गया।

पू. आचार्य भगवंत ने वि. 1639 का चातुर्मास आगरा में किया था।

पूज्य आचार्य भगवंत के धर्मोपदेश से प्रभावित होकर अकबर ने कुछ मांगने के लिए कहा, तब आचार्य भगवंत ने कहा, मुझे और तो कुछ नहीं चाहिये, परंतु जैनों के महापर्व के दिन आ रहे हैं, अतः उन दिनों में हिंसा नहीं होनी चाहिये।

पूज्य आचार्य भगवंत की इस प्रार्थना को सुनकर अकबर ने कहा, गुरूदेव! आठ दिन आपके और आगे पीछे के दो-दो मेरे। इस प्रकार 12 दिनों में राज्यभर में कही किसी प्रकार के प्राणियों की हिंसा नहीं होगी।

उसी समय अकबर ने अपने नाम से छः फरमान तैयार कराए। उनमें से 1)गुजरात-सौराष्ट्र, 2) दिल्ली- फतेहपुर के लिए, 3) अजमेर - नागपुर, 4)मालवा व दक्षिण प्रांत के लिए और, 5) लाहोर-मुल्तान के लिए निकाला और फरमान की एक प्रति पू. आचार्य भगवंत को भेंट की।पू. आचार्य भगवंत के साथ अकबर अनेक बार धर्मचर्चा करता था। इस धर्मचर्चा के फलस्वरूप अकबर इतना अधिक प्रभावित हो गया था कि उसने हीरसूरिजी म. को जगद्गुरू की पदवी प्रदान की।

जीवदया के उपदेश से प्रभावित हुए अकबर ने अंत में लगभग मांसाहार का त्याग कर दिया था।प्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेंट स्मीथ ने अकबर नाम की पुस्तक के पृष्ट नं. 335 पर लिखा,अकबर को मांस भोजन पर बिल्कुल रूचि नहीं थी और अंतिम समय में तो जैनों के समागम से उसने मांस भोजन का सर्वथा त्याग कर दिया था।

उसी पुस्तक में पृष्ट 262 पर पिनहरो नामक पादरी के पत्र का अंश हैं उसने लिखा है, He Follows The Sect of the Jains अर्थात् अकबर जैन सिध्दांत का अनुयायी था।

पू. शांतिचन्द्र उपाध्याय का प्रभाव

वि. सं. 1642 में पूज्य आचार्य देव का चातुर्मास फिरोदाबाद निश्चित हुआ। उस समय अकबर ने कहा, गुरूदेव ! अब मुझे दयाधर्म का उपदेश कौन देगा? अकबर की इस प्रार्थना को सुनकर पूज्य आचार्य भगवंत ने पू. उपा. श्री शांतिचन्द्रजी का चातुर्मास दिल्ली निश्चित किया। शांतिचंद्रजी अत्यंत ही प्रतिभा संपन्न थे।

उस चातुर्मास में उन्होने 128 श्लोक प्रमाण कृपा-रस कोश ग्रंथ का सर्जन किया और उसी पर उन्होने दया धर्म का उपदेश दिया। उस उपदेश के प्रभाव से सम्राट अकबर ने अपने व अपने तीनों पुत्रों के जन्म दिन के मास, मोहरम मास व संक्रांति के दिन, रविवार के दिन और सुफी लोगों के दिन इस प्रकाश छ :मास व छःदिन तक प्रतिवर्ष अपने साम्राज्य में अहिंसा धर्म का प्रवर्तन कराया था।

धर्म सभा

सम्राट अकबर के विश्वास पात्र शेख अबुलफजल ने आइन इ अकबरी नाम के ग्रंथ के दूसरे भाग की तीसरी आइन के अंत में सम्राट अकबर की धर्मसभा

के 140 विद्वानों के नाम है। 140 सभ्यों की यह धर्मसभा 5 विभागों में बंटी हुई थी। उसमें पहले विभाग में पू .आ. श्री हीरसूरीश्वरजी म. सा. का भी नाम था। पांचवें विभाग में विजयसेनसूरिजी म. तथा भानुचंद्रजी गणि का भी स्थान था।

लाहोर में हिंसा त्याग

सम्राट अकबर की लाहोर में अधिक समय के लिए स्थिरता होने वाली थी। पूज्य आचार्य गुरूदेव श्री की आज्ञा से शांतिचंद्रजी उपाध्याय भी लाहोर पधारें वे गुर्वाज्ञानुसार प्रतिदिन अकबर को धर्म सुनाते थे। कुछ दिनों के बाद बकरी ईद का दिन आया। पू. उपाध्याय जी म. ने कहा, आप की सम्मति हो तो कल मैं यहां से विहार करना चाहता हूँ। अकबर ने कहा, क्यो?

क्योंकि कल बकरी ईद हैं, हजारों पशुओं की कत्ल होगी, मेरे हृदय को अत्यंत ही आघात पहुँचेगा। सम्राट सोच में पड़ गया।

उसी समय पू. उपाध्यायजी म. ने "कुराने शरीफे" ग्रंथ की आज्ञा समझाई रोटी और भाजी से रोजा कबुल करना चाहिये। पू. उपाध्यायजी भगवंत की प्रेरणा से अकबर ने लाहोर में घोषणा करवाई कि कल ईद के दिन किसी भी जीव की हिंसा नहीं होगी। उस दिन पुरे लाहोर में हिंसा पर प्रतिबंध लगा। सर्वत्र अहिंसा माता का जय जयकार हुआ।

उपाध्याय भानुचंद्रजी

आगरा, फतेहपुरी सिकरी आदि में चातुर्मास कर जिनशासन की अद्‌भूत प्रभावना कर पूज्य आचार्यदेवश्री ने गुजरात की ओर विहार किया। कुछ समय बाद पूज्य आचार्यदेव ने शांतिचंद्रजी उपाध्याय को अपने पास बुला दिया और भानुचंद्रजी उपाध्याय को दिल्ली भेजा। दैविक सहायता से भानुचंद्रजी कुछ चमत्कार कर सकते थे।

एक बार सम्राट अकबर को भयंकर सिर दर्द हुआ। अनेक उपचार करने पर भी कुछ भी फर्क नहीं पडा। अकबर ने पू. भानूचंद्रजी को बुलाया। अकबर ने पास के काष्ठासन पर बैठे पू. उपाध्यायजी का हाथ अपने सिर पर रख दिया।

पू. उपाध्यायजी म. ने कहा, लेश भी चिंता न करे सब ठीक हो जाएगा। और चंद क्षणों में ही राजा की बिमारी दूर हो गई सर्वत्र आनंद छा गया। उस समय उमरावों ने कुर्बानी के लिए 500 गायें लाई थी। सम्राट अकबर को जैसे ही पता चला, उसने वे सब गाय छुड़वा दी। एक बार सम्राट अकबर पीर पंजाल की घाटी से आगे बढ़ रहा था, उस समय भानुचंद्रजी भी साथ में ही थे। उबड़ खाबड़ और कंटीले मार्ग के कारण भानुचंद्रजी के पैर के तलवें में से खुन निकलने लगा।

सम्राट अकबर को जैसे ही पता चला उसने भानुचंद्रजी को वाहन का उपयोग करने के लिए विनती की। परंतु आचार संपन्न पू. भानुचंद्रजी ने इन्कार कर दिया। इससे सम्राट अत्यंत ही प्रभावित हुये। पू. भानुचंद्रजी की स्वस्थता के लिए तीन दिन तक वही पडाव डाला गया और उसके बाद ही वहां से आगे बढ़े। भानुचंद्रजी से अत्यंत सी प्रभावित हुए अकबर ने जगद्गुरू पू. आचार्यदेव को विनती पत्र लिखा कि भानुचंद्रजी को उपाध्याय पद प्रदान करने की कृपा करें। पत्र मिलते ही पूज्य आचार्यदेव श्री ने उपाध्याय पद हेतु अपना वासक्षेप भेजा।सम्राट अकबर ने भव्य महोत्सव किया, इस प्रसंग पर अबुलफजल ने भी 25 हाजार रूपए का सद्व्यय किया।

पूज्य आचार्यदेव तपश्चर्या

जगद्गुरू पू. आचार्यदेव हीरसूरिजी म. विशुद्ध संयम पालन के तो कट्टर आग्रही थे ही, इसके साथ ही उन्होने विशिष्ट तप की आराधना द्वारा अपने

जीवन को भी तपोमय बना दिया था। उन्होंने अपने संयम जीवन में निम्न तपश्चर्याएं की थी, (1) जिंदगी भर पांच विगई का त्याग (2) न्युनतम एकाशन तप। (3) पूज्य गुरूदेव से प्राप्त आलोचना के 300 उपवास। (4) कुल 3600 उपवास (5) 225 छट्ठ (6) 72 अट्ठम (7) 2000 आयंबिल (8) 2000 नीवि (9) अपने गुरूदेव के कालधर्म के बाद तेरह मास तक निरंतर क्रमशः उपवास , आयंबिल व एकाशने का तप।

अद्भूत गुरू भक्ति

जिनशासन की अद्भूत प्रभावना करते हुए जगदगुरू आचार्य भगवंत हीरसूरिजी म. सा. गंधार की ओर पधार रहे थे। उस नगर में रामदास नाम का श्रावक रहता था । उसके दिल में पूज्य गुरूदेव श्री के प्रति अपूर्व आस्था और भक्ति थी । एक चातक पक्षी की तरह वह गुरूदेव के गंधार आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

एक शुभ दिन एक व्यक्ति ने आकर रामदास सेठ को समाचार दिए कि गंधार की धरती को पावन करने के लिए पूज्य गुरूदेव अमुक तिथि को गंधार पधार रहे है। पूज्य गुरूदेवश्री के आगमन के समाचार से प्रसन्न हुए सामदास सेठ ने उसी समय अपने पास में रहा चाबियों का गुच्छा उस व्यक्ति के सामने रखा और उसे कहा, 'इसमें से जो चाबी पसंद पडे वह ले लो और उस चाबी से जो माल मिलेगा, उसका मालिक तुम।'

उस चाबियों के गुच्छे में सोने चांदी व रत्नों के आभूषणों के भंडार की चाबी भी थी। दुर्भाग्य से उस अल्पबुद्धि वाले ने उस गुच्छे में रही सबसे बड़ी चाबी उठा ली। वह चाबी उस गोदाम की थी, जिसमें सामुद्रिक वाहन व्यवहार के लिए रस्सियाँ भरी हुई थी। पूज्य गुरूदेवश्री के आगमन की बधाई मात्र में इतनी संपत्ति की उदारता दिखाने वाले रामदास ने पूज्य गुरूदेव श्री का कैसा

भव्य स्वागत किया होगा, उसकी हम कल्पना कर सकते है।

स्वाद विजेता

एक दिन की बात है।

पू. आ. श्री हीरसूरिजी म. सा. के दाढ़ में कुछ दर्द था। भिक्षा के लिए गए शिष्य ने सोचा 'आज यदि गोचरी में खिचड़ी जैसी ढ़ीली वस्तु मिल जाय तो गुरूदेवश्री को वापरने में तकलीफ नहीं होगी।'

योगानुयोग एक घर पर गर्म खिचड़ी तैयार थी। माजी ने अत्यंत ही भक्ति भावपूर्वक महात्मा को खिचड़ी वहोराई। खिचड़ी बहोरने के बाद वे महात्मा उपाश्रय में पधारे।

शाम को गोचरी वापरनवाले थोड़े ही महात्मा थे। शिष्य ने अत्यंत ही भावपूर्वक वह गर्म गर्म खिचड़ी भगवंत के पात्र में रख दी।

थोड़ी ही देर बाद वे माजी घबराती हुई उपाश्रय में आई और बोली ,'अभी मेरे घर कौन से महात्मा गोचरी के लिए पधारे थे?'

माजी को देख एक महात्मा बोल उठे, हाँ ! माजी! मैं आया था, बोलो, क्या बात है?'

माजी ने कहा , 'महात्माजी ! आज मुझ से बड़ी भूल हो गई ! आज भूल से मैंने खिचड़ी में दो बार नमक डाल दिया, अतः खिचड़ी एखदम खारी हो गई हैं, आप मुझे माफ कर दे।'

माजी की इस बात को सुनकर तुरंत ही वे महात्मा गोचरी खंड में गए.. वहां जाकर उन्होंने देखा, ' पूज्य आचार्य भगवंत ने वह खिचड़ी वापर ली हैं, उन्होने एक शब्द भी नहीं बोला।'

शिष्य ने कहा, 'भगवंत ! आपने खिचड़ी वापर ली? खिचड़ी तो एकदम खारी थी।'

पूज्य आचार्य भगवंत ने कहा, 'वत्स्! रोज जब अनुकूल ही गोचरी वापरते हैं तो कभी प्रतिकूल आ गया तो उसे भी उसी भाव से स्वीकार कर लेना चाहिये।'प्रत्युत्तर सुनकर सभी दंग रह गए।

स्वाद-जय की यह कैसी साधना? कोटी कोटी वंदन हो रसना जय के उन महात्मा को। सामन्यतया मानवी अनुकूलता का स्वीकार और प्रतिकूलता का इन्कार करने का आदी होता है। परंतु ऐसे धन्य पुरूष ही अनुकूलता और प्रतिकूलता के बीच माध्यस्थ भाव धारणकर अपूर्वण कर्म निर्जरा कर पाते है।

सहनशीलता की मूर्ति

पू. आचार्यदेव श्री हीरसूरिजी म. सा. ऊना नगर में बिराजमान थे। एक बार उनके पैर के एक भाग में फोंड़ा हो गया। उसकी वेदना को वे अत्यंत ही समतापूर्वक सहन कर रहे थे। उस दिन संध्या समय प्रतिक्रमण के लिए आए श्रावकों में से एक श्रावक प्रतिक्रमण के बाद पूज्य आचार्य भगवंत के पैर दबाने लगा। अंधेरे में कुछ ख्याल न रहा और उसने उस फोड़े को भी दबा दिया... परंतु आचार्य भगवंत कुछ नहीं बोले... बिल्कुल मौन रहे। थोड़ी ही देर बाद वह श्रावक तो चला गया। दूसरे दिन प्रतिलेखना के समय जब शिष्य मुनि ने आचार्य भगवंत के वस्त्र को खुन के दाग वाला देखा तो शिष्य ने पुछा, 'भगवंत! ये खून के दाग कैसे?'

पूज्य आचार्य भगवंत ने पूर्व रात्रि की घटना बता दी और कहा कि 'भूतकाल में तो अनेक महात्माओं ने प्राणांत कष्ट सहन किए है, उन कष्टो के आगे यह क्या कष्ट है? यह तो कर्म खपाने का संदर अवसर हैं, इसे तो हंसते हंसते स्वीकार करना चाहिये।' पूज्य आचार्यदेव श्री के मुख से इन बातों को सुनकर शिष्य नत मस्तक हो गए।

धन्य है सहनशीलता की मूर्ति आचर्यदेवश्री को ! सहनशीलता आदि पर उपदेश देना आसान है, किंतु उसे जीवन में उतारना अत्यंत ही कठीन है।

महापुरूषों के जीवन में कथनी और करणी में एकता के दर्शन हुए बिना नहीं रहते है।

देहथी भिन्न तुज रूप रे।

देह और आत्मा के भेदज्ञान की अनुभूति करने वाले महात्माओं के दिल में देह के प्रति विशेष राग भाव नहीं होता है। वे तो मानव देह को मुक्ति प्राप्ति का साधन समझकर उसे आहार आदि का भाड़ा देते है ।

पूज्य हीरसूरिजी म. भी ऐसे ही उच्च कोटी के साधक महात्मा थे।

विनाशी देह से अविनाशी आत्मा की साधना कर लेने में ही वे अपने को सफल मानते थे।

वि. सं. 1652 का वर्ष।

उनकी देहलता पर वृद्धावस्था के प्रत्यक्ष दर्शन होते थे। देह जर्जरित हो चुका था, परंतु उनका मन तो युवान ही था। वृद्धावस्था के कारण शरीर व्याधि ग्रस्त हो चुका था। समस्त चतुर्विध संघ उनके स्वास्थ्य के लिए चिंतित था। ज्यों ज्यों समय बीत रहा था, त्यों-त्यों व्याधि बढ़ती ही जा रही थी। और एक दिन पूज्य आचार्य देवश्री ने देह के लिए औषध लेने से इन्कार कर दिया।

'हिरविजयसूरि रास में कवि ऋषभदास ने लिखा है-

हीर कहे नर सुणो परम
भोगव्या विना न छुटे करम
सनत्कुमार नाहि औषध योग,
करम खप्या तव नाठा रोग।

पू. हीरसूरिजी म. ने सभी को समझाते हुए कहा, 'भूतकाल में हंसते हंसते जो कर्म बांध लिये है, उन कर्मो की सजा स्वीकारे बिना छुटकारा नहीं है। हंसते-हंसते या रोते-रोते भी उन कर्मो की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी तो फिर रोते-रोते उस सजा को सहन कर फिर नए कर्म बांधा जाय, इसके बजाय तो हंसते हंसते ही उन कर्मों की सजा को सहनकर उन कर्मों को खपा देना चाहिये।'

याद करो, सनतकुमार महामुनि को । उनके देह में कितने रोग पैदा हो गऐ थे। फिर भी उन्होने बाह्य उपचार नहीं कराकर कर्मों को ही खपाने का प्रयास किया था।

पूज्य आचार्य भगवंत औषध नहीं लेने में दृढ़ थे, जबकि श्रावक-श्राविका आदि औषध लेने में आग्रहशील थे।

आखिर भक्ति से प्रेरित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने निर्णय किया, जब तक पूज्य आचार्य भगवंत औषध नहीं लेंगे, तब तक हम सब आहार-पानी नहीं लेंगे। बात यही पर नहीं रूकी... आगे चलकर तो स्त्रियों ने अपने छोटे छोटे बच्चों को स्तपान कराना ही बंद कर दिया।

देह के प्रति संपूर्ण निर्मम होने पर भी एक मात्र संघ की समाधि के लिए पूज्य आचार्य देवश्री ने औषध का स्वीकार किया।

ओहो! संघ की यह कैसी अद्‌भुत भक्ति। पूज्य आचार्य देवश्री का कैसा वह त्याग?

अंतिम आराधना

मानव देह तो भाडे का घर है। जब तक आयुष्य का भाड़ा चुकाया है, तभी तक इस देह में रह सकते है... वह भाड़ा पूरा होते ही यह घर खाली करना पड़ता है। ...परंतु अज्ञानी आत्माएं इस देह को अपना ही घर मान लेती

हैं, अतः उन्हें जब यह घर खाली करना पड़ता है, तब अत्यंत ही आघात लगता हैं, वे रोते–रोते इस घर को छोड़ते हैं, जब कि मैं देह से भिन्न अजरामर आत्मा हूँ, देह विनाशी हैं, मै अविनाशी हूँ, इस प्रकार देह में रहते हुए भी देह के ममत्व से मुक्त बनी आत्माएँ

अत्यंत सहज भाव से इस देह का त्याग कर देती है।'

पूज्य आचार्य देव श्री हीरसूरिजी म. जो जैनशासन के तेजस्वी सितारे थे जिनके सानिध्य में 2000 साधु व 300 साध्वीजी भगवंत अपने संयम धर्म की निर्मल साधना कर रहे थे। जो अपने आश्रितों के कुशल योग–क्षेम कारक थे। पूज्य आचार्यदेव श्री अपने विशाल परिवार के साथ गुजरात के सौराष्ट्र विभाग के ऊना नगर मे चातुर्मास बिराजमान थे।

पर्वाधिराज महापर्व की आराधना निर्विघ्नतया पूर्ण हो चुकी थी। चतुर्विध संघ में आराधना तपश्चर्या का महासागर उमड़ पड़ा था... चारों ओर उत्साह का वातावरण था।

परंतु पर्वाधिराज की समाप्ति के बाद पूज्य आचार्यदेव श्री का स्वास्थ दिन – प्रतिदिन बिगड़ता ही गया।

इस विचित्र परिस्थिति में भी उनकी चित्तप्रसन्नता आत्म समाधि अपूर्व कोटि की थी।

(पू, आ. श्री हीरसूरिजी की अंतिम आराधना का वर्णन श्री देवविमलजी गणि ने स्वरचित हीरसौभाग्य महाकाव्य के अंतिम सर्ग में किया हैं, उसका गुजराती भावनुवाद मु, श्री प्रशमरति विजयजी ने किया है, जो यहां प्रस्तुत है)

स्वर्ग-गमन

वि. सं. 1652 भादरवा सद 11 के दिन पूज्य आचार्यदेव श्री का स्वास्थ अत्यंत ही बिगड़ गया उन्हे पता लग गया था कि अब यह देह अधिक साथ देने वाला नहीं है। उन्होंने अरिहंतादि चार की भावपूर्वक शरणागति स्वीकार की। दुष्टकृतों की निंदा की सुकृतों की अनुमोदना की...तत्पश्चात् शिष्यादि परिवार के साथ क्षमायाचना की... फिर नमस्कार महामंत्र का श्रवण करते करते अत्यंत ही समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए।

पूज्यश्री के कालधर्म से चतुर्विध संघ को अत्यंत ही आघात लगा। सभी की आँखों में आँसू थे... कौन किस को आश्वासन दे। दूसरे दिन पूज्यश्री के मृतदेह को जरीयन की पालखी में बिराजमान किया गया। 'जय जय नंदा.. जय जय भद्दा' के गगनभेदी नारों से आकाश मंडल गुंज उठा था। हजारों लोग उस श्मशान यात्रा में जुड़े हुए थे। जिस भूमि पर आचार्यदेव का अग्नि संस्कार हुआ था, उस आम्रवन के पासवाले खेत में एक वणिक् रात को सोया हुआ था। उसने रात्रि में अग्नि संस्कार की भूमि पर देवी नाटक देखा था। इतना ही नहीं, अग्नि संस्कार की भूमि पर दूसरे दिन आम्रवन में वृक्षो पर आम के फल लग गए थे।

आचार्यदेव के स्वर्गवास व आम्रवन के फलने की घटना के समाचार जब सम्राट अकबर को मिले तो उसे भी अत्यंत आघात लगा।

उस घटना का वर्णन करते हुए '**हीरविजयसूरि रास**'
में ऋषभदास ने गाया हैं–

'धन जीव्युं जगतगुरूनुं कर्यो जग उपकार रे,
मरण पाम्या फल्या आंबा, पाम्यो सुर अवतार रे,
शेख अबुलफजल ने अकबर करे खरखरो ताम रे,
अस्या फकीर नवि रह्या काले, बीजा कुण नर ताम रे,
जेजे कमाई करी सारी, वे लहे भवपार रे,
खेर महिर दिल पार नांहि खोया आदमी अवतार रे.'

जय गुरु जय गुरु जय गुरु देव

जय गुरु जय गुरु जय गुरु देव

शास्त्र विशारद महापंडित वर्य प.पू. पन्यास प्रवर

गुरुदेव श्री हितविजयजी म.सा.

भक्ति एवं शक्ति से सुप्रसिद्ध मेड़ता सिटी में पुष्कल ब्राह्मण कुल में पिता श्री अखेराजजी... ममतामयी मातुश्री..... विक्रम सं. 1902 की रत्नकुक्षी से एक अद्वीतीय आत्मा का अवरण हुआ। 10-11 वर्ष की कोमल वय में चन्द्रविजयजी महाराज से प्रतिबोध होकर संसार की आसारता का अनुभव करते हुए, विक्रम संवत 1913 में उदयपुर नगर में चोगान के मंदिर के प्रांगण में भागवती दिक्षा स्वीकार की, आप का जन्म ब्राह्मण कुल में होने पर भी, आपको जिन शासन के प्रति अटूट श्रद्धा थी, आप महान श्रुतधर थे। आप शास्त्र विशारद पदवी के धारक थे, 45 आगम आपको कंठस्थ थे आपके जिह्वा उपर माँ सरस्वती का वास था। किस आगम में किस पेज पर क्या लिखा था वो आप बता देते थे। आपका दिमाग बुद्धि का महासागर था। आप की वाणी में इतनी मधुरता थी कि आप किसी को भी देवानुप्रिय शब्द से सम्बोधित करते थे। आप इतने सरल प्रकृति के साथ गंभीरता के गुणों से भरपुर थे आपके हाथों से जैन शासन की अद्‌भूत प्रभावना हुई। आपश्री के कर कमलों द्वारा... तीर्थ विजय, धर्म विजयजी, शान्तिसूरि मांडोली वाले की दीक्षा आनंदसागरजी को पदवी लिम्बड़ी (गुजराज) में आपके कर कमलों द्वारा बड़ी दीक्षा... आदि आपके हाथों से हुई। आपकी गणी, पंन्यास, पदवी अहमदाबाद के अन्दर डेहला का उपाश्रय में उमेद विजयजी महाराज के कर कमलों द्वारा हुई। आप 80 वर्ष निरतिचार संयम पर्याय पालकर 1991 में घाणेराव के अन्दर कालधर्म प्राप्त किया।

गुरूजी हमारो अन्तर्नाद, हमको दीजिए आशीर्वाद

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

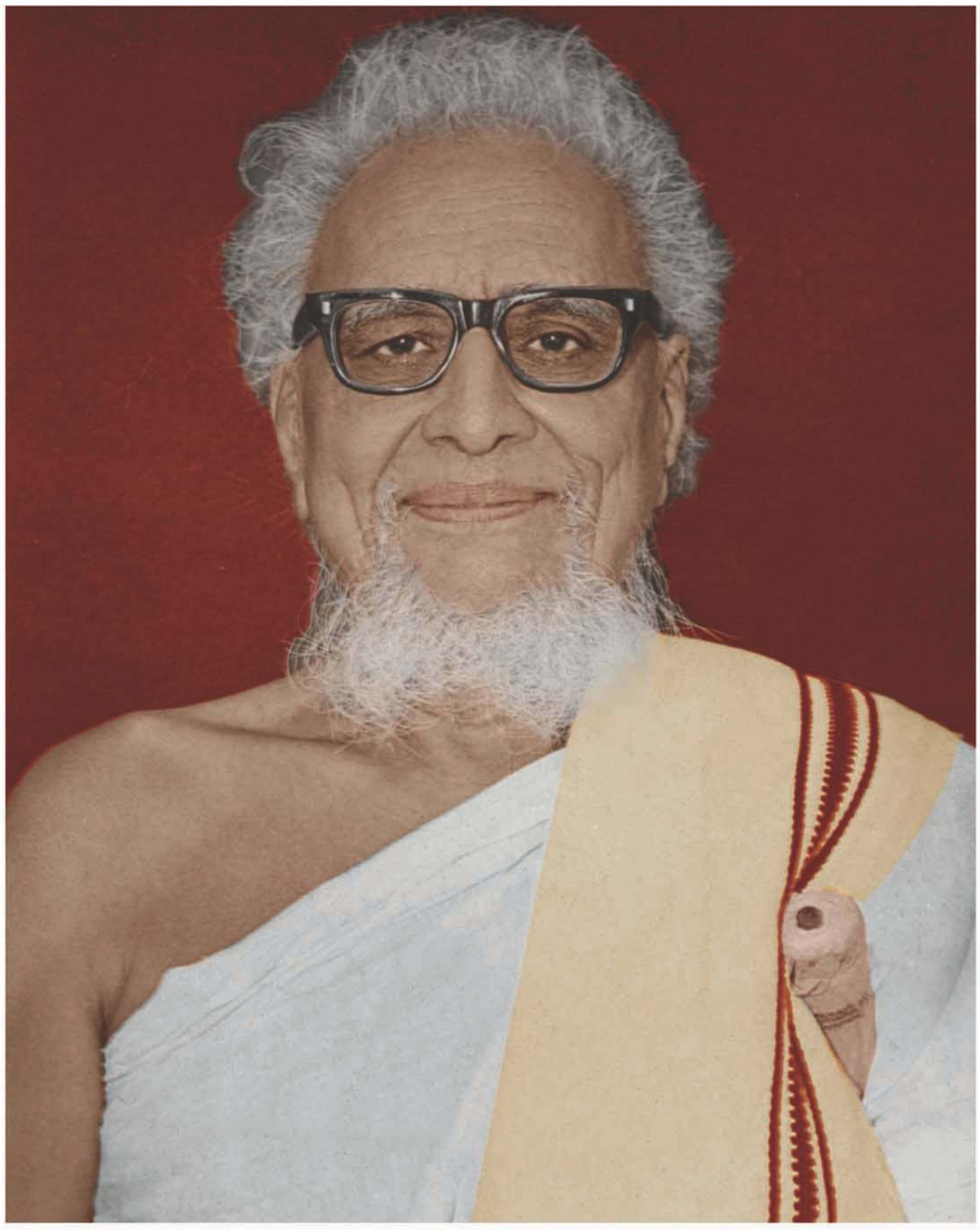

भावे करुं हूं वंदना ...

गुरुदेव मेरे हिमाचल हमको ऐसा वर दो।

सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरे भर दो।।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

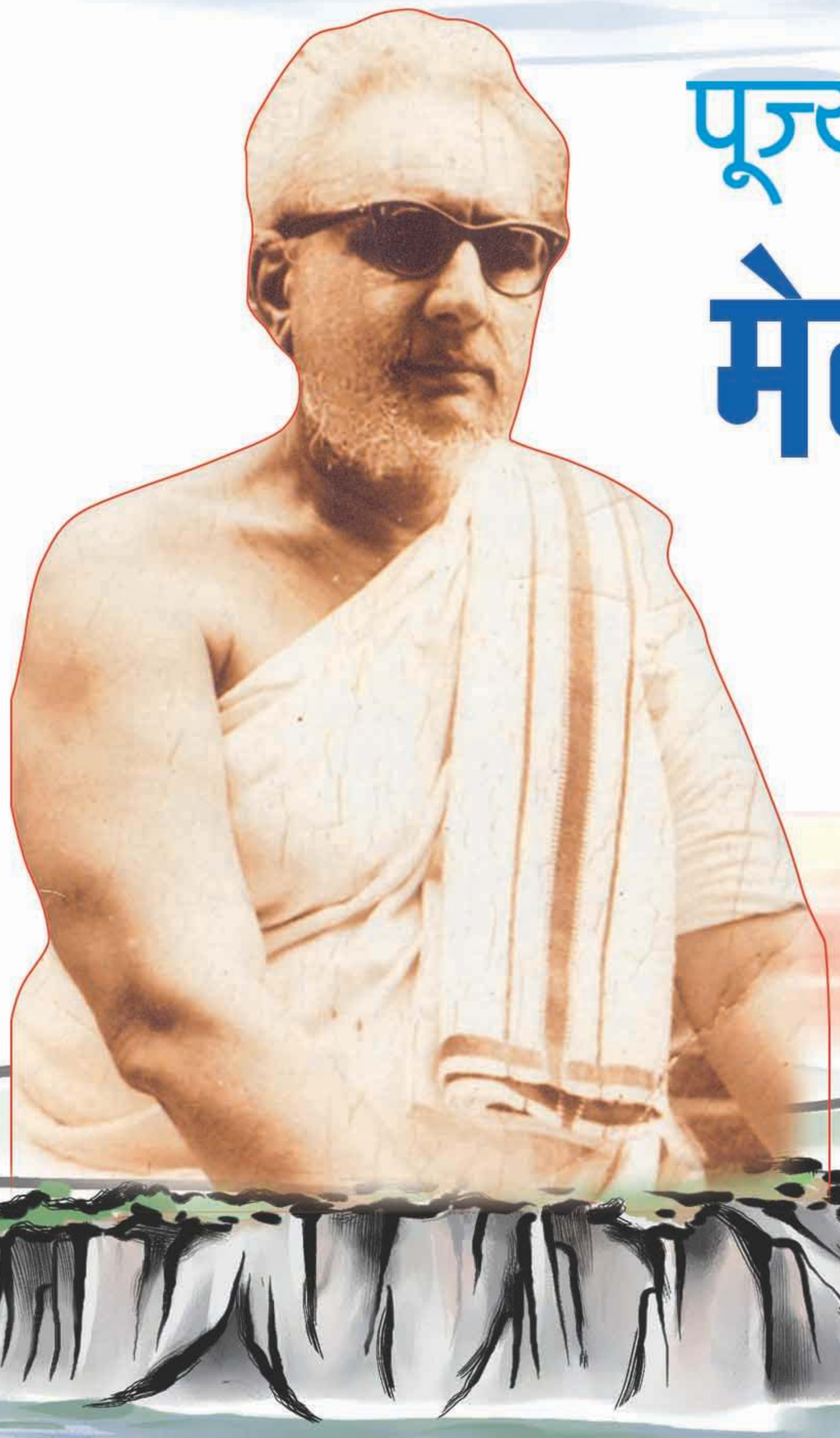

पूज्य गुरुदेव

मेवाड़ केशरी अमर रहें...

प्रातः पुष्प खिलता है और संध्या होते ही मुरझा जाता हैं, इसमें कोई विशेषता नहीं है। पर उसमें निहित सुवास ही उसकी विशेषता है। सूर्य उदित होता हैं और अस्त हो जाता हैं। यह उसकी विशेषता नहीं पर उसका प्रकाश ही उसकी विशेषता हैं उसी प्रकार महापुरूषों के जन्म मरण की कोई विशेषता नहीं जो जीवन परोपकार के साथ शासन प्रभावना और संयम जीवन की सुवास का ही प्रकाश फैलाया यही उनकी विशेषता हैं।

विक्रम संवत् की 1964 सदी का जैन इतिहास जिनके नाम और काम के स्मरण के बिना अधुरा कहा जाएगा ऐसे महान साधक मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक दो सत् 232 बतीश प्रतिष्ठा कारक श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी महाराजा का सम्पूर्ण जीवन का आलेखन तो मेरे हमारे से शक्य नही है। गुरूदेव का जीवन चरित्र स्नेह सरलता की मूर्ति के हर श्वास में समता स्पंदन था।

मेवाड़ की धरती वीर प्रसूता के साथ धर्म और कर्म की साक्षात् तपोभूमि है, यहां का

प्राचीन इतिहास इतना गौरवपूर्ण है कि इस भूमि के कण–कण में शौर्य पराक्रम बलिदान औदार्य त्याग तप तथा साहित्य साधना की अगणित कहानियां लिपटी हुई है।

मेवाड़ की धरा यथा नाम तथा गुण–1444 ग्रंथो के रचियता जैन जगत के जाने माने महानाचार्य जिसके जीभ पर हमेशा सरस्वती नृत्य करती ऐसे प्रकाण्ड विद्वान श्रीमद् विजय हरिभद्र सूरीश्वरजी महाराज एवं वर्तमान में जो सभी तीर्थो का राजा शत्रुंजय गिरीराज। पालीताणा जिसका नाम मात्र से क्रोडो भवों के पाप नाश कर देता हैं, ऐसे श्री आदिनाथ दादा की भव्य प्रतिमाजी – जो ओसवाल वंशज तोलासा के पुत्र करमाशाहा मेवाड़ के इतिहास में यह दोनों चित्तोड़गढ़ के थे। पूरे विश्व में मेवाड़ जैसा कोई प्रांत नहीं है, क्योंकी आन, बान और शान, वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप हल्दीघाटी के अन्दर अपने पराक्रम से मुगल बादशाह के साथ में लड़ते रहे, मेवाड़ की थोड़ी सेना थी मुगल बादशाह की विशाल सेना थी। लेकिन महाराणा प्रताप ने कहा की शिर कटे पर झुके नहीं, महाराणा ने जंगल में रहना कबुल कर दिया, पत्थर पर सौना, घास पूस की रोटी खाना मंजूर हैं। लेकिन हम झुकेंगे नही। ऐसा इतिहास आपको अन्य किसी भी देश प्रांत संभाग में नहीं मिलेगा। यह गौरव गाथा की गरिमा सिर्फ मेवाड़ को ही मिलती हैं,महाराणा के आगे आखिर जाकर मुगल सेना को झुकना पड़ा उस समय मेवाड़ की यशोगाथा का नारा चारों दिशा में गुंजने लगा–जहां हिम्मत हैं वहा कीमत है।

तेरे तेज को हर कोई सह नहीं सकता था।
ते सामने तिमिर टिक नहीं सकता था।
तेरी दृढ़ता की दाद देता हैं हर कोई,
तू महाशैल था कभी ढ़ह नहीं सकता था।

महाराणा प्रताप ने मुगलसेना से पूरे मेवाड़ को मुक्त कर दिया था। अपने विजय नाम कि पताका लहराई थी। मेवाड़ की जीत के बाद भी एक दिन महाराणा उदास चित्त में बैठे थे। जब धर्मनिष्ठ न्यायप्रिय उसका महामंत्रीश्वर श्री भामाशाह उपस्थित हुये– महाराणा को चिंतित देखकर बोले, 'हे महाराजा एसी विकट परिस्थिति में भी कभी उदास नजर नहीं आये तो अब तो खुशी के माहौल में आप चिंतित क्यो? अपने प्रिय मंत्री की बात को सुनकर महाराणा ने कहा की हे सत्यवादी अब मेवाड़ परतन्त्र की बेड़ी से मुक्त हो गया स्वतन्त्र सागर में झूम रहा हैं लेकिन मेवाड़ का पुन : उद्धार कैसे किया जायेगा मेरे पास संपत्ति नहीं है, संपत्ति के बिना पूनः मेवाड़ का उद्धार संभव नहीं हैं, इस बात पर मै चिंतित हूं–महाराणा प्रताप की बात को सुनकर महा

मन्त्रीश्वर बोले–'

हर शुल के पीछे फूल छिपा हैं,
हर भूल के पीछे मूल छिपा हैं,
शूल और भूल से क्यों घबराते हो।
हर प्रतिकुल के पीछे अनुकुल छिपा हैं। ।।१।।
हर जलते दीपक के तले अंधेरा होता हैं,
हर अंधेरी रात के पीछे सवेरा होता हैं।
घबरा जाते हैं, लोग मुसीबत को देखकर,
हर मुसीबत के पीछे सुख का डेरा होता हैं। ।।२।।

हे वीर शिरोमणी आपका चिंतित होना यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। बादल की ओट में सूर्य को कभी घबराते हुए नहीं देखा।

सुख–दुःख जो कुछ आ पड़े
वह सब धैर्य पूर्वक सहो
होगी सफलता क्यों नहीं
कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।

हे महाराणा! मैं अपनी तमाम संपत्ति आपके चरणों में रखता हूं, जिनसे आप मेवाड़ का पुनः उद्धार करे, भामशाह की बात को सुनकर महाराणा की आँख में हर्ष के आंसू बहने लगे। महाराणा ने कहा कि तेरे जैसा उद्धार दानवीर दाता मैं ने कही भी नहीं देखा, वास्तव में कहा जाता हैं कि मेवाड़ के पुनः उद्धार का सारा श्रैय भामाशाह को ही जाता है, दानवीरों में भामाशाह की अमिट छाप सदियों तक चलेगी।

हमें तो नाज तुम पर हैं
हमारा मंत्री हो तो ऐसा हो
अगर नैया मेरी डूबे,
किनारा हो तो ऐसा हो ।।१।।
खा गया सो खो गया
जोड़ गया सिर फोड़ गया
गाड़ गया.. झक मार गया
जो दे गया सो साथ में ले गया ।।२।।

हीराचंद का जन्म महोत्सव

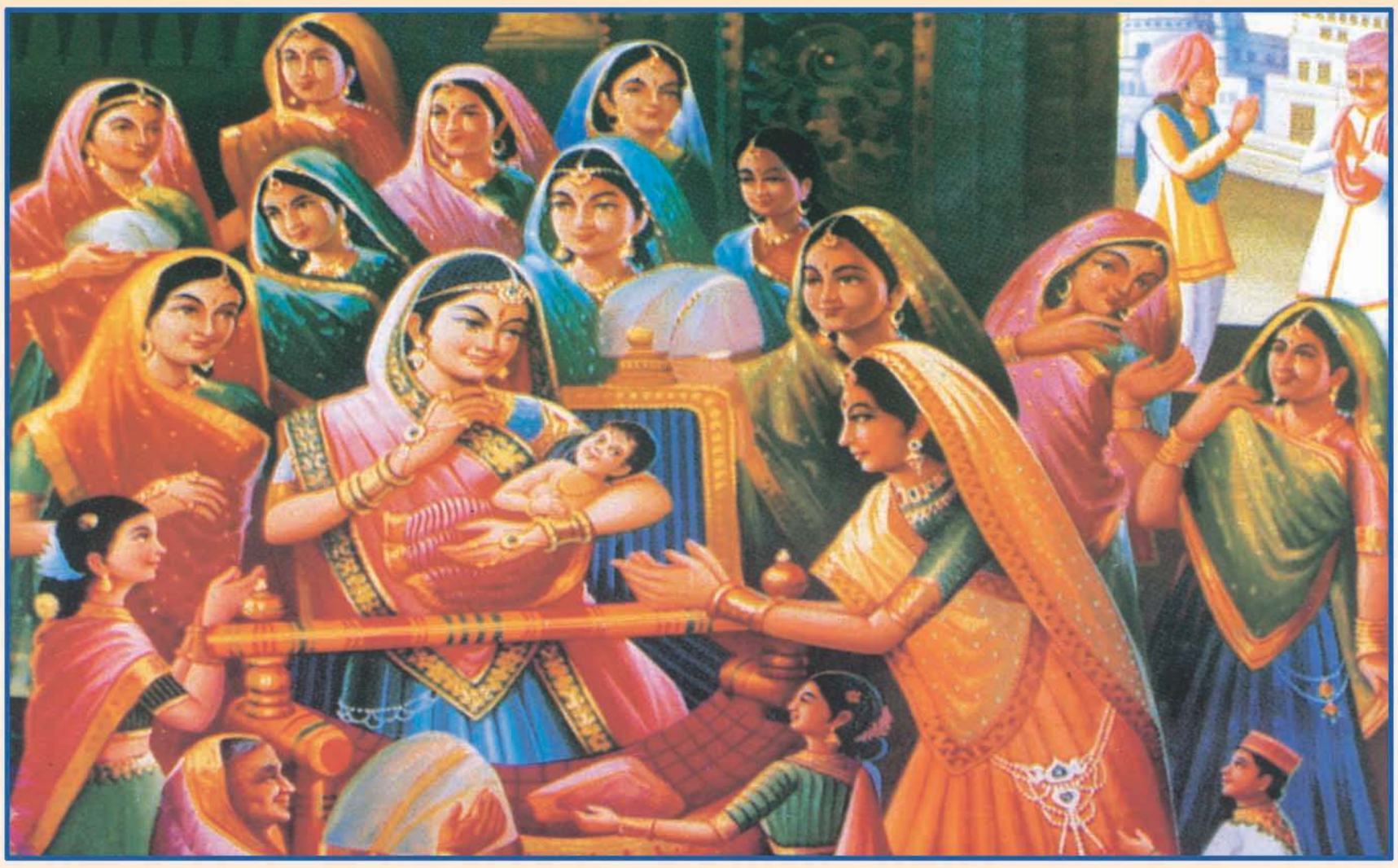

मेवाड़ के वीर पुरूषों के इतिहास की लड़ी में एक ऐसी कड़ी जुड़ने जा रही हैं कि उसके बिना मेवाड़ का कुछ इतिहास अधूरा है, ऊँचे–नीचे पर्वतों के बीच हरियाली की गोद में बसा हुआ विश्व विख्यात महाराणा प्रताप की जन्म स्थली कुंभलगढ़ के समीप विराट राजा की राजधानी वोराट क्षेत्र के बीच धर्ममय आदर्श नगरी केलवाड़ा। चन्द्रमा की रोशनी से सारा नभ मण्डल आच्छादित था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे, भोगी व्यक्ति सुखचेन से निंद्रादेवी की गोद में सो रहे.. थे। योगी अपनी योग साधना में मस्त थे।

संत बसन्त की तरह हंसते मुस्कुराते अपनी आत्म साधना में निमग्न थे, ऐसे सुवर्ण समय में ओसवाल वंशीय पिताश्री गुलाबचंद, मातुश्री पन्नाबाई के कीर्ति पर चार चाँद लगाने के लिए उनके घर उपवन की फुलवारी में एक फूल उत्पन्न हुआ, माता पन्नाबाई ने इस सुन्दर सुहाने फूल को जिस सुनहरे समय में हस्तगत पाया था वह समय था विक्रम संवत 1964 जेठ सुदी निर्जला एकादशी के दिन यह नाजुक कोमल फूल देवलोक के दिव्य सुःखो को ठुकरा कर, संयम साधना के माध्यम से, सिद्धि की सोपान को पाने के लिये, मानव सृष्टि पर आया हैं,.... सुन्दर कोमल बच्चे को देखकर माता खुशी से सरोबार हो गई, इतनी विकट परिस्थिति में भी बच्चे को देखकर माता को हिम्मत आ गई, मानो चारों तरफ हिम्मत (बहादुरी) की वर्षा करने के लिये ही, इसका अवतरण हुआ हो नन्हे बच्चे का चमकता चेहरा देखकर इसका नाम हीरा रखा। हीरा ही नहीं बल्कि कोहिनूर हीरा था, विरल माता ही ऐसे रत्न कों जन्म देती हैं।

जननी जने तो... भक्त जन का दाता का सूर
नही तो रेजे वांजनी... मत गमावजो नूर

नन्ना मुन्ना हीरा सुन्दरता का प्रतीक था। विरल व्यक्तितत्व थे इसका आकर्षण स्वभाविक था, जो भी इसको देखते थे वह खुशी से सरोबार हो जाते थे। सुन्दर... सुलोना हीरा सभी के मन को भाता था। सभी इससे प्यार करना चाहते थे, दुनिया भर के प्यार से एवं माता के ... सुसंस्कार से ही पुत्र का जीवन सार्थक बनता है, जैसे भानु के उदय से सूर्यमुखी पुष्प की शतदल पंखुड़िया खिलने लगती हैं, वैसे ही माता के धर्म संस्कार रूपी नीर से, हीरा की बाल्यावस्था रूपी कलियाँ खिलने लगी संतानों का जीवन निर्माण माता-पिता के हाथ में होता हैं, एक कुशल शिल्पी जिस प्रकार अनगढ़ पत्थर को एक भव्य प्रतिमा में बदला सकता हैं, उसी प्रकार संस्कारी माता-पिता अपनी संतानों में वात्सल्य और प्रेरणा के द्वारा सुसंस्कारों को सिंचिन कर महापुरुषों की श्रेणी में खड़ा कर सकते हैं जो माता-पिता अपनी संतान को धन का ही वारिस बनाते हैं, उन्होंने अपनी संतान को कुछ नहीं दिया। जो माता अपनी संतान को सुसंस्कारों का वारिस बना देते हैं, वे वास्तव में सच्चे माता-पिता है। वैसे ही पन्नाबाई के सुसंस्कार एवं प्यार दुलार से बढ़ने लगे जब हीरालाल दो साल के हुये थे तब पूर्वभव के पाप कर्म के उदय से गले में जान लेने वाली कंठमाला नाम का रोग उत्पन्न हुआ, माता पन्ना ने अपने लाल को दुःखी देख कर, उसके सारे सुख लुप्त हो गये, अपने पुत्र को लेकर कुशल वैद्य के पास पहुंचती है। नाना प्रकार के ईलाज के बावजूद भी कोई सफलता नजर नहीं आती हैं, जब माता हताश हो जाती हैं, नन्हें हीरा को गोद में लेकर जोर-जोर से विलाप करती हैं, उस समय में सान्त्तवना देने वाले कोई नहीं थे। क्योंकि पुण्य उनका प्रतिकूल था तब कोई साथ नहीं देते हैं, पुण्य अनुकूल होता हैं तो रेत में भी नाव चलती हैं और पुण्य प्रतिकूल होता हैं, तो पानी में भी नाव डूब जाती हैं । माता रोती-रोती सोचती है, अब मैं क्या करुं? कहाँ जाऊं? दिन-प्रतिदिन रोग तो बढ़ता ही जा रहा है। प्रभु से प्रार्थना करती है, हे नाथ आप मेरे पुत्र की रक्षा करो, इसको जल्दी स्वस्थ करो।

इंसान बुरा नहीं होता हैं, उसका वक्त बुरा होता हैं।
जिसका कोई नहीं होता हैं, उनका भगवान होता हैं।।

उस समय पन्नाबाई को दुखी देखकर गांव के मुख्य लोगों ने पन्नाबाई को कहाँ कि अपने गांव के अन्दर बड़े चमत्कारी प. पू. गोतमजी यतिजी का चातुर्मास है। लगता हैं कि उनकी कृपा से आपका पुत्र स्वस्थ होगा, आप कल गुरूदेव के दर्शनार्थ जरूर आना, दूसरे दिन माता अपने दैनिक कार्य से निवृत्त होकर जैन आराधना भवन में अपने पुत्र को लेकर जाती हैं, वहां

जाकर गुरूदेव को वंदन करके, सुखशाता पुछकर बैठ जाती हैं, गुरूदेव भी अपनी अमृतमय वाणी से धर्मलाभ देते हैं, पन्नाबाई की गोद में बैठा हुआ हीरा को देखकर प. पू. गोतमजी का मन भावों से भर गया। वाह-3 विधाता के लेख कुछ निराले ही होते हैं।

चमकता भाल, यश रेखा से भरा हाथ लक्षणों से शोभता शरीर को देखकर पू. गोतमजी यति उस नन्हे हीरा को मनो मन ही निहाल रहे थे। इतने में माता पन्नाबाई बोलती हैं कि हे... गुरूदेव मेरा यह एक ही पुत्र हैं, यह मेरे जीवन का सहारा हैं, मेरे दुःख के दिन इसके सहारे गुजार रही हूँ। कई दिनों से इसके गले में कंठमाला नाम का रोग हो गया। दिनोदिन बढ़ता ही जाता हैं, विविध प्रयासों के बाद भी कोई सफलता नजर नहीं आती हैं, हे... गुरूदेव मैं अभागिनी हूँ, दुखियारी हूँ, मेरे उपर कृपा दृष्टि करके मेरा लाल ठीक हो जावे ऐसा कोई उपाय बताओं। मैं आपके उपकार को जीवन में कभी नहीं भूलूंगी। माता की बात को सुनकर दो मिनिट के लिए प. पू. गोतमजी महाराज मौन रहे, उसके बाद गुरूदेव बोले हे... माता आप अपने लाल को यम को देंगे या यति को देंगे, बोलो?माता पन्नाबाई करूण विलाप करती हैं, वह दुःख शब्दों से नहीं केवल अनुभव ही गम्य हैं, माता रोती-रोती विचार करती हैं, अब मैं क्या करूं? कैसा दुःख का पहाड़ मेरे उपर आकर पड़ा हैं, हे विधाता दुःख के बजाये तो मुझे मौत देना ही श्रेष्ठ हैं, न जाने मेरे भाग्य में कितने दुःख लिखे होंगे। माता पन्ना इतनी दुःखी होती है कि उसके दुःख का वर्णन सिर्फ ज्ञानी कर सकते हैं, ऐसी दुःखी अवस्था में माता पन्ना को देखकर प. पू. गौतमजी महाराज बोले हे... माता आप इतना विलाप मत करो, यह आपका कोई सामान्य हीरा नही है, बल्कि यह तो जैन शासन का चमकता हीरा है, यह तो वीर शासन की जागति ज्योत बनकर नभ को प्रकाशित करेगा, किन्तु कहते हैं कि सुख,दुःख, संयोग-वियोग, सफलता-निष्फलता, धूप-छाया ये तो संसार चक्र के दो पहलु हैं, सुख-दुःख तो कर्म के अनुसार समझकर शोक नहीं करना। मातृ श्री पन्नाबाई ने पू. गौतमजी महाराज की वाणी को सुनकर, हृदय को कठोर करके सोचा कि यम लेके जायेंगे तो मेरा लाल सदा के लिये नहीं मिलेगा।

यम की बजाय यति को देना ही श्रेष्ठ हैं, ऐसा विचार करके कार्तिक सुदी 5 लाभ पंचमी गुरूवार के दिन ढ़ाई साल के कलेजा के टुकड़े को प. पू. गौतमजी (यति) के चरण कमलों में रखा और कहा कि हे पूज्य यह बच्चा स्वस्थ होगा तो आपका। धन्य हैं ऐसी माता जो अपने अकेले पुत्र को शासन की झोली में रखा वास्तव में कहा जाता हैं कि

ऐसी माता को सत्.. सत्... सत्.. बार नमम् हैं।

वैसे ही जीवन की सर्जनात्मक शक्ति का परिचय हैं,
वैसे भी नारी सहनशीलता की मूरत होती हैं,
वह स्वार्थ से परे होती हैं, अन्धेरे की किरण होती हैं,

पू. यतिजी महाराज एक होनहार पुत्र को झोली में देखकर हर्ष से आंखो में अश्रु की धारा बहने लगी, यतिजी की गोद में बैठा नन्हा हीरा के मन में आनंद का सागर हिलोले मारने लगा, हंसते बालक को देखकर माँ पन्ना अपने आँसु को रोक नही पाई। प. पू. गौतमजी (यतिजी) ने माता पन्नाबाई को सुन्दर आशीर्वाद दिया।

आँसुओं की बरसात के पीछे मुस्कान हैं,
निराश के बाद आशा का विधान हैं।
डरो मत दुःखों से साहस से आगे बढ़ो
सुरज बनकर चमके वही इन्सान महान हैं।

हे माता अब रोने की आवश्यकता नहीं हैं। यह आपका कोई सामान्य पुत्र नहीं हैं। यह आपका पुत्र तो जगत पूज्य बनेगा। प. पू. गौतमजी के आशीर्वाद प्राप्त करके, माता अपने पुत्र को वहीं छोड़कर। अपने घर जाती हैं, हीरा–गौतमजी की गोद में खेलता हैं, और अपने आपको धन्य मानता हैं। केलवाड़ा से प. पू. गोतमजी ने विहार किया हीरा भी साथ में था, शासन देव की ऐसी दिव्य कृपा हुई की कंठमाला नाम की जो गले में गाठ थी वह बाहर से फुट गई । क्योंकि आयुष्य उनका प्रबल था। परमात्मा की दिव्य कृपा थी। हीरा बिल्कुल व्याधि से मुक्त हो गया। 12 वर्ष तक प. पू. गौतमजी (यतिजी) की सेवा में रहकर, पंच प्रतिक्रमण, नवस्मरण, जीव विचार प्रकरण, 3 भाष्य, कर्मग्रंथ, हीरकलश आदि गहन अध्ययन किया। हमेशा प. पू. गोतमजी की सेवा में रहते थे। प. पू. गोतमजी का मुख्य गांव मंदार, गांव गुड़ा, मचीन्द, केलवाड़ा, इन गांवो में विचरते थे। एक दिन गौतम गुरु ने अपनी वृद्ध अवस्था देखकर पालीताणा दादा के दरबार में जाकर यति दीक्षा देने की भावना हुई। गौतम गुरू स्नान आदि करके माला लेकर बैठ गए। हीराचंन्द को खाना बनाने के लिए कहा। हीराचंद खाना बना रहे थे। गौतम गुरू माला हाथ में लेकर फेरने लगे। हीराचन्द के सामने अंगुली करते हुए विचार करने लगे कि इस नन्ने हीरा क्या होगा? इतना सोचते ही स्वर्गवासी हो गए। दो मिनिट के बाद हीराचन्द की दृष्टी गुरू की तरफ गई और मन में घबराएं की मेरी भूल होने के कारण अंगुली द्वारा मुझे कह रहे हैं, दो मिनट के बाद स्थिरता देखकर उनके पास में आए। गुरूजी नहीं बोलते हुए देखकर, जोर–जोर से रोने लगे। इससे लोग इकट्ठे हो गए। इतने में कुशाल बासा ने आवाज दी की हीराचन्द क्या हुआ? नीचे आजा दरवाजा

खुला है। गांव गुड़ा के पुराने उपाश्रय में उपर गए, देखा की गुरूजी नहीं रहे, श्री संघ ने मिलकर गुरूजी का अग्नि संस्कार किया । बाद में गांव गुड़ा श्री संघ ने हीराचन्द का भविष्य उज्ज्वल हो उनके लिए इकट्ठे होकर के बुजुर्ग लोगों ने विचार किया, कि यदि हीराचन्द को यति दीक्षा दी तो कुएँ के मेंढ़क की तरह रहेगा, इसका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

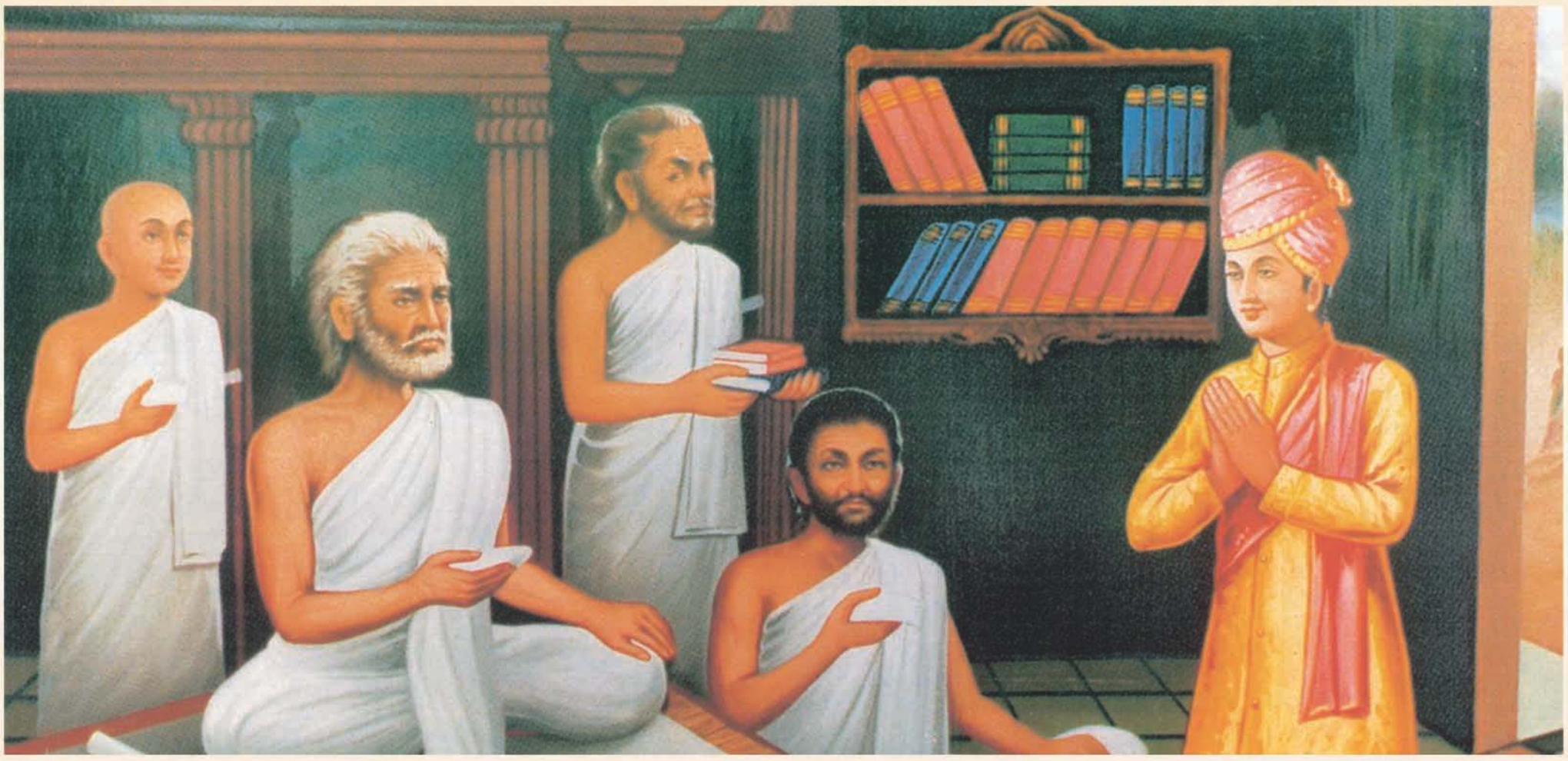

श्री संघ ने ऐसा विचार करके हीराचन्द को उँट के उपर बिठाकर, श्री जगत् गुरू अकबर प्रतिबोधक श्रीमद् हीरसुरीश्वरजी के महाराजा के चउदवी पाट पर बिराजित परम पूज्य पंडित प्रवर अनुयोगाचार्य पन्यास प्रवर श्री हित विजयजी महाराजा साहेब के चरणों में घाणेराव लेकर गए उस समय प. पू. पन्यास प्रवर श्री हित विजयजी का चातुर्मास खुड़ाला में था। श्री संघ वहाँ उपस्थित हुआ। उस समय हीराचन्द के पैरों मे नारू (वाला) निकला हुआ था। दोनों आँखो में वेदना के आँसु झलक रहे थे, श्री संघ गांव गुड़ा ने हीराचंद को प. पू. पन्यास प्रवर हितविजयजी महाराजा के चरणों मे सुपुद किया। और विनंती की कि हे गुरूदेव यह हीरा आपका हैं, दुनिया में चमके और हमारे मेवाड़ का भी गौरव बढ़े ऐसा आप आशीर्वाद देकर हमको भी मांगलिक सुनाओ, जिस दिन शुभ समय में पूज्यपाद गुरूदेव के दोनों हस्तकमल हीराचन्द के सिर पर पड़े थे, वह सबसे श्रेष्ठ समय था। परम ज्योति की मशाल को अपने हाथों में छोटी सी उम्र में ही धारण करना और परम सत्य की खोज में मात्र 12 वर्ष की आयु में निकल पड़ना कोई अलौकिक आत्मा ही कर सकती हैं। लोहा सम दृढ़मन कर वट वृक्ष के समान चीर साधना का संकल्प कर पू. पन्यास प्रर्वर श्री हितविजयजी म. सा. के शरण में रहने लगा। गुरूदेव की पहली नजर से हीरा की व्याधि दूर भाग गई। 12 महिना गुरूदेव की सेवा में रहे, शरीर कंचन जैसा हो गया? विक्रम संवत 1980 मगशिर सुदी 5 पंचमी के शुभ मुहुर्त में घाणेराव नगर में चतुर्विध संघ के समक्ष, बड़े ही महोत्सव के साथ हिराचंद की दीक्षा हुई ।

घाणेराव में दीक्षा महोत्सव

घाणेराव नगर में छाया दीक्षा का रंग,
करलो अब तो कर्मों का भंग ।
आपके आने से बदल जाएगा ढंग,
आशिर्वाद से मुमुक्षू जीत जाएंगा जंग ।

– श्री जैन संघ घाणेराव

तेरा ये दृड़ मनोरथ आज,
हमारा दिल तोड़ जाता हैं,
फिर भी गम नहीं हैं,
बेटा क्योंकि धर्म में जोड़ के जाता हैं।

– समस्त जैन संघ मेवाड़

माता–पितादि छोड़के चला वीर रे पंथ
मार्ग तुम्हारा हो कुशल करना कुल उज्ज्वल

– मातुश्री पन्नाबाई केलवाड़ा

सभी के आशीर्वाद को प्राप्त करते हुए हीरा गुरू चरणो में अपना जीवन समर्पित किया। श्रमण जीवन को स्वीकार किया। उपरोक्त गुरूदेव ने हीराचन्द का हिम्मत विजय म. सा. एवं हिम विजय यह दो नाम निकाले गुरूदेव ने कहां कि हिम ठण्डा होता हैं इसलिए इसका हिम्मत विजय नाम घोषित किया।

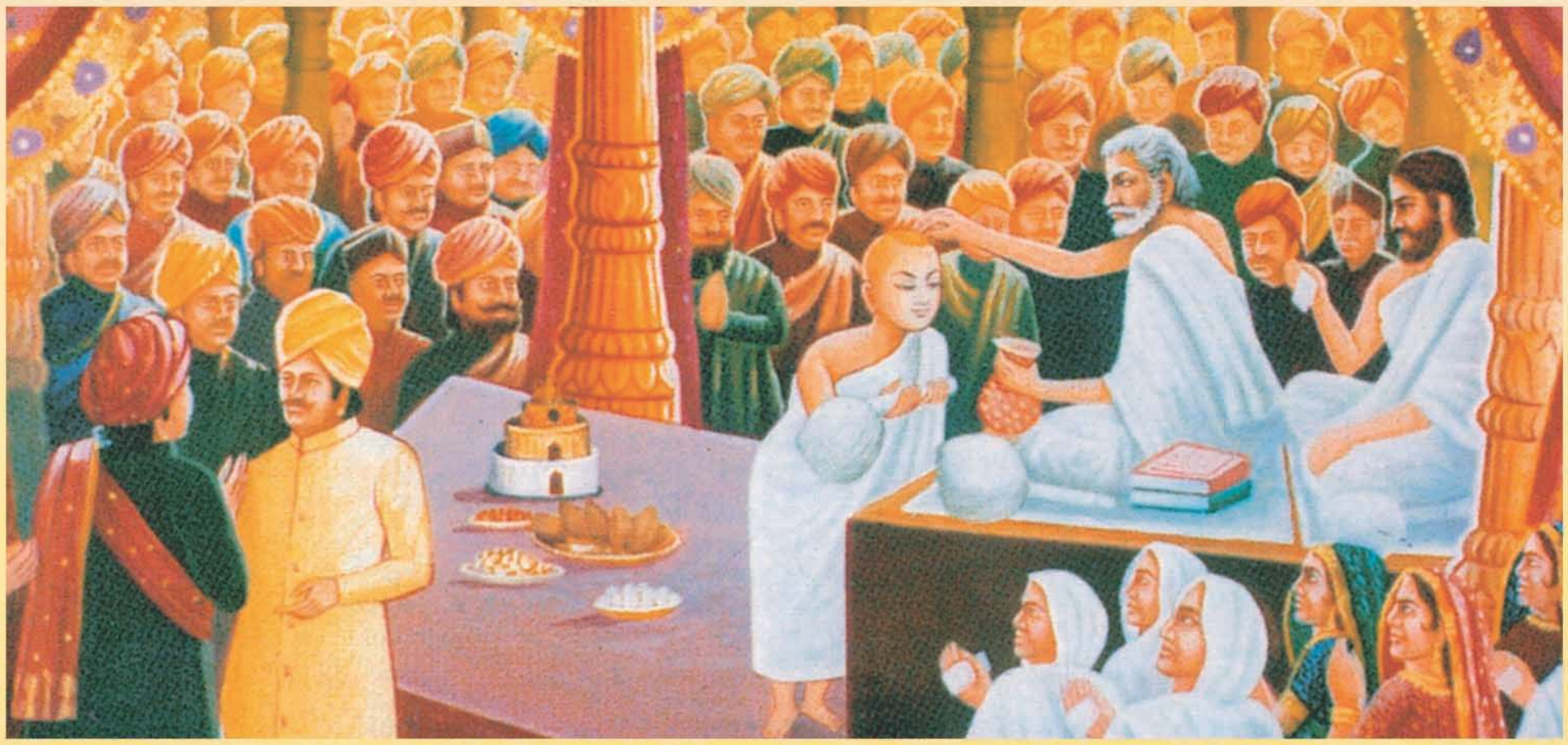

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

आगम का अध्ययन

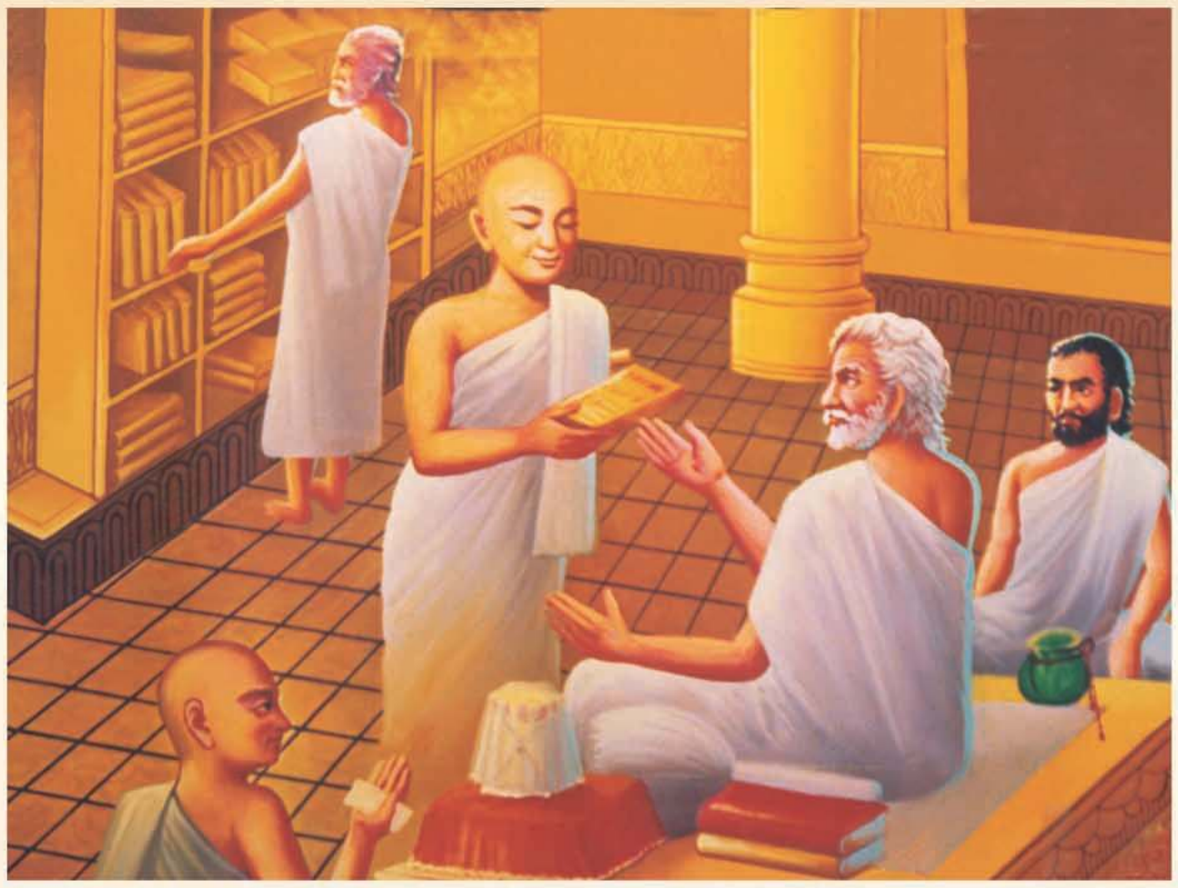

नर, नारीयों नूतन मुनिराज को अक्षत से बधाईयां नूतन मुनिराज अमर रहे, हिम्मत विजयजी अमर रहे। जय जय नाद के साथ हिम्मत विजयजी म. सा. का दिक्षा कार्य निर्विघ्न पूर्वक सम्पन्न हुआ। पूज्य गुरूदेव हमेशा गुरू सेवा में लीन रहते थे। गुरूदेव की कृपा से 5 वर्ष के अन्दर पेतालिस (45) आगम का अध्ययन करके पूज्य पन्यास प्रवर अनुयोगाचार्य हित विजयजी म. सा. की वृद्ध अवस्था के कारण विक्रम संवत 1985 में माह सुदी 5 बसंत पंचमी के दिन शुभ मुहुर्त में गणीपद एवं पन्यास पद से घाणेराव के अन्दर अलकृत किया।

12 वर्ष तक सतत् गुरू सेवा में रहकर, ज्योतिष के महान प्रकाण्ड विद्वान हुए। इनके जिह्वा पर हमेशा सरस्वती नृत्य करती थी । पू. पाद प प्र. श्री हित विजयजी (दादा गुरू) का विशेष आशीर्वाद था। दिनों दिन पू. दादा गुरूदेव का स्वास्थ बिगड़ता जाता था, परन्तु उनकी सौम्यता, वात्सल्यता के भावों से प्रत्यक प्राणी स्वयं को कृत-कृत महसूस करते थे। स्वास्थ में गिरावट के बावजूद भी गुरूदेव श्री समता भाव से अपनी साधना में मग्न थे। शारीरिक अस्वस्थ्यता में भी मन से स्वस्थ थे, वे कहते थे, तन में कष्ट, मन में मस्त व्याधि तन को है, मन को नहीं चेहरे की प्रसन्नता व सतत जागृत अवस्था को देखकर वैद्यराज भी आश्चर्य से दातों तले अंगुली दबाते हुए कहते थे कि महाराज श्री को धन्य हैं। आपकी सहनशीलता व समता भाव को यह आपके दृड़ मनोबल, संयम बल, आत्मबल एवं साधना का ही प्रभाव है। जहाँ बीमार व्यक्ति को आराम करना चाहिए, वहाँ आप श्री प्रसन्न मुख मुद्रा में जन मानस को सम्बोधित करते थे। आप श्री ने अपने स्वहस्त से अनेक आगम लिखे श्री संघ आपको कहते थे कि हे गुरूदेव अब आप आराम ज्यादा करो। क्योंकि अब आपकी अवस्था हैं, पूज्य दादा

श्री हितविजयजी दादावाडी-मूछाला तीर्थ

गुरूदेव फरमाते थे कि यह तो शरीर का स्वभाव हैं। यह बहुत नखरा करता है। यह अपना काम कर रहा हैं। मैं अपना काम कर रहा हूँ। जब तक यह शरीर शासन को काम आये तो ही ठीक हैं, सवी जीव करू शासन रसी भाव दया मन उलसी, की धुन सतत् चालू थी। विक्रम संवत् 1991 भादरवा सुदी 13 (तेरस) के दिन समाधि भाव में रहते हुए नमस्कार महामंत्र की आराधना करते हुए समाधिपूर्वक कालधर्म प्राप्त किया। पू. दादा गुरूदेव के वियोग से वीरान बन गये। पू. गुरुदेव के दिल में गहरा सदमा पहुँचा। हृदय में क्या-क्या उथल पुथल मचायी होगी, यह तो स्वयं ही बयान कर सकते हैं। गुरूदेव का हाल बेहाल था। बालक तुल्य जोर-जोर से विलाप करने लगे। ऐसी समता,ममता की मूर्ति के स्नेह की छायां तले अपने आपको बड़े खुशनसीब समझ रहे थे। ऐसी अद्वितीय आत्मा का वियोग, पृथ्वी भी सहन नहीं कर सकती वह भी कांप उठती है, जैन शासन का एक अनुठा हीरा क्रूर काल का कवल बना। आप श्री के वरद हस्त से तो जैन शासन की बहुत प्रभावना हुई वह अनुमोनीय है। गुरूदेव आपकी जीन वाणी के नाद से मिथ्यात्व रूपी पाखण्ड भाग गये। आपके गुणों का वर्णन मानव जिह्वा करने में असमर्थ हैं। सभी संघो ने मिलकर प. पू. बाल मुनिराज श्री हिम्मतविजयजी म. सा., प. पू. मुनिराज श्री गुमानविजयजी म. सा. को कहा कि अब आप गुरूदेव के नाम को अमर करो उनके धर्म प्रचार अधुरे कार्य को आप पूर्ण करो। दादा गुरुदेव के वियोग के बाद समुदाय का सारा भार हिम्मतविजयजी म. सा. के ऊपर आ गया था। 400 साधु, साध्वी के नायक बने, धर्म शून्य बंजर भूमि पर धर्म का बीजारोपण कर उसे धर्म से परिपूर्ण करने, सार्थक प्रयास किया। मेवाड़, मालानी, मारवाड़ प्रांतो में गांव-गांव व नगर-नगर में विचरण कर अनेक लोगों को प्रतिबोध देकर आपने चारों तरफ त्याग तप की महक फैलाई। आपने कई सदियों से जीर्ण शीर्ण पड़े जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया एवं जिन पताका लहरायी।

श्री नाकोड़ा तीर्थ का अमर इतिहास

राजस्थान की अरावली पहाड़ियों की आडावल पर्वत श्रृंखला की गोद में, रेगिस्तानी रेतीले टीलों की ओंट में प्राकृतिक नयनाभि रम्य दृश्यों वाला श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ बसा हुआ है। राजस्थान की धार्मिक एवं आध्यात्मिक कड़ी में नाकोड़ा तीर्थ का एक विशिष्ट स्थान रहा हुआ है। नाकोड़ा तीर्थ पहले विरमपुर नाम से प्रसिद्ध नगर था। जैन ओसवाल समाज के 27 हजार घर परिवार यहाँ रहते थे। कालान्तर में यहाँ के राज्य परिवार के राज कुंवर ने जैन समाज के लोगों के साथ अभद्र व्यवहार किया और साथ में अपशब्दों का उपयोग किया।

कटु वचन बोलना तलवार के घाव की तरह है।
घाव भर जाता है पर निशान नहीं जाता ।

राजकुमार के अभद्र व्यवहार से समाज को बहुत बुरा लगा। 27 हजार परिवार के लोग गाँव छोड़कर अन्यंत्र चले गये। धीरे-धीरे विरमपुर गाँव वीरान हो गया। 17वीं शताब्दी से 1960 तक यह तीर्थ वीरान रहा। पहाड़ों की मधुरत्तम गोद में होने के कारण जंगली जानवर एवं साँप, बिच्छू, आदि जहरीले जीवों का प्रकोप बहुत था। तीर्थ की दुर्दशा एवं सार संभाल के अभावों से मंदिर जीर्ण क्षीर्ण होने लगा। विक्रम संवत् 1960 में विश्व विख्यात, आगम तत्ववेता, प्रशान्त मूर्ति व्याख्यान वाचस्पति, उग्रतपस्वी, अनुयोगाचार्य प.पू.पं.प्र. श्री हित विजयजी म.सा. एवं विशाल मुनि मंडल वसुन्धरा को पावन करते नाकोड़ा तीर्थ पधारे। उस समय नाकोड़ा

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

पार्श्वनाथ प्रभु मंदिर के चारो ओर कांटे की बाड़ थी। उसको दूर करके गुरुदेव दर्शन करने अन्दर गये। मनमोहक श्याम वर्णी पार्श्वप्रभु की प्रतिमा के दर्शन कर के आनंद विभोर हो गये। पर जिन मंदिर की दुर्दशा को देखकर मन में बहुत दुःख हुआ। दादा गुरु प्रभु के सामने मनोमन निश्चय किया हे प्रभु! आपका आशीर्वाद होगा तो इस तीर्थ का जिर्णोद्धार जल्दी से जल्दी होगा। उस समय गुरुदेव की उम्र होने के कारण गुरुदेव को विहार करने में बहुत तकलीफ पड़ती थी। दादा गुरु नाकोड़ा से विहार करके घाणेराव पधारे पर मन में नाकोड़ा तीर्थ की दुर्दशा का बहुत दुःख था।

सोने में सुंगध

उस समय प.पू. सा.श्री शणगार श्रीजी म.सा. की शिष्यरत्ना सरल स्वभावी, वचन सिद्धि, प्रवर्तिनी प.पू. सुन्दरश्रीजी म.सा. आदि साध्वी समुदाई प.पू.पं.प्र. श्री हित विजयजी म.सा. को वंदन करने पधारे तब सुन्दर श्रीजी म.सा ने दादा गुरुदेव को सुखसाता पूछने के बाद कहा कि गुरुदेव हमारे योग्य सेवा फरमाना। पू. दादा गुरु सुन्दरश्रीजी म.सा. के उज्जवल चरित्र जीवन के साथ निडर वक्ता आदि गुणों को भली भांति जानते थे। दादा गुरुदेव ने सुन्दरश्रीजी म.सा. को कहा कि आप यहाँ से विहार करके नाकोड़ा तीर्थ तरफ पधारो और वहाँ का उद्धार करावाना यह मेरा आदेश है और शासन देवी की कृपा से तुम्हारा कार्य बहुत जल्दी सफल होगा यह मेरा आशीर्वाद है। गुरुदेव की आज्ञा और आशीर्वाद दोनों प्राप्त करके तुरन्त अपने साध्वी मंडल के साथ नाकोड़ा तीर्थ पधारे उस समय सड़क मार्ग नहीं था रेत के बड़े-बड़े टीले थे। कांटा-कंटीला रास्ता था। पर गुरुदेव का आशीर्वाद साथ में था। सिवाणा से चार-पांच श्राविका को लेकर नाकोड़ा पधारे वहाँ किस प्रकार की कोई भी सुविधा नाकोड़ा तीर्थ में नहीं होने से साध्वीजी भगवंत मेवा नगर में ठाकुर साहेब के घर पर ठहरे, ठाकुर साहेब को धर्म का उपदेश देकर, साधु-संतो की गोचरी वहोराने की विधि सिखाई और कहा कि ऐसी जैन संतो की गोचरी होती है। ठाकुर साहेब पू.साध्वीजी की मीठी वाणी और मधुर व्यवहार से अत्यंत ही प्रभावित हुए और कहा कि आप यहाँ पर बिराजो और हमारे लायक सेवा कार्य फरमाना। पू. साध्वीजी म.सा. मंदिर दर्शन के लिए पधारे परन्तु कांटों की बाड़ से घिरा हुआ परमात्मा का मंदिर था दर्शन कैसे करना? ठाकुर साहेब और आस-पास के गाँवों में यतिजी बिराजमान थे। उनके सहयोग से कांटो की वा ड़ को दूर करके अन्दर दर्शन करने पधारे मनमोहक पार्श्वप्रभु प्रतिमा के दर्शन करके सभी साध्वी भगवंत प्रफुल्लित हो गये। पू.सुन्दर श्रीजी म.सा. ने परमात्मा से कहा प्रभु अब आज से आपको कंटिली झाड़ियों में रहने नहीं दूँगी।

प.पू. सुन्दरश्रीजी म.सा. ने कई अभिग्रह धारण किये और जीर्णोद्धार का शंखनाद किया।

सिवाणची, मालानी, जालोरी-गोड़वाल आदि प्रांतो से विचरकर अपने प्रभाव व प्रयत्नों द्वारा इस तीर्थ का विकास प्रारम्भ किया। बहुत ही उत्साह और उमंग के साथ तीर्थ निर्माण शुरु हुआ दिनों-दिन नाकोड़ा तीर्थ उन्नति के पथ पर अग्रसर होता गया। जीर्णोद्धार कार्यों से संतुष्ट होकर आपश्री ने व्यवस्थापक समिति के आगेवान एवं सेवाभावी लोगों को बुलाकर साध्वीश्रीजी म. ने कहा कि अब मेरा स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है, अब मेरी देह का कोई भरोसा नहीं है। अब श्री संघ आप जल्दी से जल्दी नाकोड़ा तीर्थ की प्रतिष्ठा एवं अंजनशलाका करवाओं श्रीसंघ ने गुरुवर्या को कहा कि आपकी बात को हम स्वीकारतें है पर....अपने पास साधन सुविधाओं का अभाव है, धनराशि भी पर्याप्त नहीं है, इतना बड़ा कार्य कैसे किया जाय? साध्वीश्रीजी ने कहा कि गुरुदेव का आशीर्वाद है पैसा भी बहुत आयेगा। और कोई प्रकार का विघ्न नहीं आयेगा। आप तो सभी संघो को एकत्रित करो।

प.पू.सा.श्रीसुन्दरश्री म.सा. नाकोड़ा से विहार करके घाणेराव आये। अपने दादा गुरुदेव प.पू.पं.प्र. श्री हित विजयजी म.सा. के पाट पर विराजित प.पू.पं.प्र. श्रीहिम्मत विजयजी म.सा को कहा कि मैंने दादा गुरु के आदेश एवं आशीर्वाद से नाकोडा तीर्थ का उद्धार करवाया पर हमारे पुण्य में कमी होने के कारण गुरुदेव आज हमारे बीच नहीं रहे। अब हमारे गुरु के अधूरे कार्य को आप सँभालों मेरी भी अब उम्र हो चुकी है। अब नाकोड़ा तीर्थ भी आप सँभालो। साध्वीवृंद की बात को स्वीकार कर प.पू.पं.प्र. श्री हिम्मतविजयजी म.सा. ने नाकोड़ा तरफ विहार किया। अनेक गाँव-नगरों की स्पर्शना करते हुए गुरुदेव गढ़सिवाणा पहुँचे। वहाँ नाकोड़ा तीर्थ के संघ ने आकर वंदना की और कहा कि हे गुरुदेव! नाकोड़ा तीर्थ की प्रतिष्ठा इसी साल में करवानी है और आप हमको मुहूर्त निकालकर देना और अपने विशाल शिष्य परिवार सहित नाकोड़ा तीर्थ पर प्रतिष्ठा हेतु पधारो।

श्रीसंघ की विनंती को स्वीकार कर ज्योतिष मार्तण्ड दिवाकर प.पू.पं.प्र.श्री हिम्मतविजयजी म.सा ने श्रीसंघ को वि.सं. 1991 में महासुदी तेरस का मुहूर्त निकाल कर दिया। श्रीसंघ ने अक्षत कंकु से बंधाकर मुहूर्त लिया उस समय जितने गाँव का संघ बैठा था उन सभी की खुशी का कोई पार नहीं था। सभी संघों ने मिलकर नाकोड़ा तीर्थ में प्रतिष्ठा की तैयारियाँ जोर शोर से शुरु की। जैन-अजैन सभी सहयोग देने लगे इस शुभ अवसर पर प.पू.पं.प्र.श्री हित विजयजी म.सा. के शिष्यरत्न ज्योतिष विशारद शास्त्र निष्णांत, पू. मुनिराज श्री हिम्मत विजयजी म.सा. (आ. हिमाचलसूरिश्वरजी म.सा.), प.पू. मुनिराज श्री गुमानविजयजी म.सा., प.पू. मुनिराज श्री भव्यानंदविजयजी म.सा. आदि ठाणा 35 एवं प.पू. प्रवर्तिनी सा. श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. आदि विशाल साध्वी मंडल के साथ नाकोड़ा तीर्थ पर प्रतिष्ठा हेतु भव्य

प्रवेश हुआ । शुभ मुहूर्त में 51 प्रतिमाओं की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा करवाई गई। उस समय कई विघ्न आये और कई लोगों ने उपद्रव किया पर गुरुदेव के प्रबल पुण्योदय के कारण सभी उपद्रव शांत हो गये। भव्य प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास हित विजयजी म.सा. के देवलोक के बाद गुरुदेव का पहला चातुर्मास था। बड़े आनंद एवं आराधना के साथ यह चौमासा सम्पन्न हुआ वहाँ श्री पूज्य विजय महेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा से परिचय करके शिल्प-शास्त्र तथा ग्रहों का उदय अस्त होना विशेष ज्योतिष सम्बंधी जानकारी प्राप्त की।

रोहिड़ा चातुर्मास के बाद गुरुदेव ने आबू अचलगढ़ तरफ विहार किया। अचलगढ़ पर्वत पर चौविस देव कुलिकाओं की और बावन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाई। उस समय विजय शांति सूरिजी मांडोली वाले मुहूर्त के विषय में उनकों प्रेरित कर श्री पूज्य महेन्द्रसूरीश्वर द्वारा ज्योतिष मार्तण्ड के पद से आप श्री को अलंकृत किया उसके बाद वि.सं. 1993 सा.श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से केशरीमलजी अचलाजी पोरवाल तखतगढ़ वालों ने पैदल संघ नाकोड़ाजी निकाला था। उस पैदल संघ में प.पू. श्री हिम्मतविजयजी म.सा.20 के भी शिष्य परिवार एवं प्रवर्तिनी पू.सुन्दरश्रीजी म.सा. एवं 80 साध्वीजी भगवंतो की अनुपम निश्रा में 1500 लोग संघ में पैदल चलने वाले थे। सभी क्षेत्रों की स्पष्टना करता हुआ संघ नाकोड़ा तीर्थ पहुँचा नाकोड़ा तीर्थ में भव्य स्वागत हुआ उस जमाने में श्री नाकोड़ा तीर्थ को दुल्हन की तरह सजाया गया था। क्योंकि नाकोड़ा तीर्थ पर यह पहला संघ था। बड़े धूमधाम के साथ संघ माला का कार्य समापन हुआ। उस समय सा.श्रीसुन्दरश्रीजी ने हजारों लोगों के बीच खड़े होकर कहा, "सर्वगुणों की खान प.पू.पं.प्र. श्री हिम्मतविजयजी म.सा. को मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि मेरा शरीर अस्वस्थ रहने से ज्यादा घूमना फिरना नहीं होता है अब इस नाकोड़ा तीर्थ का सारा भार आपको सौंपते हैं आज से इस तीर्थ का हर एक कार्य आपकी प्रेरणा से होगा।" यह बात दस या बीस लोगों के बीच नहीं बल्कि हजारों लोगों के बीच हुई थी। साध्वीजी की बात को स्वीकार कर गुरुदेव ने वि.सं. 1991 से लेकर जीवन पर्यंत तक नाकोड़ा तीर्थ तरफ ध्यान देकर उद्धार करवाया। आपश्री **नाकोड़ा तीर्थोद्धारक** से प्रसिद्ध हुए।

वि.सं. 1993 में दूसरी बार गुरुदेव नाकोड़ाजी पधारे उस समय गुलाबदास संत थे। नाकोड़ाजी मंदिर के अंदर भैरवजी के स्थान (गोखले) के अंदर पहले से ही पत्थर जैसा तकिया के आकार का पिण्ड था। वह भैरवजी के नाम से प्रसिद्ध थे। गुलाबदासजी संत ने पूढ़ा आदि को कूटकर के कागज बनाया और भैरवजी के गोखले में जो पत्थर था, उस पर

लगाकर मुखाकृति की उसमें मूँछें बना दी। पू. हिम्मत विजयजी म.सा. ने कहा कि दासजी देवताओं को मूँछें नहीं होती है। यदि करली तो मिटाना मत,भैरवजी मूँछाला भैरव से प्रसिद्ध हुए। पू.गुरुदेव ने नाकोड़ाजी तीर्थ के मुनीमजी को जैसलमेर भेजा वहाँ से पीला पत्थर मँगवाया पत्थर भी इतना शानदार निकाला, पत्थर लेकर जब मुनीम जी आये तब गुरुदेव ने 21 दिन तक भूमि ग्रह (भूतल घर) में साधना की, भैरवजी के आदेश से नीचे का भाग बनाया, भैरवजी के आयुध अलग होते हैं। जैसे सर्प की जनोई होती है। हाथ में मनुष्य का माथा होता है व गले में मनुष्य की मस्तक (मन्या) की माला होती है यह सब आयुध बदलकर के सर्प की जनोई की जगह डोरे की जनोई बनाई। मनुष्य की माथे की जगह पर खप्पर दिया। और माला की जगह बट् मोगरा की माला बनवाई और नीचे का भाग तैयार होने पर भैरवजी के आदेश से आजू-बाजू पत्थर तोड़कर सिर्फ मुखाकृति की और नीचे का भाग का जोड़ दिया। और बहुत ही शानदार भैरवजी की मूर्ति बनाई गयी। उस समय दीपचंदजी सोमपुरा घाणेराव वाले भी साथ में थे। नयनाभिरम्य मूर्ति को देखकर सब खुश हो गये। और बटुक भैरव के नाम से जगत प्रसिद्ध किया। माघ शुक्ल 13, को गुरुपुष्ययोग में भैरवजी को विधि विधान के साथ पार्श्वनाथ प्रभु के मूल गंभारे के बाहर गोखले में स्थापित किया गया। पू. गुरुदेव की निश्रा में तीर्थ विकास कार्य बहुत जोरदार चलने लगा। पार्श्वनाथ प्रभु एवं भैरवजी की कृपा से यात्रियों का आगमन धीरे-धीरे बढ़ने लगा। इस तीर्थ के महान् उपकारी सुन्दरश्रीजी म.सा. का स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण से दिन-रात पार्श्व प्रभु का स्मरण करते हुए, घट-घट में पार्श्वनाथ प्रभु एवं दादा गुरु श्री हितविजयजी म.सा. के गुणों का स्मरण करते हुए, तखतगढ़ के अन्दर वि.सं. 1994 ज्येष्ठ सुद 4 शनिवार को प्रातः नवकार मंत्र की आराधना करते हुए समाधिपूर्वक काल धर्म पाया।

वायु वेग से स्वर्गवास का समाचार सुनते ही जन समुदाय अंतिम दर्शनार्थ के लिए उमड़ पड़ा हर एक व्यक्ति के मुख पर सुन्दरश्रीजी म.सा. के गुणों का वर्णन था क्योंकि उनका स्वभाव बहुत ही मिलनसार था उनका मधुर व्यवहार हर एक व्यक्ति को पसन्द था। उनके पार्थिव देह को अंतिम स्थल पर लाया गया। जहाँ उनका अंग्नि संस्कार हुआ, उस स्थान पर छत्री बनाई गई वि.सं. 2000 फाल्गुन सुद 4, मेवाड़केशरी (प.पू.पं.प्र. श्री हिम्मतविजयजी म.सा.) के करकमलों द्वारा सुन्दरश्रीजी के म.सा. के चरण पादुका की प्रतिष्ठा कराई गई।

नाकोड़ा तीर्थ का उत्थान विकास, विस्तार व जीर्णोद्धार की महत्त्वपूर्ण भूमिका सुन्दरश्रीजी म.सा. की रही है। इस तीर्थ के प्रति उनको कितना लगाव होगा की 30 वर्ष तक नाकोड़ाजी पार्श्वनाथ प्रभु का अठ्ठम करते थे। गढ़ सिवाणा में अठ्ठम का पच्चखाण लेते थे। वहाँ से

पूज्य गुरुदेव
हिमाचल सूरीश्वरजी
म.सा.
के मुखारबिंद
से
मांगलिक
श्रवण करते हुए
श्रावक गण

विहार करके नाकोड़ाजी आते थे। दादा पार्श्वनाथ के दर्शन के बाद पारणा करते थे। उनके रोम-रोम तीर्थ विकास की भावना थी। नाकोड़ा तीर्थ पर जो उपकार है। उनको कभी भूला नहीं जायेगा। आपके उपकारों का स्मरण करते हुए, पू. गुरुदेव एवं नाकोड़ा तीर्थ के कार्यकर्त्ता वि.सं. 1996 में आपकी मूर्ति की प्रतिष्ठा प.पू.पं.प्र. श्री हिम्मतविजयजी म.सा. (हिमाचलसूरिश्वरजी म.सा.) के करकमलों द्वारा करवाई गई थी।

प.पू.पं.प्र. श्री हिम्मतविजयजी म.सा. का इस तीर्थ पर जो उपकार है वह अनगिनत है नीवं का पत्थर दिखता नहीं है पर सारा भार तो वही लेकर खड़ा है। 1991 के बाद नाकोड़ा तीर्थ का सारा कार्य भार को पू. गुरुदेव ने सँभाला। गुरुदेव के उपदेश से भोजनशाला, गौशाला का काम, कमरा, धर्मशाला आदि निर्माण कार्य चल रहा था। यात्रियों को उपदेश देकर नाकोड़ा तीर्थ को चमकाया। गुरुदेव के लिए नाकोड़ा भैरव हाजर-हजूर थे, तीर्थ के विकास में बहुत सहयोग देते थें। भैरवजी के सामने कीर्तिरत्न सूरिजी की प्रतिमा विराजमान है। वह मूर्ति पहले सड़क मार्ग से जसोल की ओर जाते हैं। वहाँ टेकरी पर एक देवली में बिराजमान थी, गुरुदेव ने श्रीसंघ को कहा कि कीर्तिरत्नसूरीश्वर म.सा. विरमपुर के रहिवासी है। यह मूर्ति इधर रहेगी तो आशातना लगेगी। इससे तो अच्छा है कि इनको भैरवजी के सामने बिराजित कर दो। 2016 में यह मूर्ति हिमाचल सूरीजी के हाथ से भैंरवजी के सामने स्थापित की गई थी। नाकोड़ा तीर्थ में आदिनाथ भगवान मंदिर, पार्श्वनाथ जी मंदिर, श्यामला पार्श्वनाथ, पंचतीर्थी, नाकोड़ा भैरव, देव, पार्श्वयक्ष शाला में शांतिनाथ प्रभु के मंदिर में चार देवकुलिका आदि सभी की प्रतिष्ठा **प.पू. गुरुदेव श्री हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा.** के वरद हस्ते हुई है।

गौशाला की नींव और भैरु भोजनशाला भी गुरुदेव की प्रेरणा से चालू की गई। भैरव देव लोगों को परचा चमत्कार हाथों हाथ दिखाते है। यहाँ पर साधु भगवंत एवं साध्वीजी भगवंतो का विशेष आवागमन रहता है। इस तीर्थ पर हर साल चतुर्मास होता है एवं भक्त श्रद्धालुं दूर-दूर देशों से आते रहते हैं। यहाँ पर बारह महीने मेला जैसा ही दिखता है। विश्व विख्यात श्री नाकोड़ा तीर्थ के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ, भैरव देव की असीम कृपा से एवं पूज्य गुरुदेव हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा. के दिव्याशीष से दिनों दिन यह तीर्थ प्रगति के शिखर को छू रहा है। यहाँ पर गगन चुम्बी, शिखर बंदी, तीन मंदिर है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथ का, आदिनाथ का एवं शांतिनाथ का यहाँ सभी मंदिर को मिलाकर250 से 300 जितनी प्रतिमाजी है। जिनके दर्शन मात्र से आत्मा परमात्मा बनती है। मंदिर परिधि के बाहरी भाग में निम्न प्रकार के दर्शनीय स्थान है वह इस प्रकार है- महावीर स्मृति भवन, जिन दत सूरिजी की दादावाडी, भैरुबंधा पर काला भैरवजी का सुवर्ण डेरी, हीर, हित, हिमाचल लक्ष्मीसूरिजी म.सा. की दादावाडी है व लक्ष्मीसूरीश्वरजी महाराजा की स्मृति में बनी है। भाव हरख गच्छ के कीर्तिरत्नसूरिजी म.सा. की दादावाडी, पहाड़ी पर नेमिनाथ आदि तीन भगवान की चरण पादुकायें हैं एवं रुपादेवी रानी का मंदिर है। साधु एवं साध्वी जी के रत्नत्रय की आराधना के लिए भव्याति भव्य आराधना भवन है। सभी सुविधाओं से नाकोड़ा तीर्थ परिपूर्ण हैं। प.पू.पं.प्र. हितविजयजी म.सा. की प्रेरणा से प.पू.सा.श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. एवं नाकोड़ा तीर्थोद्धारक प.पू. हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा. के भागीरथ प्रयासों के कारण ही आज नाकोड़ा तीर्थ की कीर्ति गगन को चूमती है। नाकोड़ा तीर्थ का सारा श्रेय पू. गुरु भगवंतो को ही जाता है।

जब तक नाकोड़ा तीर्थ रहेगा

तब तक मेवाड़ केशरी का अमर इतिहास रहेगा

पू. गुरुदेवों के असीम उपकारों को सदैव याद करना चाहिए जो कृत्घ्न होते हैं वह किये हुए उपकार का विस्मरण करतें हैं। लेकिन जो कृतज्ञ होते हैं वह तो हर शुभ प्रसंग पर गुरुवरों के अनन्य उपकारों को याद करते हैं। पू. ज्योतिष मार्तण्ड प्रतिभाशाली एवं विराट व्यक्ति के धनी थें। जिन्होनें अपने जीवन काल में दो सौ बत्तीस प्रतिष्ठा करवाई, सोलह अंजनशलाका करवाई। दीक्षा लेने के बाद वि.सं. 1981 पहली प्रतिष्ठा गाँव व रिंछेंड़ में करवाई, वह गुरूदेव हितविजयजी महाराजा के साथ में करवाई। अन्तिम प्रतिष्ठा अंजनशलाका, गुरूदेव के कर कमलों से रिंछेंड, में सम्पन्न हुई। गुरूदेव के जीवन काल में मारवाड़, मेवाड़, गोड़वाड़, गुजरात आदि में विचरण कर अनेक जीवों को उद्धार किया। आज तो मेवाड़ सब प्रकार की सुविधा से सम्पन्न है, उस समय में विहार करना बहुत कठिन था। ऊंची नीची भूमि थी। हर प्रकार

पूज्य गुरुदेव
हिमाचल सूरीश्वरजी
म.सा.के वरद् हस्त
रिछेंड में दीक्षा
कल्याणक विधि
जो गुरुदेव
द्वारा अंतिम
प्रतिष्ठा थी

की कठिनाईयां थी, उस कठिनाईयों को सुखपूर्व सहन करते हुए मेवाड़ की भोली जनता का बहुत उद्धार किया। मेवाड़केशरी के पद से अलंकृत किया। वास्तव में कहा जाता है कि जिस प्रकार बब्बर शेर की गर्जना से सारे जानवर कम्पने व धूजने लगते है। उसी प्रकार मेवाड़ की धरा पर अनेक प्रकार का संप्रदायवाद थे वो आप की एक ही गर्जना से मिट जाता था। आपके दिल में कभी भी संप्रदायवाद नहीं था। आप हमेशा स्थानक वासी, तेरापंथी सभी संतो के साथ मिलजुल कर रहते थे। एक बार गुरूदेव किसी से भी मिलते थे। अगला व्यक्ति जीवन भर आपके गुणों की सौरभ को कभी भूल नहीं पाते थे। आपकी बहुत ही सरल प्रकृति थी आप अनेक गुणों की खान हैं, वास्तव में आप श्री जैन जगत की एक अद्भूत आत्मा है। छोटी सी उम्र में जैन शासन के महान कार्य किये। विक्रम संवत् 2000 में सभी मेवाड़, मारवाड़, गुजरात, संघों ने लिकर, घाणेराव के अन्दर प.पू. जेष्ठ गुरूभाई पू. कमल विजयी म.सा. के वरदहस्त से आपको आचार्य पद प्रदान किया। यानि परमेष्ठि के तीसरे पद पर आप बिराजित हुये। आपका नामकरण **मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्रीमद विजय हिमाचल सूरीश्वरजी महाराजा** दिया। आप वर्तमान समय में तपागच्छ के अन्दर सभी साधु सन्तों के बीच हिमाचल सूरीश्वरजी नाम के एक ही साधु हैं।

मुंडारा नगर मे गुरुदेव का प्रभाव

विशेष गुण गुरुदेव महान लब्धि के धारक थे। क्योंकि इनकी साधना ही एक अजीब थी। कहा जाता हैं कि **देवा वित्तं नमं सन्ति जस्स धम्मे सया, मणो**- जो शुद्ध चरित्र का पालन करते हैं तो देवता भी उसको नमस्कार करते हैं, पू. गुरूदेव आपके साधना तप तेज के आगे तिमिर कभी रूक नहीं सकता हैं। पूज्यपाद विक्रम संवत् 1994 में

मगसर वद 9 के दिन घाणेराव से विहार कर मुण्डारा गांव के बाहर झाड़ के नीचे ठहरे थे, साथ में, गुमान विजयजी महाराजा मोहनभाई एवं बालकदास आदि साथ में थे। रात्रि में विश्राम कर रहे थे। पूज्य गुरूदेव को नींद नहीं आने से हाथ में माला लेकर गिन रहे थे। सामने मंदिर का पत्थर पड़ा हुआ था। जैसे – पाट खम्बे हरा खुंभी सारा मन्दिर का सामान पड़ा हुआ था। रात को बारह बजे नैत्रत्य कोण से एक व्यक्ति आकर पत्थर के साथ खेलने लगा, जैसे बच्चा गिली डण्डा खेलता हो वैसे थोड़ी समय बाद वह गुरूदेव के पास में आकर बोला। काम बताओ, गुरुदेव मौन रहे वापस बोला, सेवक तैयार है। गुरुदेव ने फरमाया जो करना हैं सो कर लो। उसी समय उसने देव माया से खम्भे आदि हाथ में लेकर मन्दिर में क्षण भर के अन्दर नो चौकी तैयार कर दी। वापस आया और कहां कि ओर फरमाओ, गुरूदेव ने कहां की जहां से आये वहां चले जाओ यदि कोई जाग गया तो डर जायेंगे। वह व्यन्तर देव कुछ दूर जाकर, जैसे विस्फोट हो ऐसी आवाज कि पास में सोये हुये पू. गुमान विजयजी महाराज उठ गये और बोले की आवाज कहां से आई। गुरूदेव बोले कुछ नहीं तुम सो जाओ। प्रातःकाल हुआ गुरूदेव वहां से विहार किया और पूजारी आया मन्दिर का ताला खोला अन्दर जाकर देखा तो नौ चौकी तैयार हैं जो काम बारह महिने से नहीं हो वह कार्य एक रात्री में देखकर, पुजारी गांव में भागा वहां संघ को इकट्ठा किया और साथ में लेकर आया। देखा सब लोग विचार में पड़ गये यहां कौन आया था। पुजारी ने कहां कि कुछ दिन पहले विहार कर के प. पू. पन्यास प्रवर श्री हिम्मत विजयजी महाराजा आदि रात्री विश्राम के लिए यहां ठहरे थे और सुबह विहार कर बाली तरफ गए। जो बुजुर्ग लोग थे उनको पहले से मालुम था कि पन्यासजी की सेवा में हर समय अधिष्ठायक देव रहता हैं। यह सब उन्ही की कृपा हैं। ये बात आजु बाजु के गांवो में फैल गई। उस समय (वाहन) गाड़ी का अभाव था। लोग घोड़ा–गाड़ी लेकर पहुँच गये। बाली में एक छोटा मेला लग गया। वहां गुरूदेव को अमुल्य लाभ मिला, जोरदार शासन की प्रभावना हुई।

जामनगर (गुजरात) का चमत्कार

विक्रम संवत् 2010 में जामनगर (गुजरात) चातुर्मास हुआ। वहां चाँदी बाजार में, एक सौ बावन जिनालय मन्दिर था। सब देवी–देवताओं के ऊपर, सात सौ वर्ष से देव कुलीकाओं पर मुसलमान ध्वजा (फरी) चढ़ती थी। पूज्य गुरूदेव ने अमेरिका से प्लेन द्वारा दण्ड कलश का सामान मंगवाकर, शुभ मुहुर्त में एक समय में एक सौ बावन जिन मंदिर पर ध्वजा चढ़ाकर प्रतिष्ठा करवाई। विशेष वहां कि पब्लिक बीस हजार जैन अफ्रीका में रहते थे। (डुंगरी) प्याज का व्यापार करते थे। देवासी रेवारी (अहिर) जाति के वेश को धारण करते थे। जब कभी भी जामनगर में प्रोग्राम होता तो उसमें उन लोगों के लिए खाने–पीने की व्यवस्था अलग करते थे।

जैसे शिविल काष्ट जैसा व्यवहार करते थे। खान पान ऊपर से देते थे, बेटी व्यवहार बन्द था। प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर पूज्य पाद गुरूदेव श्री ने सभी को एक जाजम पर बैठाकर **हालारी विसा ओसवाल वंश** की स्थापना कर खानपान बेटी व्यवहार आदि चालू करवाया। सात सौ वर्ष से अलग पड़े हुए। समस्त जैन संघ को (सात न्यात को) एक कर सम्प करावाया । उस समय वहां के महाराज श्री दिग्विजयसिंह जी ने हजारों लोगों के बीच में खड़े होकर दो शब्दों में फरमाया कि मेरे बाप, दादा, पड़दादा ने जो नहीं देखी वह में प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि एकमेवाड़ी साधु ने आकर मेरी नगरी में चार चाँद लगा दिये।

पूज्य गुरुदेव
हिमाचल सूरीश्वरजी
म.सा.के द्वारा
जामनगर (गुज.)
में 152 देवकुलिका
पर ध्वजारोपण
जो विश्व रेकोर्ड है

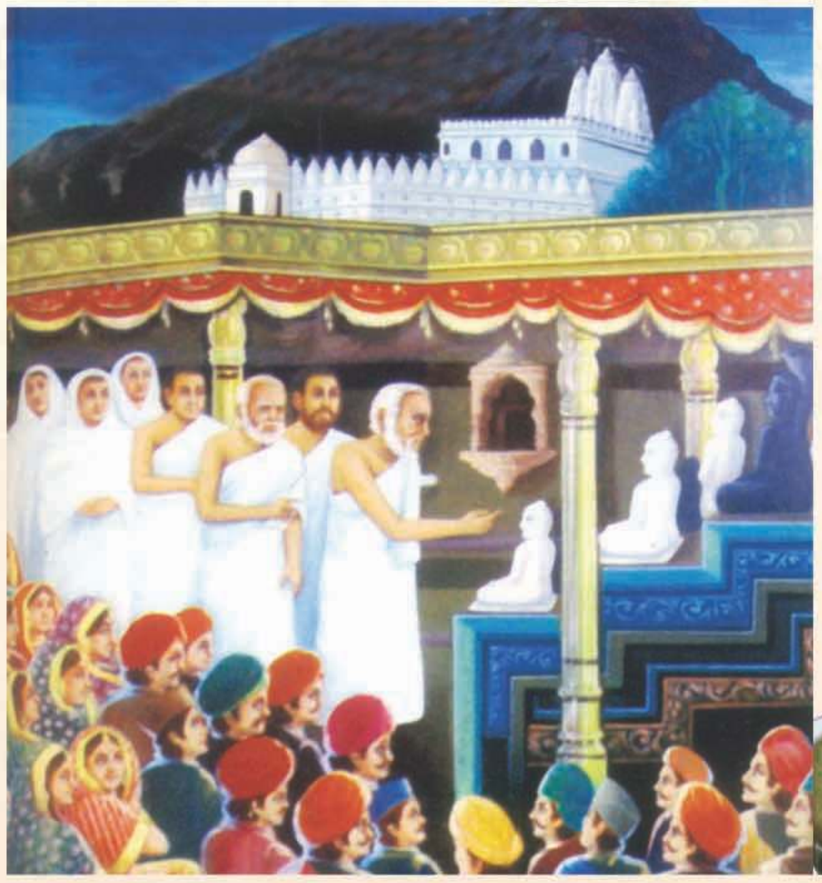

उस अवसर पर वहां कि महाराणीजी गुलाबकुंवरजी जो ज्योतिष के विषय में बहुत जानकार और विद्वान भी थी। उन्होने यह चमत्कार सुनकर अपने महलों में शाही ठाठ से गुरूदेव को बुलवाया जब गुरूदेव राज दरबार पधारे थे तब महाराजा, राजकुंवर, प्रधानमंत्री, नगर सेठ आदि विशाल जन सैलाब के साथ मेवाड़ केशरी अमर रहे, नये गुरूदेव आये.. नई रोशनी लाये। ऐसे नारों के साथ पूज्य गुरूदेव की राजदरबार में पधरामणी करवाई। श्री संघ के बीच महाराणीजी ने ज्योतिष के बारे में कई प्रश्न पूछे गुरूदेव सरल भाषा से उन प्रश्नों का जवाब दिया। गुरूदेव के अन्दर सहनशीलता, वात्सल्यता, सरलता, गंभीरतादि गुणों की सरिता को देखकर कहां की वास्तव में यह कोई सामान्य साधु नहीं है। इनकी जिह्वा पर माँ सरस्वती नृत्य करती है। आज दिन तक मैने ऐसा प्रभावशाली महात्मा नहीं देखा। महाराणी ने समस्त संघ के बीच गुरूदेव को ज्योतिष मार्त्तण्ड की पदवी से जय बोलाई यानी गुरूदेव को **ज्योतिष मार्त्तण्ड** पदवी से अलंकृत किया। अनेक संघों ने गुरूदेव को अनेक पदवियों से अलंकृत किया। लेकिन नाम की कामना से गुरूदेव लाखों कोस दूर थे। गुरूदेव के पीछे कीर्ति दौड़ती थी। लेकिन गुरूदेव कभी भी कीर्ति के पीछे नहीं गये इसलिए जिरावाला पार्श्वनाथ तीर्थ के प्रतिष्ठा का श्रेय आपश्री को ही जाता है। आपने भूतल पर विचरण करके कई तीर्थों

का जीर्णोद्धार किया। 232 आपने जिन प्रतिष्ठा करवाई। कई जीवों को उपदेश देकर संसार से विरक्त किया। मेवाड़ की धरा से कई अनमोल रत्न संयम के पथ पर निकला। पूज्य गुरूदेव जब सिंह गर्जना के सात इस पृथ्वी पर विचरते थे तब कई सन्त गुरूदेव को देखने के लिए आते थे। वो कहते थे कि कई दिनों से हिमाचल सूरी नाम सुना कई गुरूदेव के अद्‌भुत चमत्कार सुने आज हम प्रत्यक्ष दर्शन करके आनंद का अनुभव कर रहे हैं। पू. गुरूदेव की इतनी सरल एवं गंभीर प्रकृति थी जो गुरूदेव के दर्शनार्थ आते तो गुरूदेव सभी के साथ एक जैसा व्यवहार रखते थे। बहुत ही मिलनसार प्रकृति थी, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि कई गुरूदेव के भक्त थे।

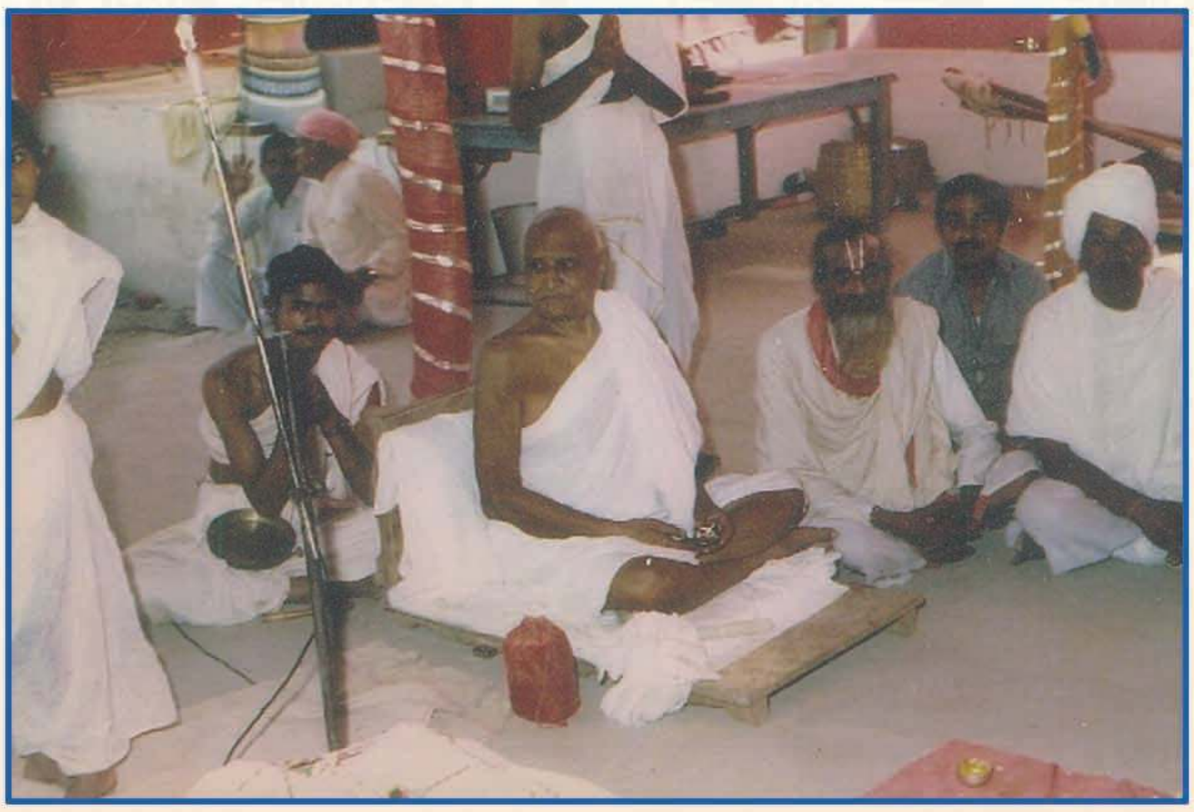

पूज्य गुरूदेव
श्री हिमाचल
सूरीश्वरजी म.सा.
के साथ
रोकडिया हनुमानजी
के महन्त
श्री नारायणदासजी

रोकड़िया हनुमानजी के महन्त नारायणदासजी का गुरूदेव के साथ विशेष लगाव था। जहाँ भी गुरूदेव प्रतिष्ठा कराते थे तो वहाँ महन्तजी पधारते थे। आज भी गुरूदेव के साधु या साध्वीजी भगवंतो का कोई भी छोटा,बड़ा कार्यक्रम होता हैं तो महन्तजी आज भी पधारते हैं। आप श्री के वरद हस्त से अंतिम प्रतिष्ठा रिंछेड में हुई। उसके बाद आपश्री का शरीर कमजोर हो गया । उस समय आप चातुर्मास के लिये घाणेराव पधार रहे थे। तभी मेवाड़ संघ ने यह चातुर्मास आप मेवाड़ में ही करो इस विनंति को लेकर कई संघ आपके चरणों में बैठा था। केलवाड़ा, तलादरी, मजेरा, रिंछेड़, ओलादर, झिलवाड़ा, सेवन्त्री, चारभुजा, लाम्बोड़ी, पड़ासली, घाटा, साथीया, मोरणा, गांव गुड़ा, मंदार आदि समस्त मेवाड़ संघ आपकी चरणों में चातुर्मास के लिए बैठे थे। पर भावी भाव को कौन रोक सकता है। पू. गुरूदेव को पता था कि अब मेरा अंतिम चातुर्मास है। फिर भी घाणेराव विजय हिमाचल सूरि कीर्तिस्तंभ में गुरूदेव ने चातुर्मास प्रवेश किया। उसके बाद दिनों दिन आपका स्वास्थ्य गिरता ही जाता था। फिर भी हिमालय जैसा विराट व्यक्तित्त्व, सागर जैसे गहन गंभीर, सूरज के समान कांति चंद्रमा के समान शीतलता का समागम सब कुछ एक साथ झलकते थे। उस झलक को पाने के लिए सदैव मेवाड़, जालोरी, सवाणची, मालानी, संघ आपके चरणों में रहते थे।

तन में व्याधि मन में समाधि अप्रमद भाव से क्रिया करते हुए पूज्य पाद मेवाड केसरी गुरुदेव

अपने आपको धन्य मानते थे । रिंछेड़ निवासी कस्तूरबा (बासा) कोठारी जिन्होने गुरूदेव की जो सेवा की है वो शब्दो से कभी भी व्यक्त नहीं होती हैं। शास्त्रों में लिखा हैं कि पुण्य के बिना योगियों को भी सेवा का फल नहीं मिलता। वास्तव में कहा जाता हैं कि, कस्तुरचंदजी बासा का कितना जबर्दस्त पुण्य होगा कि, एसे अद्भूत योगी की सेवा करने का मौका मिला। पू. गुरूदेव श्री रत्नत्रयी की साधना में आकण्ड डूब गये। निर्मल चारित्र, साधना, आराधना, उपासना प्राप्त की जो शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने मे हम असमर्थ हैं।

जो साधक अपनी इन्द्रियों को दमता हैं,वह अध्यात्म की वाटिका में रमता हैं।
होगी अवश्य उस व्यक्ति की परम् ख्याति,जिन में संयम साधना की अनुपम क्षमता हैं।

विक्रम संवत् 2043 में ऐसे गुरूदेव नमस्कार महामंत्र की साधना करते-करते 78 वर्ष की आयुष्य पालकर (पूर्ण करके) कार्तिक सुदी बारस विक्रम संवत् 2043 में मध्याह्न 2 बजे 27 मिनिट पर अपने नश्वर देह को छोड़कर देवलोक पधारे । 78 वर्ष की उम्र में 62 वर्ष दीक्षा पर्याय था। उसमें एक दिन भी ऐसा नहीं निकला की जिसमें शासन प्रभावना नहीं हुई। हम सबको निराधार छोड़कर आपश्री महायात्रा में निकल पड़े। आपके इस नश्वर देह को देखकर आपके भक्तों का तो हाल बेहाल हो गया था। बालक तुल्य विलाप कर रहे थे। हे क्रूर काल राहु! कहाँ गई तेरी नेक-नीति, कहाँ गई तेरी शौर्य की पराकाष्ठा गुरूदेव की निर्जीव देह को देखकर मानव क्या पृथ्वी भी कांप उठती हैं, उस समय का माहौल वो स्वंय ही जान सकते हैं। एक जैन जगत की जानी मानी महान विभूति सदा के लिये चली गई। फूल कैसे खिलता यह फूल ही जानता हैं। भंवरा तो केवल रस लेकर उड़ जाता है। कभी भी गुरूदेव अपने शिष्य परिवार या जैन अजैन 36 कुम भक्तों की आँखो से आंसू गिराने नहीं देते थे आज हमें आंसु बरसाते छोड़ गये। अब कौन पौंछेगा दर्दिले आँसुओं को, अब कौन देंगे मीठे शब्दों से धर्मलाभ, हम गुरूदेव अब किसके पास जायेंगे। कौन हम को प्रतिष्ठा, उपधान संघ, मुहुर्त्त कौन देंगे कई जगह आपके उपदेश से नूतन मंदिर का काम चालू हैं, कई जगह नूतन उपाश्रय आपके कर कमलों द्वारा उद्धाघाटन होने वाला था। पूज्य गुरूदेव आप को इतनी क्या जाने की उतावल थी। आपने किसी भी शिष्य परिवार पर भी ध्यान नहीं दिया की मेरे शिष्य परिवार का क्या होगा एवं मेवाड़ की भोली जनता का क्या होगा। पूज्यपाद गुरूदेव के हम कितने अभागे शिष्य हैं, जो अंतिम दर्शनों से वंचित रहे। पूज्य गुरूदेव जैन शासन में आपकी क्षति पुरी नहीं होगा। आपकी हरपल याद आती रहेगी।

गुरुदेवश्री की दादावाडी
समाधि स्थल घाणेराव

पू.मेवाड़ केशरी गुरुदेव का
ज्ञान मंदिर घाणेराव

अंतिम चातुर्मास
कीर्तिस्तम्भ घाणेराव

जिन्दगी के जहर को अमृत बनाकर पी गये।
शूल में फूल जैसे मुस्काराकर जी गये।
मौत बेचारी उन्हे क्या छूं सकती,
जो लाखों दिलो में प्यार बनकर जी गये।

हे गुरूदेव आपने अपना आत्म कल्याण साध लिया। हम आपसे एक ही आर्शीवाद मांगते हैं कि आपका सानिध्य मिले और आपने हमेशा संघ के हित का ही चिंतन किया। उस उपकार को हम कभी भूल नहीं पायेंगे। आप अपने दिव्य आशीर्वाद द्वारा हम पर कृपा दृष्टि करते रहे। ताकि हम आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारो को जीवन के अंतिम क्षण तक जीवंत रखे, परलोक में भी परमात्मा शासन प्राप्त कर मोक्ष पद को प्राप्त करे और आपकी सभी जीव करू शासन रसी की भावना पूर्ण कर सके।

इतिहास कांच के टुकड़ों का नहीं, हीरो का बनता हैं,
इतिहास घास के तिनकों का नहीं, तारों का बनता है।
जीवन के संग्राम में जीने वालों
इतिहास कायरों का नहीं, हिमाचलसूरि जैसे धर्म वीरों का बनता हैं।

हे गुरूदेव आपके गुणों का वर्णन मानव जिह्वा करने में असमर्थ हैं। जिन आज्ञा विरूद्ध कुछ लिखने में आया हो तो - त्रिकरण योग से

मिच्छामि दुक्कडम्

लि. कमलप्रभाश्रीजी म.सा.

वंदना...वंदना...वंदना...रे गुरुराज को सदा मोरी वंदना...रे.....

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

मेवाड़ केशरी के चातुर्मास

मेवाड़ केशरी चरण-थल पड़े, पल-पल होत कल्याण ।
विगड़े-उजड़े बाग भी, तब बन जाते उद्यान

वि.संवत	स्थान	वि.संवत	स्थान	वि.संवत	स्थान
1980	घाणेराव	2001	घाणेराव	2022	चारभुजा
1981	देसुरी	2002	शिवगंज	2023	उदयपुर
1982	खुडाला	2003	रिंछेड़	2024	आहोर
1983	खिमेल	2004	चाणोद	2025	नाकोड़ाजी
1984	घाणेराव	2005	बडगांव	202	गढ़ सिवाणा
1985	घाणेराव	2006	गांवगड़ा	2027	नाकोड़ाजी
1986	घाणेराव	2007	उदयपुर	2028	सिलदर
1987	घाणेराव	2008	वडवान	2029	नाकोडाजी
1988	घाणेराव	2009	राजकोट	2030	नाकोडाजी
1989	घाणेराव	2010	जामनगर	2031	रिंछेड़
1990	घाणेराव	2011	अहमदाबाद	2032	नाकोड़ाजी
1991	घाणेराव	2012	पालिताणा	2033	आऊंगा
1992	रोहिड़ा	2013	आऊंगा	2034	झिलवाडा
1993	खुडाला	2014	घाणेराव	2035	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1994	साण्डेराव	2015	उदयपुर	2036	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1995	शिवगंज	2016	केलवाड़ा	2037	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1996	जोधपुर	2017	फालना	2038	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1997	पाली (मारवाड)	2018	मजेरा	2039	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1998	शिवगंज	2019	साण्डेराव	2040	कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)
1999	खिमेल	2020	घाणेराव	2041	झालों की मंदार
2000	घोणेराव	2021	रिंछेड़	2042	रिंछेड़
				2043	विजय हिमाचलसूरि कीर्तिस्तंभ (घाणेराव)

।। हिमाचल सूरि वंदना ।।

प्रगट प्रभावी महिमाशाली, मन वांछित पे पुरनारी,
वामानंदन जगदाननंदन, तुज मुरति दुःख हरनारी
कलिकालमा अवनितल पर प्रभाव तारो छे भारी
पारस जिन मांगु तुम पासे शान्ति समाधिनी क्यारी ।।1।।

मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक विरूदथी सोभता।
निर्मोहिता, निसंगता, निस्पृहताथी, दीपता ।
वचन सिद्धि, आचार सुद्धि, सहुना दिल डोलता।
हिमाचल सूरि चरणमां होजो सदा मुज वंदना ।।2।।

जे परम पदने पामवा, सुविशुद्ध संयम पालता।
जे सावधान सदाय प्रवचन माता ने संभालता
जयणा अने जे शियल प्रेमे नीची नजरे चालता,
हिमाचल सूरि चरण मा होजो सदा मुज वंदना ।।3।।

जिनकी आँखो में था, आत्म भाव का अंजन
जिनके हृदय में था, परमात्म भक्ति का गुंजन
जिनकी लेखनी में था, जिन वचन का अगाध चिंतन
जिनके मस्तिष्क में था, विविध शास्त्रों का मंथन
जिनके मन में था, संघ व शासन एकता के भाव
ऐसे थे अनेक गुणवाले प्रतिमा सम्पन्न श्री विजय हिमाचल सूरि ।।4।।

हर दिल हैं सोमवार तो हर आँख अश्कवार
यह कौन आज अज्म से उठाकर चला गया
पहले ही जख्म बहुत थे पर विधि ने तो हार नहीं मानी
जो था जिन शासन का नायक वह विदा हो गया हमसे ।।5।।

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीत सब जग जान लिया...
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया...
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं...
ऐसे ज्ञानि साधु जगत में, दुःख समूह को हरते हैं.. ।।6।।

नहीं सताऊ किसी जीव को झूठ कभी नहीं कहाँ करूं..
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोष अमृत पिया करू
अहंकार का भाव न रखु, नही किसी पर क्रोध करूं
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं
मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे..
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा स्तोत्र बहे... ।।7।।

मेवाड केशरी श्री हिमाचलसूरिजी म.सा.

जीवन परिचय

जन्मनाम - हिराचंद

जन्मभूमि - विश्व विख्यात कुंभलगढ़ के समीप केलवाड़ा मेवाड़ (राज.)

पिताश्री - श्री गुलाबचंदजी बोहरा

माताश्री - संस्कार दात्री मातुश्री पानीबाई

जन्मदिन - १९६४ जेष्ठ सुदी निर्जला एकादशी

वैराग्य बीजारोपण - ३ वर्ष की छोटी उम्र में

वैराग्य भाव प्रकटीकरण - १२ वर्ष मगसर सुदि ५ पंचमी

दीक्षा भूमि - घाणेराव (मारवाड़)

गच्छ परम्परा - सभी गच्छों का सिरताज-तपागच्छ

संयमदाता - अनुयोगाचार्य पंडितवर्य प. पू. प प्र. श्री हितविजयजी दादा

शिक्षा दाता गुरु - प. पू. गौतमजी यतिजी शास्त्र विशारद पंडितवर्य हितविजयजी

गुरु का नाम - प. पू. प. प्र. श्री हित विजयजी

सेवा सुश्रुषा - पू. प. हित विजयजी म. सा. की १२ वर्ष तक पू. गौतमजी यतिजी की और परम तपस्वी १४ मासक्षमण के आराधक पू. शान्ति विजय दादा गुरुदेव की सभी की सेवा करना उसका स्वभाविक गुण था।

समाजोत्कर्ष - जीरावला तीर्थ की पाली में नवलखा मंदिर की प्रतिष्ठा, नाकोड़ा तीर्थ का उद्धार, नाकोड़ा भैरव संस्थापक अभिनव नाकोड़ा तीर्थ संस्थापक २३२ प्रतिष्ठा अंजनशलाका कारक आदि कई शासन की प्रभावना की।

देह वैभव - रवि सदृश देदिप्यमान, चंद्र तुल्य, सौम्य सूर्य समान, कांति हिमालय जैसा विराट - व्यक्तित्व सागर जैसे गंभीर, सिंह जैसी गर्जना वात्सल्य से भरे नयन आदि अनेक - गुणों के धारक थे।

पदवी- नाकोड़ा तीर्थोद्धारक, मेवाड़ केशरी, ज्योतिष मार्तण्ड, शिल्प दिवाकर आदि अनेक - पद से अलंकृत थे।

गणिपद - शास्त्र विशारद आगमज्ञान प. पू. हित विजयजी म. सा. के कर कमलों द्वारा - घाणेराव में

आचार्यपद - प. पू. गुरु भ्राता कमलविजयजी म. सा. के कर कमलों द्वारा घाणेराव में

समाधि स्थल
घाणेराव

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

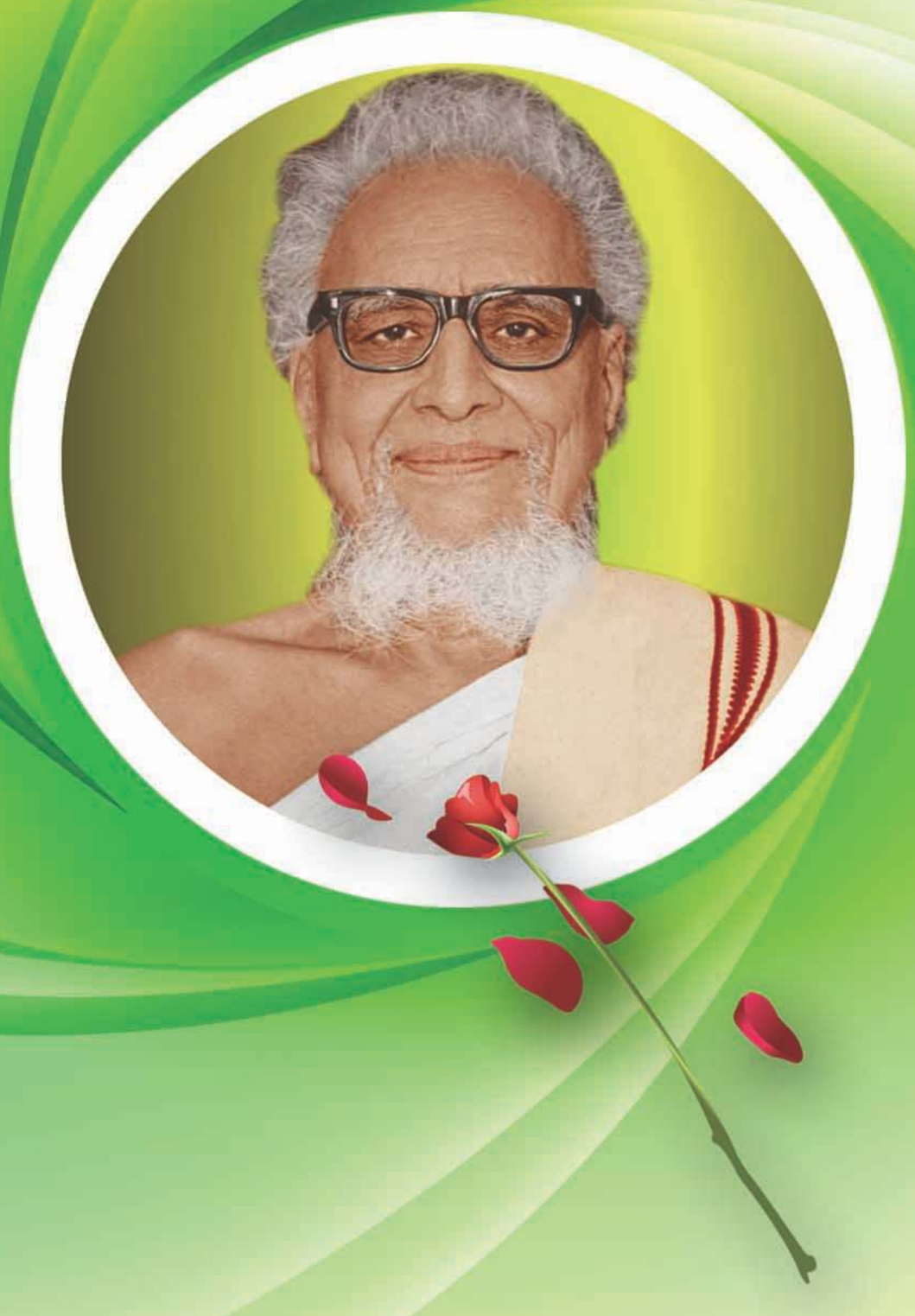

मेवाड़ केशरी के अद्भूत चमत्कार

रिंछेड़ से 3 कि. मी. दूर आमज माता का मन्दिर हैं : जो कोठारी परिवार की कुल देवी हैं। माता का स्थान बहुत ही रमणीय हैं। चारों तरफ आम के वृक्ष हैं। उसके बीच भव्य मंदिर है। 300 सीढ़ियां चढ़कर जाना पड़ता हैं, एक बार मेवाड़ केशरी गुरूदेव ने विहार किया और मजेरा जा रहे थे बीच में माताजी का मंदिर आया। वहां भी माताजी के भोपाजी तलेटी पर बैठे थे। उन्होने गुरूदेव को वंदन किया और कहां गुरूदेव आप माताजी के दर्शनार्थ पधारो। गुरूदेव के साथ में भी भक्तों का टोला था। 40,50 भक्तों के साथ गुरूदेव आमज माता पधारे–आगे जाकर देखे तो माताजी के मंदिर की सेवा करके पुजारी मंदिर को ताला लगाकर माताजी के मंदिर के ऊपर पांहाड़ियों में जोगिया बावजी मन्दिर वहां चला गया। गुरूदेव ने दोनो हाथ जोड़कर कहा कि हे माता मै तेरे द्वार पर आया हूँ, तेरा तो दरवाजा ही बंद है। गुरूदेव के शब्द निकलते ही माताजी के मंदिर के दरवाजे का ताला टूट के अपने आप खुल गया। गुरूदेव आपके त्याग तप को धन्य है। जो देवी–देवता भी आपको दर्शन देते हैं। –चाँदमल चन्दनमल सिंघवी मजेरा

रिंछेड़ में श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा : विक्रम संवत 2041 को रिंछेड़ की धन्यधरा पर चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की अंजन शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के दरमियान–ध्वजा के बोली के लिए जाजम बिछाई गई। ध्वजा की बोली चालु हुई। मेवाड केशरी गुरूदेव ने खिमराजजी नंदारामजी कोठारी को कहां की ध्वजा की बोली तुमको लेना है। गुरूदेव के आदेश का पालन करने हेतु जाजम पर आकर ध्वजा की बोलियां चालु की धनाधन ध्वजा की बोली बढ़ती गई। बढ़ती–बढ़ती बोली 40 लाख तक गई। फिर खीमराजजी ने गुरूदेव को कहां कि हे गुरूदेव आपके आशीर्वाद से 40 लाख तक बोली, अब मेरी इच्छा नहीं

हैं, गुरूदेव ने कहा कि हे खीमराज चाहे एक करोड़ में ध्वजा जाये लेनी तुमको ही हैं, यह मेरा आशीर्वाद हैं, गुरूदेव के आशीर्वाद को स्वीकार करते हुए ध्वजा की बोली खीमराज,नन्दरामजी कोठारी ने ही ली। गुरूदेव के आशीर्वाद से आज लक्ष्मीपुत्र के पद से अलंकृत हैं। आज लाखों रूपया गुरूदेव के नाम से शासन की प्रभावना करने में लगाते हैं। यह प्रत्यक्ष चमत्कार है।

सेवन्त्री (रूपजी) प्रतिष्ठा का चमत्कार : विक्रम संवत 2050 को सेवन्त्री नगर में आदिनाथ एवं अजितनाथ भगवान की भव्य प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव था उसमें गुरूदेव को बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ा। क्योंकि वहां संप्रदायवाद की गहरी जड़ थी। सभी तकलीफों को सहते हुए भी धूम धड़ाके के साथ गुरूदेव ने प्रतिष्ठा करवाई। शा. मांगीलालजी नाहर को घी का त्याग था कि जब तक प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक घी का त्याग ऐसे थे गुरुभक्त। 36कौम के लोग गुरूदेव के साथ थे। जिस दिन प्रतिष्ठा हुई (वैशाख सुद..7) को गुरूदेव ने नवकारशी की उसके बाद जहां मुख्य पंडाल था वहा गये और टेन्ट वाले से कहा कि हे भाई यह कीमति सामान है, आप जल्दी उतार देना, टेन्टवाले ने गुरूदेव से कहा की क्यों गुरूदेव? गुरूदेव ने कहा की जोरदार बारिश होने वाली है साथ में उपस्थित भक्तों ने कहां कि गुरूदेव आकाश में एक बादल भी नहीं है। बारिश आयेगी कहां से ? गुरूदेव ने टेन्ट वाले से कहां कि एक दो आदमी ज्यादा करके जल्दी से जल्दी सामान उतार देना। ऐसा बोलकर गुरूदेव उपाश्रय में पधारे। दोपहर में 3 बजे अचानक उमड़ घुमड़ कर बादल आये। ऐसी जोरदार बारिश हुई कि नदी नाले में पानी आ गया। मेवाड़ केसरी गुरूदेव ने कहा कि इस गांव मे कभी अकाल नहीं पड़ेगा। आज भी गुरूदेव के मंगल आशीर्वाद से सेवन्त्री का पानी कई जगह आज भी जाता है। यह गुरूदेव का वचन एवं चमत्कार आज भी आप जाकर देख सकते हैं। इस गांव की सौंदर्यता निराली है। हरियाली पहाड़ियों के बीच गांव बसा हुआ हैं। दो शिखरबंद भव्य मंदिर है। साथ में रूपनारायणजी का मंदिर हैं जो सतत भक्तो का टोला आता ही रहता हैं। पवित्र पावन गौमती नदी कलकल कर बह रही है। इस गांव के चारो तरफ आम एवं रायण के वृक्ष हैं। बहुत ही सुन्दर एवं पवित्र यह गांव है। - शा. भंवरलालजी कोठारी सेवन्त्री

विमलनाथ भगवान की भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव : बालोतरा में विक्रम संवत् 2032 - 14-2-1976 माह सुदी 14 (चउदस) बालोतरा की पावन धरा पर विमलनाथ भगवान की प्रतिष्ठा कराने मेवाड़ केशरी गुरूदेव पधारे। समस्त बालोतरा श्री संघ ने भव्य स्वागत के साथ गुरूदेव के सामैया हुआ जोर शौर से प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्य चालु हुआ। निर्विघ्न कार्य चल रहा था व ध्वजा के दिन फले चुन्दड़ी थी। उसी दिन विशाल जन सैलाब उमड़ पड़ा। बालोतरा श्री संघ ने गुरूदेव को कहा - गुरूदेव हमने सोचा उनसे ही कई गुणी जनता है। लेकिन मेवाड़ केशरी का ऐसा अद्भूत चमत्कार रहा कि 36 कौम की फलेचुन्दड़ी के बाद भी मिठाई बची। सभी जगह मिठाई भेजी-तो भी कमी नहीं हुई। यह चमत्कार तो कई जगह होता ही था- प्रतिष्ठा के पश्चात् आज बालोतरा की शान दिन दो गुणी रात चोगणी। आज बालोतरा उद्यो क्षेत्र में बहुत बढ़ गया। आज जो बालोतरा की देन हैं, सारां श्रेय हिमाचल गुरूदेव को जाता हैं।पटवारी परिवार-बालोतरा।

श्री नाकोड़ा भैरवजी की आरती

ॐ जय जय जयकारा, वारी जय जय झंकारा,
आरती उतारो भविजन मिलकर,
भैरव रखवाला, वारी जीवन रखवाला,
ॐ जय जय जयकारा ।।१।।

तुँ समकीति सुरनर मनमोहक,
मंगल नितकारा वा.म., श्री नाकोडा भैरव सुन्दर,
जन मन हरनारा, वा. ज. ओम् ।।२।।

खड़ग त्रिशुल धर, खप्पर सोहे,
डमरु कर धारा, वा. ड.,
अद्भूत रुप अनोखी रचना,
मुकुट कुण्डल सारा, वा. मु. ओम् ।।3।।

ॐ ह्रीं क्षाँ क्षः मंत्र बीज युत, नाम जपे ताहरा,
रिद्धि सिद्धि अरु सम्पद मनोहर,
जीवन सुखकारा वा. जी. ओम् ।।४।।

कुशल करे तेरा नाम लिया नित,
आनन्द करनारा वा. आ.
रोग शोक दुःख दारिद्र हरता,
वांछित दातारा वा.वा. ओम् ।।५।।

श्रीफल लापसी मातर सुखडी,
लडडु तेलधारा वा. ला.
धुप दीप फुल माल आरती,
नित नये रविवारा वा. नि. ओम् ।।६।।

वैयावच्च करता संघ तेरी,
ध्यान अडग धारा वा. ध्या.
हिम्मत हित से चित में धरता,
भव्यानंद प्यारा वा. म. ओम् ।।७।।

दो हजार के शुभ संवत्सर,
पोष मास रसाला वा. पो.
श्रीसंघ मिलकर करे आरती
मंगल शिवमाला वा. म. ओम् ।।८।।

हिमाचल सूरि गुरूदेव की आरती

ॐ जय हिमाचल मेरे, गुरू जय हिमाचल मेरे
आरती करूं तन-मन से-२, गणु गांऊ तेरे
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।१।।

पंन्यास हित के हाथों से ली, घाणेराव में दीक्षा स्वामी,
नाकोड़ा तीर्थ उद्धारक, मेवाड़ केशरी कहलाते
ॐ जय हिमाचल मेरे.... ।।२।।

गुलाबचन्द कुलदीपक, धन्य बनी पन्ना मां स्वामी,,
कुम्भलगढ़ केलवाड़ा नगरी, जन्मे गुरूराया
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।3।।

छत्तीस गुण के धारक गुरूवर, बाल ब्रह्मचारी स्वामी,
नहीं इच्छा अन्तर में कोई, मांगु नित सेवा
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।४।।

पंच महाव्रत धारी, संयम के रसीया स्वामी
अनन्त गुणों के धारक तारक उपकारी
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।५।।

अल्प समय में स्वामी, पायो यश भारी स्वामी
संघ, मली गुण गावे, स्वीकारजो सेवा
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।६।।

हिमाचल गुरु की आरती, जो कोई नर गावे स्वामी
भक्ति करु तन-मन से, पार करो बेड़ा
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।७।।

हिमाचल नगर गुरु की स्मृति में, तीर्थ बना भारी स्वामी
श्री संघ मिलकर करे आरती, कमल प्रभा की वंदना
ॐ जय हिमाचल मेरे....।।८।।

जो हमें तारता है उसे तीर्थ कहते हैं

मेवाड़ केशरी की स्मृति में बना महातीर्थ

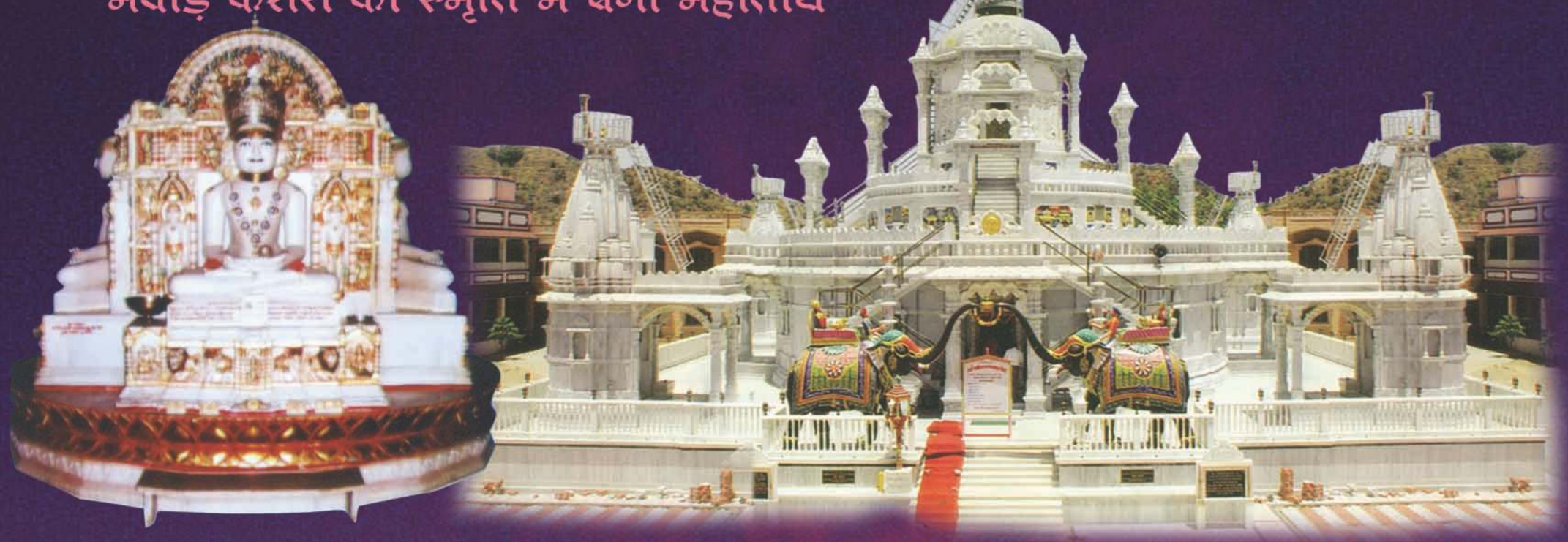

समवसरण की शोभा हैं न्यारी, हिमाचल सूरि महाराज के तीर्थ सो जबाव नहीं।

गिरि श्रृंखलाओं की मधुरतम गोद में बसा हुआ शक्ति और भक्ति से सुप्रसिद्ध झीलों की नगरी उदयपुर के समीप राजसमन्द की गोद में विराट राजा की राजधानी वोराट क्षेत्र के प्रांगण में विजय हिमाचल सूरि नगर समवसरण महातीर्थ इस महान अभिनव तीर्थ का निर्माण मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक 232 प्रतिष्ठा कारक, ज्योतिष शिल्प दिवाकर प. पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी महाराज अपने मुनिमंडल एवं भक्तगणों के साथ रिंछेड़ से विहार करके मारवाड़ की तरफ पधार रहे थे, पानी वापरने के लिये थोड़े टाईम पूज्य गुरूदेव इस पवित्र पावन धरा पर ठहरे थे।

आकृति इन्सान की पर देवता का दिल था।
बाह्य में रहते हुये, आत्म में तल्लीन था।।

आपश्री के मन की निर्मलता, चेहरे की प्रसन्नता–धर्म भावना दृढ़तादि अनेक महागुण प्रगट होने लगे। वास्तव में कहा जाता हैं कि भाग्यशाली आत्मा का भाग्योदय स्वतः होता है, आपने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा तो गुरूदेव को यहां कुछ निराला नजारा देखने को मिला। गुरूदेव ने उसी समय अपने साथ आये हुये भक्तगणों को कहा की इस भूमि पर भव्य तीर्थ के साथ मानव सेवा केन्द्र बन सकता है। जिन सिद्धान्तों के अन्दर तीर्थ का बहुत ही महत्त्व है, जो हमको तारता है उसे तीर्थ कहते हैं। भवरूपी समुद्र से तीरने लिये जिनप्रतिमा स्टीम्बर (जहाज) के समान हैं। इस भूमि का भाग्य कुछ अजीब है, गुरूदेव के वचनरूपी पुष्प को श्री संघ ने स्वीकार किया। पू. गुरूदेव के बचपन के मित्र दोनो एक ही गांव में जन्मे एक ही साथ खेले और बड़े हुये। हिरालालजी देवपुरा (केलवाड़ा) जो पूर्व राजस्थान मुख्यमंत्री से प्रसिद्ध हुये। पूज्य मेवाड़ केशरी गुरूदेव का नाम भी हीरालाल था। वो मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक 232 प्रतिष्ठा कारक ज्योतिष शिल्प दिवाकर से प्रसिद्ध हुये। दोनों का जन्म भूमि एक थी। कर्मभूमि अलग–

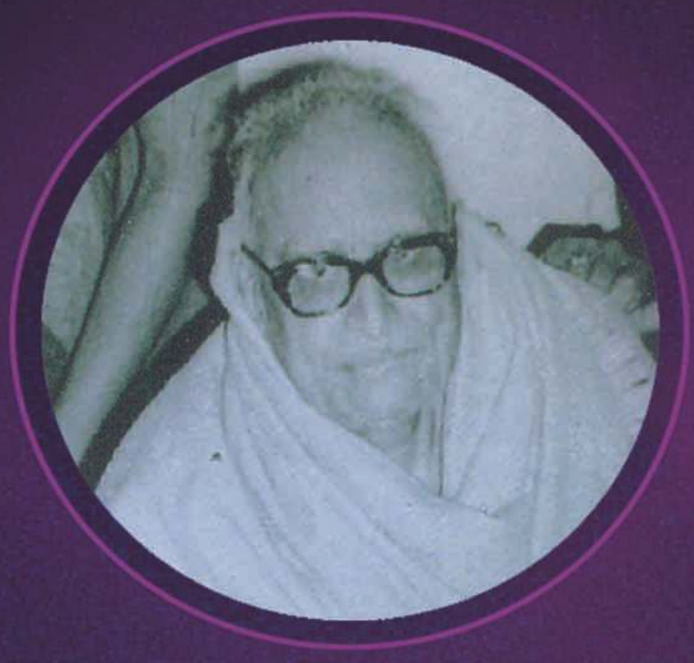

विहार के समय भक्तों को मांगलिक सुनाते
पुज्य गुरुदेव मेवाड़ केशरी गुरुजी
हमारो- अन्तर्नाद हमने आपो आर्शीवाद

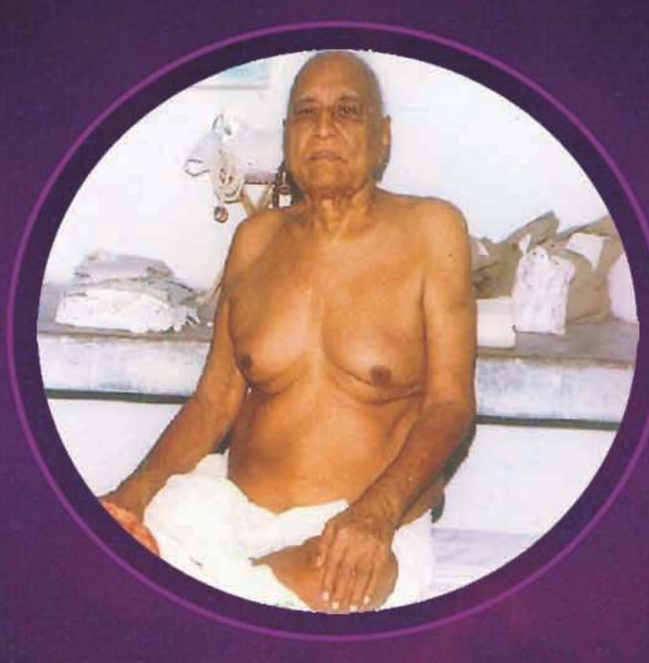

जिनका मांगलिक सुनने हमेशा
भक्त लालाईत रहते थे
मेवाड़ केशरी गुरुदेव मेरे

प.पू. मेवाड़ केशरी गुरुदेव का शरीर
अस्वस्थ होने पर भी प्रसन्नचित्त मुद्रा
में भक्तों को आशीर्वाद देते हैं

अलग थी। हिरालालजी देवपुरा के परिश्रम से यह जमीन जैन श्वेताम्बर पूर्तिपूजक श्री संघ चारभुजा (गढ़बोर) को मिली। मूर्तिपूजक जैन संघ चारभुजा ने यह जमीन जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री वोराट जैन संघ की झोली में रखी। जब यह जमीन वोराट संघ के झोली में आई थी तब मेवाड़ केशरी गुरूदेव का कालधर्म हो चुका था। कर्म की गति बड़ी विचित्र हैं, यह अच्छे-अच्छे को भी परास्त कर देती हैं। नमस्कार महामंत्र की आरधना करते हुये, संवत् 2043 में समाधि पूर्वक काल धर्म प्राप्त किया। जैन शासन का चमकता सितारा क्रुरकाल का कवल बना। मेवाड़ मारवाड़ का जगमगाता सितारा सदा के लिये अस्त हो गया। आपके दिवंगत होने से मेवाड़ को महान क्षति पहुंची उसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकेगी। एक महान धुरन्धर आत्मा का वियोग हो गया। उस विछोह के दुःख का वर्णन शब्दों में क्या हो सकता हैं। वह मात्र अनुभूति गम्य हैं। आज भी गुरूदेव के नाम मात्र सुनते ही मेवाड़ की जनता की आँखो से श्रावण भादरवा बहने लगता है।

सावन के महिने में मरूस्थल भी महक जाते हैं,
फूलों के संघ काँटे भी महक जाते हैं।
दुनियां वो मुसाफिर खाने में हजारो लोग आते हैं।
मगर जो कर देते हैं, हर धड़कन शासन को कुरबान
वो ही तो इतिहास में अंकित हो जाते हैं..... ।।1।।
महाआचार्य श्री हिमाचल सूरि, छोड़ गये क्यों बीच भंवर में
याद आपकी जब भी आती, आँखों में बदली छा जाती ।।2।।

गुरूदेव आप चले गये, लेकिन आपकी दिव्य कृपा सदा हमारे उपर बरसती रहेगी। पू गुरूदेव का मेवाड़ उपर महान उपकार था। उस उपकारियों के उपकार का स्मरण करते हुए गुरूदेव का नाम अमर करने के लिये–

जब तक गगन, सूरज, चाँद और दरिया में है पानी,
तब तक अमर रहे, हिमाचल गुरू की अमर कहानी

ऐसा विचार करके समस्त जैन मूर्ति पूजक संघ वोराटवासीयों ने गुरूदेव के नाम पर भव्य तीर्थ बनाने का निर्णय लेकर मेवाड़ दीपक नमस्कार महामंत्र के महान आराधक ध्यान निष्ठ प्रशांत विश्वशांति चाहक मेवाड़ दीपक प पू. पं. प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी म. सा. कार्यदक्ष प. पू. मुनिराज श्री रविशेखर विजयजी म. सा. की पावन निश्रा में रिंछेड़ नगर में गुरूदेव के भक्त भेरूलालजी बाबेल साहब के तरफ से उपधान तप की आराधना चल रही थी। वोराट जैन संघ ने मेवाड़ दीपक प. पू. रत्नाकर विजयजी म. सा. के आगे बात रखी कि अपने गुरूदेव का मेवाड़ उपर अगनित उपकार है। उस उपकार के ऋण को चुकाना हमारे से अशक्य नहीं है।

माँ का प्यार गुरू का वात्सल्य मिला आपसे,
जिन्दगी जीने के लिये सहारा मिला आपसे
आपने कितना किया उपकार यह तोलना मुश्किल हैं,
धर्म साधना जुड़ने का माध्य मिला आपसे ।।1।।

सरिता तरूवर और सरोवर सा
जीवन चंदन सा गुरूवर का
परोपकार में ही हर पल बीता
मेवाड़ केशरी हिमाचल गुरूवर का ।।2।।

लेकिन फूल नहीं बल्कि फूल की पंखुड़ी हमारी श्री संघ की इच्छा हैं कि मेवाड़िया चौराया पर जो जमीन गुरूदेव के चरण कमलों से पावन की हुई है वो जमीन गुरूदेव के आदेश से ही श्री संघ ने मेहनत करके ली हैं उसी जमीन पर मेवाड़ केशरी की स्मृति में भव्यतीर्थ के साथ जीवदया मानव सेवा केन्द्र बन सकता हैं, श्री वोराट जैन मूर्ति पूजक संघ की प्रबल भावना के साथ गुरू भक्ति का अद्‌भूत झरणा हर एक व्यक्ति के दिल में बह रहा था। मेवाड़ दिपक गुरूदेव ने श्री वोराट संघ को आशीर्वाद प्रदान किया कि आप का सपना गुरूदेव की कृपा से साकार बन जायेगा।

कुछ भी नहीं असंभव जग में सब संभव हो सकता हैं
कार्य हेतु कमर बांध लो तो सब कुछ हो सकता हैं।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

सोने में सुगंध

योगदिवाकर प. पू. आ.
श्रीमद् विजय आनन्दघन सूरीश्वरजी म. सा.

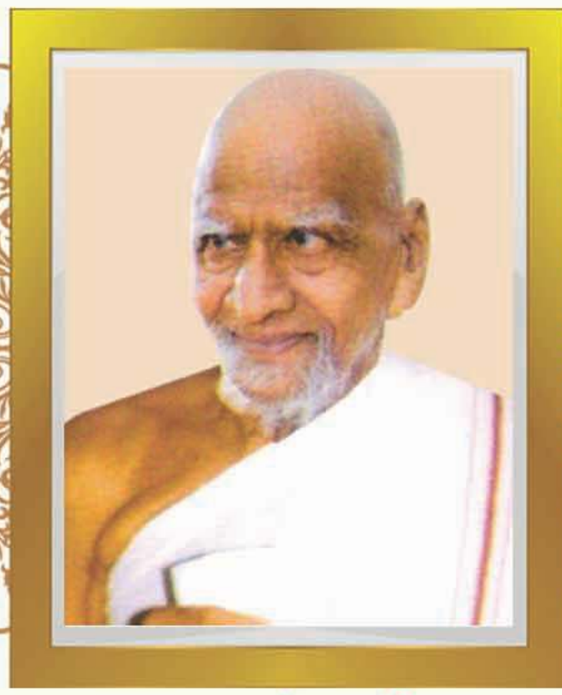

प.पू.पं.प्र. श्री
रत्नाकर विजयजी म.सा.

उस समय मेवाड़ केशरी के कर कमलों द्वारा जिसको विजय हिमाचल सूरि कीर्तिस्तम्भ के अन्दर आचार्य पद अर्पण किया ऐसे गुरूदेव श्री योग दिवाकर सप्ततीर्थ संस्थापक श्रीमद् विजय आनंदघन सूरीश्वरजी म. सा. अपने शिष्य परिवार के साथ मेवाड़ की धरा पर पधारे यह हमारे वोराट वासी जैन संघ के प्रबल पुण्योदय का उदय था (तब गुरूदेव हमारी विनंति को सुनकर गुजरात से विहार कर मेवाड़ धरा पर पधारे) श्री वोराट संघ की विनंति से आप रिंछेड़ पधारे वहां मेवाड़ दीपक प. पू. पं. प्र. श्री रत्नाकर विजयजी म.सा. से आपका मिलना हुआ। दोनो गुरूदेव एक साथ रुके थे, उस समय भेरुलालजी बावेल की तरफ से उपधान तप की आराधना चलती थी। वोराट श्री संघ ने उपधान तप के माला महोत्सव पर दोनों गुरूदेव की निश्रा में विजय हिमाचल सूरि नगर समवसरण महातीर्थ की भूमि पूजन एवं शिलान्यास की बोली लगाई गई।

भूमि पूजन की बोली रिंछेड़ निवासी शाह खीमराजजी नंदरामजी कोठारी एवं शिलान्यास की बोली मजेरा निवासी शाह चंदनमलजी वरदीचंदजी सिंघवी ने ऐसे दानवीर सेठ एवं श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ (वोराट) के कार्यकर्त्ताओ का अद्भुत उत्साह सहयोग एवं संगठन से यहां पर नव निर्माण का कार्य चालू हुआ। भूमि पूजन हुआ तब यहां पर बिलकुल समतल भूमि नही थी ऊँचे-नीचे पत्थरों की बड़ी-बड़ी चट्टाने थी। बिलकुल सुनसान जंगल था। ऐसे भयंकर जंगल के अन्दर मेवाड़ केशरी के आशीर्वाद से मंगलमय बन गया । यहां गुरूदेव के कई अद्भूत चमत्कार होते रहे। ऐसे भयंकर जंगल के अन्दर उंचे-उंचे चट्टानों के बीच जहां हर समय जंगली जानवरों का भय व्याप्त था ऐसे वातावरण के अन्दर सबसे पहले यहां वोराट संघ ने मेवाड़ दीपक पन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी म. सा. की पावन निश्रा में नवनिधि दायक नवपद

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

जब भी देखें
तस्वीर आपकी लगता है
कुछ कहते हो
भले
हमारे बीच नही हो
पर
दिल में तो रहते हो

महाराज के ओली आराधना करवाई गई। उस समय योग दिवाकर पूज्य पाद आचार्य देव श्रीमद विजय आनंदघन सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा एवं मेवाड़ केशरी की विशाल श्रमणीवृंद। नमस्कार महामंत्र की आराधनासे सम्पूर्ण वातावरण नवकारमय बन गया। 400 आराधको द्वारा सर्व प्रथम यहां ओली की आराधना हुई। उदारशील दान दाताओं की उदार भावना से दिनों दिन इस तीर्थ का निर्माण आगे बढ़ता गया।

आचार्य श्री के उपकारों को कोई मिटा न पायेगा
पूज्य मेवाड़ केशरी गुरूदेव को कोई भूला नहीं पायेगा
आपके आशीर्वाद वचनों को याद सदा रखा जायेगा
आपके द्वारा दिय गये, आाशीर्वाद को सदा माना जायेगा।

वास्तव में कहां जाये गुरूदेव आपका ही आशीर्वाद है जो निर्विघ्न रूप में अभिनव तीर्थ का कार्य चल रहा हैं। पू. योगदिवाकर संप्ततीर्थ संस्थापक ध्याननिष्ठ आचार्य देव श्रीमद् विजय आनंदघन सूरीश्वरजी महाराजा का जो इस तीर्थ पर योगदान है वो कभी भूला नहीं सकते। मेवाड़ केशरी गुरूदेव के प्रति आपको बहुत श्रद्धा हैं। आपकी विचारधारा बहुत ही अच्छी ऊंची हैं। आपको संप्रदाय के प्रति कोई भेदभाव नहीं है। आपका हंसता चेहरा आपकी मिठी मधुरी वाणी, बड़ी मिलनसार हैं आपके मार्गदर्शन से ही हमारा स्वप्न साकार हुआ।

नहीं उखड़ने वाले वृक्षों को भी तुफान उखाड़ देता हैं।
नहीं पिछड़ने वाले मल्लो को भी पहलवान पछाड़ देता है।
जैन जगत की विरल-विभूति श्री आनंदघन सूरीश्वरजी
आपकी मीठी वाणी कंजूसों को भी दानवीर भामाशाह बना देती है।

आनंदघन सूरि महाराजा जहां भी पधारते है वहां का वातावरण आनंदमय बन जाता है। आपश्री की तो हमेशा यह इच्छा रहती हैं कि हिमाचल नगर का कार्य अतिशीघ्र पूरा हो। आपको गुरूदेव के प्रति बहुत श्रद्धा हैं, तब ही तो आपने मेवाड़ दिपक प. पू. पन्यास प्रवर श्री

रत्नाकर विजयजी म. सा. के साथ चारभुजा चौराया विजय हिमाचल सूरि नगर के अन्दर विशाल साध्वी समुदाई के साथ चातुर्मास किया। वो चातुर्मास गुरूदेवों का स्वर्ण अक्षरों में अंकित हुआ। मेवाड़ के इतिहास में आप सभी गुरू भगवंतो का चातुर्मास लड़ी में कड़ी जुड़ी प्रथम चातुर्मास हिमाचल नगर का कभी भूला नहीं जायेगा। चातुर्मास के दरम्यान नवनिर्माण का कार्य बहुत तेजी से चला। देखते-देखते यह तीर्थ रूपी चंद्र सोले किरणों से खिल उठा। तीन गढ़ से युक्त गोलाकार भव्य समवसरण मंदिर अपनी कलात्मका प्रथम खंड़ में प्रथम तीर्थाधिपति युगला धर्म निवारक श्री आदिनाथ भगवान की 51 इंच की चौमुखी नयनाभिराम मन मोहक चार प्रतिमाजी कल्पवृक्ष के नीचे बिराजमान है। यह चारो मूलनायक दादा की जो प्रतिमजी है वो चारों प्रतिमा शिल्पकारों द्वारा विधि विधान सहित हिमाचल सूरि नगर में बनाई गई और साथ में वर्तुलाकार में 12 देहरी में 17 इंच की श्री सिमन्धर स्वामी विमलनाथ भगवान आदि अन्य प्रभू विराजमान हैं। बाहर की विशाल शिखर सहित चारों देहरीयों के अन्दर प्रथम देहरी के अन्दर मेवाड़ केशरी की भव्य प्रतिमा हैं। सामने नाकोड़ा भैरव की प्रतिमा यह दोनों देहरी आगे वाले भाग में है। पीछे वाले भाग में दो देहरी हैं, इसमे मणी भद्रवीर एवं माँ पद्मावती विराजमान हैं, तृतीय खंड के अन्दर चरम तीर्थाधिपति शासन नायक श्रमण भगवान महावीर स्वामी की 21 इंच की चौममुख प्रतिमा कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान है। मेवाड़ प्रांत में अपने ढंग का अद्वितीय एवं चित्ताकर्षक यह भव्य तीर्थ बना है। इस तीर्थ में सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध है। सम्पूर्ण सुविधा युक्त विशाल धर्मशाला, भोजनशाला, गोशाला, छात्रावास, चिकित्सालय, आदि सभी प्रकार की सुविधा हैं। यह तीर्थ सुन्दर प्रकृति की गोद में बसा हुआ हैं। इस तीर्थ की प्राण प्रतिष्ठा एवं अंजनशलाका योग दिवाकर प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय आनंदघन सूरीश्वरजी महाराज, प.पू. मेवाड़ दीपक नमस्कार महामंत्र के महान् आराधक प.पू.पं.प्र. रत्नाकर विजयजी म. सा., प.पू.पं.प्र. श्री विद्यानंद विजयजी म.सा. आदि मुनि भगवंतो एवं मेवाड़ केशरी की विशाल श्रमणीवृंद की निश्रा में प्राण प्रतिष्ठा बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। हम नतमस्तक हैं उनके असीम स्नेह के प्रति जिनके सहयोग के बिना यह स्वप्न साकार होना मुश्किल था। अब यह तीर्थ सम्पूर्ण भारत में जैनो का गौरव रूपी तीर्थ बन चुका हैं। यह अनोखा और अद्भूत तीर्थ बनाहैं।

इस तीर्थ की गौरव गाथा, धरती के जन जन गायेंगे।
एक बार यहां दर्शन करके, इस तीर्थ को भूला न पायेंगे।।

यह तीर्थ आपका अपना तीर्थ हैं जीवन में एक बार इस तीर्थ के दर्शन करने की भावना अपने दिलों में जरूर रखे और इस तीर्थ में पधारकर हमें सेवा का मौका जरूर देवें। हिमाचल तीर्थ की इस पुण्य धरा पर पुण्यशाली जीव आते हैं। पुण्य से मिली लक्ष्मी का सद्पयोग कर अपना जीवन सार्थक बनाते हैं।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

अंधेरी रातों में भी मल्लाहो ने तट पाअे हैं,
जो हिम्मत में बढ़े, उन्होने नव इतिहास बनाये हैं
स्वयं बदले के भी जिसने युग को बदल दिखाया है,
प्रभु ने उनके कंटक पथ को भी फूलों से सजाया है।
ऐसे हैं गुरूदेव आनंदघन सूरीश्वरजी ।।
ऐसे है गुरूदेव मेवाड़ दिपक प.पू. पन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी

विशेषता इस पावन भूमि की

यहां पर संवत् 2056 से दानदाताओं द्वारा निःशुल्क आँखो का ऑप्रेशन होता है। जब यहां ऑप्रेशन की शूरूवात हुई थी तब सबसे पहले 150 ऑप्रेशन हुये। सालो साल मरीजों की संख्या बढ़ती गई। संवत 2064 में 400 ऑप्रेशन हुये। यहां जितने भी ऑप्रेशन होते हैं वो सब सफल होते हैं। आज दिन तक मरीजों की तरफ से कोई शिकायत नहीं है। यहां मरीजों की बहुत सुन्दर सेवा होती हैं। यहां पर छोटा हॉस्पीटल निशुल्क चालू है अब नया हॉस्पीटल के शिलान्यास की बोली झालों की मंदार में मेवाड़ केशरी की 21 वीं पुण्यतिथि 22,11,7 के निमित्त प. पू. सरलमना साध्वी श्री कमलप्रभा श्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में रखी हॉस्पीटल के शिलान्यास की बोली गुरूदेव के परम भक्त मोहनलालजी ओमप्रकाशजी मजेरा (पारस पेपर्स) वालों ने बड़े उदार दिल से ली है।

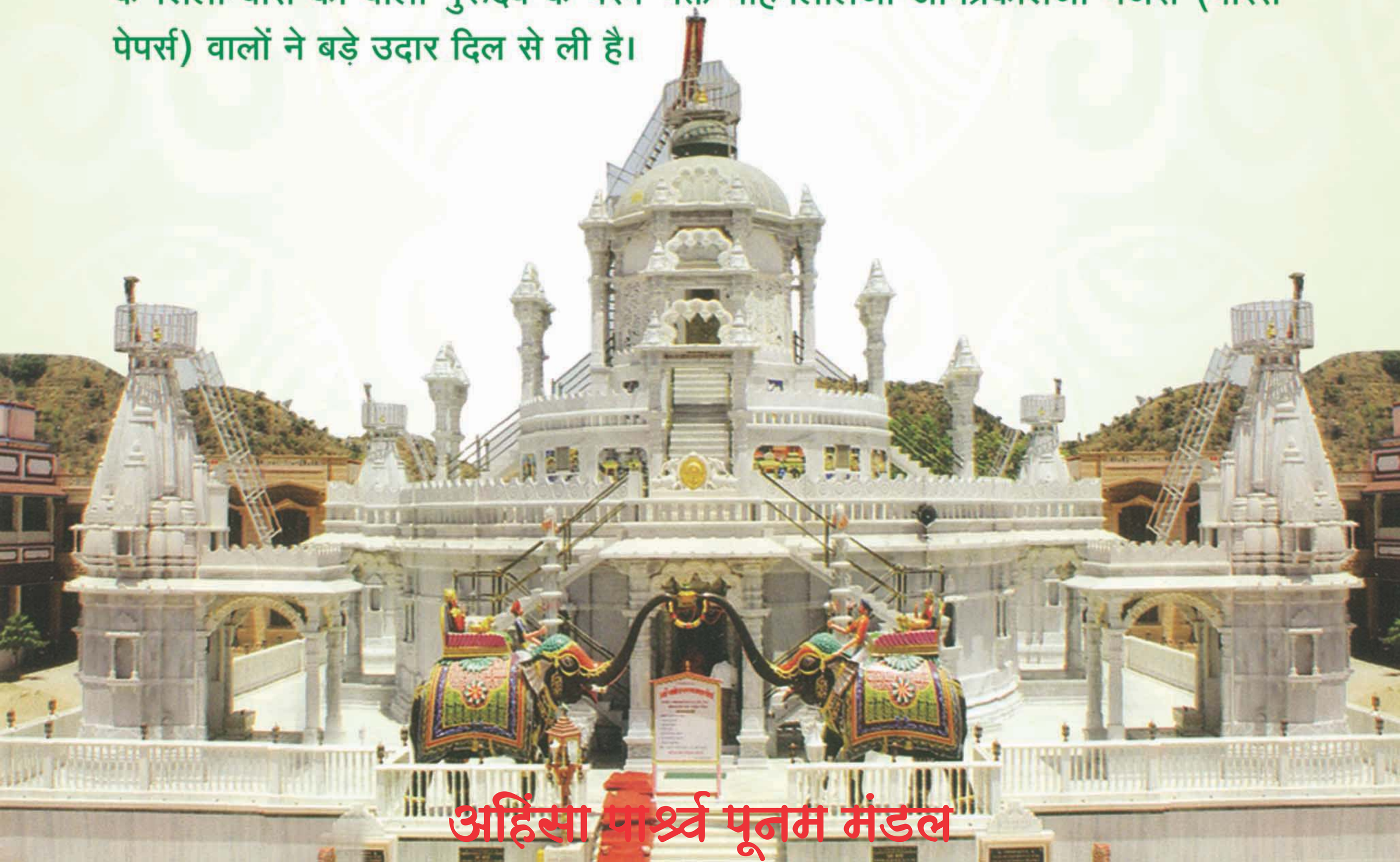

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

मेवाड़ केशरी गुरूदेव के प्रथम शिष्य

श्रीमद् विजय लक्ष्मी सूरीश्वरजी म.सा.

जीवन परिचय

राजस्थान की धरा पर जालोर जिले में वादनवाड़ी गांव में आपका जन्म हुआ था। लुंबचंद आपका नाम रखा मातृ श्री टिपुबेन के सुसंस्कार से आपका जीवन आगे बढ़ने लगा आप श्री को बचपन से ही धार्मिक भाव में रहे। युवावस्था में प्रवेश करते ही आपके माता-पिता ने आपकी शादी करवा दी उसके बाद आप श्री को दो पुत्र हुये। सागरमल, जावंतराज, आप संसार सागर में डुबकी लागाने के बाद भी वैराग्य केसपने देखते थे आप संसार में रहते थे लेकिन आपके दिल में संसार नहीं था। पूर्व भव के पुण्य का प्रबल उदय था तब ही कमल कादव में पैदा होता है पर कादव से निर्लेप रहता उसी प्रकार आप कमल की भांती संसार के कीचड़ निर्लेपथे आप श्री को नाकोड़ा तीर्थ पर हिमाचल सूरीश्वरजी म. सा. के परिचय से आपका वैराग्य प्रबल हुआ संसार से विरक्त होकर प्रवज्या स्वीकारने का आपने मनोमन निश्चय किया। लेकिन आप श्री की धर्मपत्नी से सहज आज्ञा मिले ऐसा नहीं था आपको कई प्रकार के कष्ट सहन करने पड़े उसके बावजूद भी आपको आज्ञा नहीं मिली त्याग और तप से दिनों दिन आपने वैराग्य को एकदम पुष्ट बना दिया था। हमेशा चिंतन करते थे कि (सस्नेही प्यारा संयम कब मिले) आखिर योग की बात है। आप श्री नाकोड़ा तीर्थ पधारे वहां आपने मेवाड़ केशरी के कर कमलों द्वारा आपने भागवती दीक्षा स्वीकार की लुबचंद से मुनि लक्ष्मी विजय बने यानी श्रमण जीवन स्वीकार किया साधु जीवन स्वीकारने के बाद आप हमेशा गुरूदेव के अन्तेवासी रहते थे हर कार्य में आप अप्रमद रहते थे। छोटे बड़े सभी संतो की आप सेवा करते थे। विनय वैयावच्छ यह आपका प्रमुख गुण था स्वभाव से आप बिल्कुल सरल प्रकृति के थे। सभी महात्मा की विशेष करके गोचरी की भक्ति आप ही करते थे। गोचरी की गवेषणा में 2 कि.मी. भी चले जाते थे। वास्तव में कहा जाये की भगवान महावीर का सूत्र समय गोयम मा पमायं इस सूत्र को आपने हृदय में उतार दिया था। आप उग्र विहारी - महातपस्वी थे सैंकड़ों माईल का अन्तर आप चंद दिनों में काट देते थे। आप का ज्यादा विचरण रेगिस्तान (थार) जहां साधु सन्तो के दर्शन से वर्षो निकल गये ऐसी बंजर भूमि में विचरते थे। कई उपसर्गो को सहन करते थे। मई जून की एसी भयंकर गर्मी में भी आप दोपहर में 3 बजे विहार कर लेते थे। एक बार तो आप को भंवरे का भयंकर उपसर्ग भी हुआ वह भी आपने समाधिभाव से सहन किया आपका उपकार तो जीवन में कभी नही भूलेंगे। आपने तो बिल्कुल नास्तिक जींवो को भी आस्तिक बनाया। जहां जैनो का एक घर है वहां भी आप पधारे छोटे से छोटे गांवो में भी महावीर की वाणी का

उपदेश देते थे। सभी में दया प्रधान सुक्ष्म धर्म की प्ररूपणा की आपका ज्यादा विचरण जालोर जिला पाली बाड़मेर आदि क्षेत्रों में था आपको समस्त मालानी संघ ने आपको मालानी उद्धारक पदवी से अलंकृत किया। आपके प. पू. राजशेखर विजयजी म. सा., प. पू. मनकविजय म. सा. , इन्द्रविजयजी म. सा. हंसविजयजी आदि शिष्य परिवार था। आप श्री वयोवृद्ध अवस्था में आप श्री नाकोड़ा तीर्थ पर ही स्थिर वास रहे। मालानी क्षेत्र के भक्तगण आपकी सेवा में सदा हाजिर रहते थे। नाकोड़ा तीर्थ पर आपका स्वर्गवास हुआ। जहां आपका अग्नि संस्कार हुआ। वहां भव्यति भव्य गुरू मंदिर बना। आज भी आपके भक्त आपको श्रद्धा से याद करते है। चरणों में शिश झुकाते हैं। पूज्य गुरूदेव आप देवलोक से दिव्य आशीर्वाद प्रदान करें।

–लिखि गुरू आज्ञा से साध्वी श्री प्रियदर्शना

प. पू. श्री लक्ष्मी सूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास

क्रमांक	गांव	संवत्	कुल ठाणा	क्रमांक	गांव	संवत्	कुल ठाणा
1	पाली	1996	3	27	सिणधरी	2022	2
2	हरजी	1997	3	28	आहोर	2023	6
3	पोरबंदर	1998	8	29	माण्डोली	2024	2
4	पालीताणा	1999	10	30	गढ़ सिवाणा	2025	6
5	सूरत	2000	14	31	वादनवाड़ी	2026	2
6	बम्बई	2001	13	32	भंवराणी	2027	1
7	अहमदाबाद	2002	3	33	सिणधरी	2028	1
8	इन्दोर	2003	5	34	बाला	2029	1
9	बलाना	2004	2	35	शेरगढ़	2030	1
10	माण्डोली	2005	2	36	डण्डोली	2031	1
11	नवसारी	2006	7	37	वादनवाडी	2032	1
12	वढ़वाण	2007	7	38	झीलवाड़ा	2033	6
13	बाड़मेर	2008	2	39	खण्डप	2034	1
14	माण्डोली	2009	2	40	भोरड़ा	2035	2
15	बाड़मेर	2010	2	41	पचपदरा	2036	2
16	गोदन	2011	2	42	नगर	2037	1
17	सिणधरी	2012	2	43	मजल	2038	2
18	वादनवाड़ी	2013	2	44	सिणधरी	2039	2
19	सरत(अमरसर)	2014	2	45	बालोतरा	2040	2
20	बाड़मेर	2015	2	46	नाकोड़ाजी	2041	1
21	विशाला	2016	2	47	वादनवाड़ी	2042	1
22	भवराणी	2017	2	48	नाकोड़ाजी	2043	1
23	साण्डेराव	2018	2	49	नाकोड़ाणी	2044	1
24	अरणोद (M.P.)	2019	2	50	नगर	2045	1
25	सरत(अमरसर)	2020	2	51	नाकोड़ाजी	2046	1
26	सिणधरी	2021	2	52	नाकोड़ाजी	2047	1

स्वर्ण तप करके बनता कुन्दन हैं,
खुशबू देता घिसके ही वो चंदन है,
जो मुश्किल को आसान कर देते हैं,
ऐसे हिमाचल तीर्थ संस्थापक को बार-बार वंदन हैं.....

Jivan Parichay

श्री नमस्कार महामंत्र आराधक, मेवाड दीपक

पंन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी म.सा.

जीवन परिचय

मेवाड़ की माटी सोना उगलती हैं। इस माटी में पैदा होने वाले धर्म मे शूरवीर होते हैं। राजसमन्द जिले में हल्दी घाटी के समीप गांव गुड़ा नगर में धर्मनिष्ठ सुश्रावक चेनमलजी मातुश्री वरजूबाई की रत्नकुक्षी से विक्रम संवत् 1974 में रविसदृश्य देदिप्यमान, चंद्र तुल्य, सौम्यकृत ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया। जब त्रैलोक्य परमात्मा का पृथ्वीतल पर जन्म होता हैं, तब तीनों लोक प्रकाशमय और खुशियों का वातवरण चारों और गूँज उठता हैं, वैसे इस बालक के जन्म पश्चात् घर आँगन में खुशियों का वातावरण चारों और गूँज उठा है। माता-पिता ने अपने पुत्र का रत्नकुमार (रतनलालजी) नाम रखा। वास्तव में यह रत्न ही नहीं बल्कि सम्यक् रत्न है। बालक माता-पिता के प्यार से बढ़ता है। साथ में धर्म के संस्कार से अपने जीवन का सिंचन करते हैं। वसुन्धरा को पावन करते हुये पूज्य मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा पधारे। गुरूदेव की अमृतमय जिनवाणी के सिंचन से, रत्नकुमार के हृदय में वैराग्य का अंकुर फूट गया। छोटीवय मे भी आपकी उच्च आत्मा संसार की असारता को भली भांति जानने लगी। इस वजह से आपका वैराग्य भाव और भी पुष्ट हुआ। आपका मन संसार के भौतिक व क्षण भगुंर सुखों से विरक्त हो गया। ज्ञान गर्भित वैराग्य के दीप में तेल भरने काम किया। मुनिवेश धारन करने के लिये मन उत्कंठित हुआ। आपश्री विनयपूर्वक अपने माता पिता से दीक्षा लेने की आज्ञा मांगी। आज भी मेवाड़ के अन्दर दीक्षा की आज्ञा लेने में कई प्रकार की कठिनाईयां सहन करनी पड़ती है। तो रत्नराज को तो कितना सहन करना पड़ा होगा। माता-पिता इतने सहज भाव से आज्ञा प्रदान नहीं कर सकते। क्योंकि पुत्र

के प्रति मोह होता है, लेकिन रत्नराज का वैराग्य इतना दृढ़ था कि मोह का पवन उसका कुछ बिगाड़ नहीं सका। आखिर 2003 में जेष्ठ वदी 3 के दिन शुभ मुहुर्त में मेवाड़ केशरी के कर कमलों द्वारा हजारों की जन संख्या के बीच गांव गुड़ा के अन्दर भागवती दीक्षा प्रदान की। यानी मुनि वेश को स्वीकार किया । अप्रमद भाव से संयम साधना में रक्त बने । गुरूदेव के साथ में विचरते हुए आगमों का गहन अध्ययन किया। आपका त्याग, तप आपके संयम साधना आज हजारों लोगों को प्रेरणादायक होती हैं। आपके पास हमेशा चौथा आरा वर्तता हैं, आपकी संयम की साधना त्याग तपस्या आदि गुणों का वर्णन मानव जिह्वा से करना असक्य हैं। आप नाम की कामना से लाखों कोस दूर है। आपके रोम-रोम में जिनशासन का झरना बहता है। आप परमात्मा के आज्ञा के विरूद्ध कभी भी कार्य नहीं करते हैं। दर्शनार्थ आने वाले भक्तों से कोई परिचय नहीं केवल त्याग की बात करते। लाखों महात्मा के अन्दर ऐसा अद्भूत योगी मिलता हैं इनके लाखों भक्त हैं लेकिन यह भक्तों से कोसो दूर रहते हैं। गुरूदेव आपके जीवन कि क्या बात बताऊं। गुरूदेव के कई पगल्या हों या चातुर्मास प्रवेश या धार्मिक कोई भी प्रोग्राम हो उसमें बैम्ड बाजा, फोटोग्राफर, आडम्बर आपको बिलकुल पसंद नहीं, आपके हाथ में हमेशा नवकार वाली रहती है। हमेशा हर वक्त आप नवकार मंत्र का स्मरण करते हैं। आपके उपदेश में जिन आज्ञा का प्रवाही बहता हैं। आपकी पवित्र निश्रा में कई उपधान तप, प्रतिष्ठा, दिक्षा अट्ठाई महोत्सव होते रहते हैं। उसमें जिन आज्ञा विरूद्ध कुछ भी हो जाता है तो आपका हृदय कम्पित हो जाता है। तो आप सही बात मुंह पे कह देते हैं। क्योंकि आप संयम साधना में भी सही, सत्य बात कहने भी सही। पूज्य गुरूदेव आप समस्त गुण सम्पन्न होने के बावजूद भी आपको नाकोड़ा तीर्थ के ट्रस्ट मंडल ने तथा मेवाड़ - मारवाड़ कई संघो ने आपको आचार्य पदवी लेने की विनंती की लेकिन आपने किसी भी संघ की विनंती को स्वीकार नहीं की। पूज्य मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी म. सा. के कर कमलों द्वारा आपको पन्यास पद से विभूषित किया। नाकोड़ा तीर्थ पर पूज्य गुरूदेव का विहार क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़ आदि प्रांतो में पूज्य पन्यास, प्रवर आपश्री वर्तमान में मेवाड़ के भगवान हो। कई वर्षो से शुद्ध चौविहार करते हैं। आप गोचरी भी एक टाईम ही करते हैं। आपकी उम्र लगभग 92 वर्ष की होगी। 63 वर्ष आपका दीक्षा पर्याय हैं। आज भी आप पदविहारी है। आराधना में भी आपकी सुवास हमेशा एक जैसी। कई वर्षो से असाता वेदनीय कर्म से नाक और आंख में तकलीफ हैं पर भी समता एवं समाधिभाव से सहन करते है। लेकिन कभी भी कोई प्रकार की तकलीफ आप व्यक्त नहीं करते। गुरूदेव के गुणों को व्यक्त करना सक्य नहीं हैं। एक गुण लिखे तो दूसरा गुण प्रकट होता ही है। अगर सर्वगुणों की खान कहा जाय तो भी कम है। ऐसे गुरू का सानिध्य मिलना पूर्व भव का पुण्य हैं। लिखने में कोई आशातना हुई तो मिच्छामि दुक्कड़म्।

-आपकी कल्प दर्शना

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

मेवाड़ दीपक प. पू. पन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजयजी महाराजा

संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम : रतनचन्दजी पिता : चेनरामजी शिवलालजी पामेचा

माता : वरजुबाई भाई : गुलाबचन्दजी, डालचन्दजी, मोतीलालजी, दलीचन्दजी

बहन : राजी बाई गौत्र : पामेचा जन्म : विक्रम संवत् १९७४,गांव गुड़ा (मेवाड़)

दीक्षा : विक्रम संवत् २००२ ज्येष्ठ वदी -३, गांव गुड़ा (मेवाड़)

दीक्षा दाता : मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा.

गुरूवर : मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा.

बड़ी दीक्षा : २००२ में मगसर सुद ६

बड़ी दीक्षा स्थल : रिछेंड़ (वोराट क्षेत्र) जिला-राजसमन्द

पन्यास पदवी : विक्रम संवत् २०२४ महावद-३,नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर बाड़मेर

पन्यास पद प्रदाता : मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचल सूरि

पदवी : मेवाड़ दिपक, नमस्कार महामंत्र के महान आराधक आदि

आभ्यन्तर : ऋजुता, सरलता, वात्सल्यता आदि।

विशिष्ट गुण : प्रभु भक्ति, अप्रमत्त किया, संघवात्सल्यता, क्षमा, समता, समाधि, सहिष्णुता, प्रबल,वैराग्य, विनय, वैयावच्च, ज्ञाग ध्यान, जयणा आदि गुणों की खान है।

साधना : अल्प निद्रा, अल्प आहार, अल्प कषाय, नितंर जागृत दशा में धर्म साधना

शिष्य परिवार : प. पू. पन्यास प्रवर श्री रविशेखर विजयजी म.सा., प. पू. मुनिराजश्री ललितशेखरविजयजी, प. पू. मुनिराज श्री सूर्यशेखर विजयजी म.सा. आदि ठाणा।

मेवाड़ दीपक नमस्कार महामंत्र के महान आराधक परम पूज्य पन्यास प्रवर श्री रत्नाकर विजय महाराज के कर कमलों द्वारा उनके मार्गदर्शन द्वारा कई शासन की अद्भूत प्रभावना ।

आपकी प्रेरणा से आपश्री की निश्रा में हुए उपधान तप

- पहेला भीलवाड़ा – 1
- मजेरा – 2
- रिंछेड़ – 2
- सायरा – 1
- सुरत (अमसर) में – 1
- जोधपुर में – 1
- सुमेरतीर्थ में – 1
- रेवदर में – 1
- गांव गुड़ा में – 1
- विजय हिमाचल नगर में – 1

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

ज्योतिष के प्रकांड पंडितवर्य
प.पू. पन्यास प्रवर

जीवन परिचय

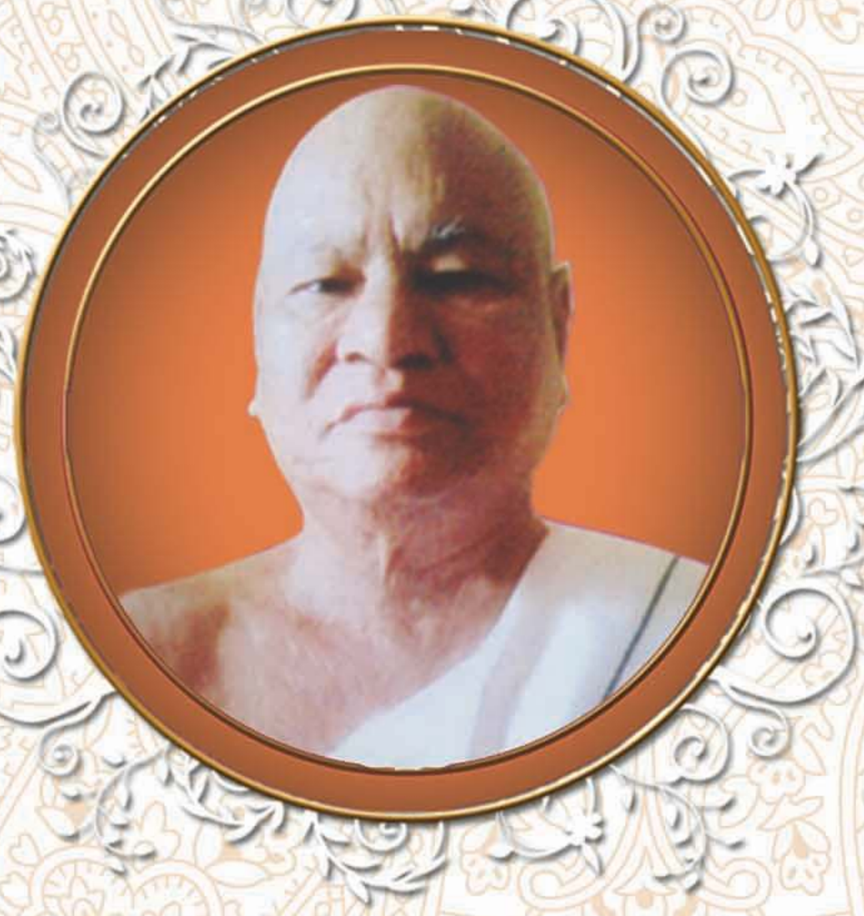

श्री विद्यानन्दविजयजी म. सा.

जन्म : 1997 मगसर वद अमावस्या
दीक्षा : 2015 फाल्गुन सुदी 2,बुधवार घाणेराव में
पन्यास पद : 2028 मगसर वद 6, सिलदर में

बहुरत्ना - वसुन्धरा

विक्रम संवत् 1997 में गोड़वाड़ की धन्यधरा घाणेराव नगर में आपका जन्म हुआ। माता श्री पानी बाई पिता श्री केशरीमलजी और आप श्री का नाम ओटमलजी था। मेवाड़ की माटी में कई रत्न छुपे हुये हैं। आपका बचपन लाड-प्यार से बीता। आप श्री यौवन के आंगन में पांव रखते ही आप श्री को मेवाड़ केशरी गुरूदेव का दर्शन हो गया। आप के दिल में वैराग्य का प्रादूर भाव हो गया। आप श्री ने माता-पिता श्री की आज्ञा लेकर विक्रम संवत् 2015 फाल्गुन सुदी 2 बुधवार को घाणेराव में मेवाड़ केशरी नाकोड़ा तीर्थोद्धारक श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी महाराज के कर कमलों द्वारा आप श्री भगवती दीक्षा स्वीकार की । मुनि श्री विद्यानन्द विजयजी म.सा. के नाम जगत से प्रसिद्ध हैं। यथा नाम तथा गुण है। विद्यानन्द विजयजी म. सा. वास्तव में विद्या के महासागर हैं। आज ज्योतिष के आप इतने प्रकाण्ड विद्वान हैं कि बड़े-बड़े पंडितों को भी आपके सामने चुप रहना पड़ता हैं। क्योकि आप हमेशा गुरूदेव के साथ रहे। ज्ञान के साथ अनुभव बहुत है। आपकी प्रकृति बहुत ही सरल हैं एवं सौम्य है।

जिन्दगी को अच्छे कार्य करने में बिताओ
दीन-पीड़ीत अपाहिज भूलकर मत सताओ

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल

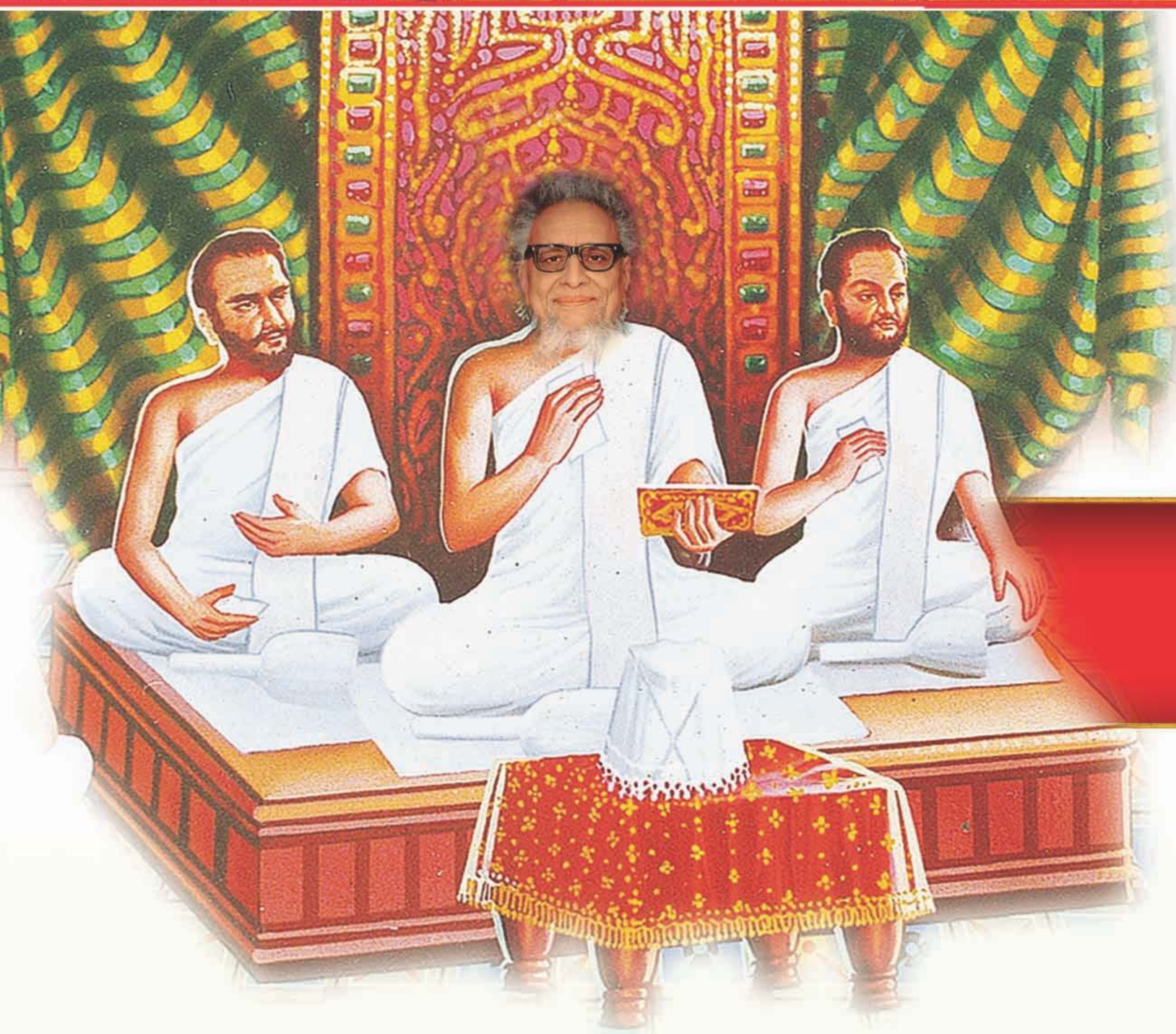

गुरुदेव मेवाड केशरी के
प्रवचनमाला के अनमोल अंश

अनमोल मोती

जहाँ राम वहाँ काम नहीं

भावना की जागृति में द्रव्य भी बहुत सहायक होता है। रावण चाहता था कि अशोक वाटिका में बैठी हुई सीता स्वेच्छा से मुझे स्वीकार कर लें। मन्त्रियों ने सलाह दी की आप वेश बदलने में कुशल हैं। संन्यासी का वेष पहनकर सीता को चुरा लाये थे। उसी प्रकार राम का वेश पहनकर सीता के सामने चले जाइये। वह आपको स्वीकार कर लेगी।

रावण ने क्या कहा? वह बोला कि यह प्रयास मैं पहले ही कर चुका हूँ; परन्तु उस वल्कधारी राम का वेश पहनते ही मेरी वासनाएं विलीन हो जाती है–विकार विलुप्त हो जाते हैं–कामनाएं कोसों दूर भाग जाती है। क्या करुं वेश का भावना पर प्रभाव इस उत्तर से प्रमाणित होता है।

स्वार्थ मनुष्य को अंधा बना देता है

एक माली और कुम्हार में मित्रता हो गई। एक साग सब्जी एवं दूसरा घड़े बेचने शहर में जाता था। एक दिन दोनों ने विचार करके ऊँट खरीद लिया। एक तरफ उसके मटके और दूसरी तरफ सब्जियाँ रखकर दोनों शहर की ओर चल दिये। आगे–आगे माली बीच में ऊँट और ऊँट के पीछे–पीछे कुम्हार चल रहा था। ऊँट को अपने एक ओर रखे हरे–हरे पत्ते दिखाई दिये तो वह गर्दन घुमाकर चलते–चलते ही पीठ पर रखी सब्जियों को खाने लगा। कुम्हार पीछे चल रहा था।

अतः यह सब देख रहा था। वह मन ही मन खुश भी था कि ऊँट माली का ही नुकसान कर रहा है। अपने मटके तो वह खा भी नही सकता । वह निश्चित होकर चलने लगा । कुछ दूर चलने के पश्चात् ऊँट की पीठ पर रखे बोझ का संतुलन विगड़ गया। सब्जियों का बोझ कम होते ही मटके वाला हिस्सा नीचे झुककर जमीन पर गिर गया। माली ने पीछे मुड़कर देखा जो उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी आधे से अधिक सब्जियाँ ऊँट खा चुका है। माली ने कहा भाई! तुम तो पीछे थे ध्यान क्यों नहीं दिया? कुम्हार बोला! ध्यान तो था मगर स्वार्थ की दीवार खड़ी होने के कारण मैं देखे को अनदेखा करता रहा । तुम्हारा तो आधा ही नुकसान हुआ मगर मेरा तो सब कुछ नष्ट हो गया है।

मनुष्य ही सबसे श्रेष्ठ हैं

चाँदी की सिल्ली ने कहाः- मैं तो चाँद के समान चमकती हूँ। सोना मैं सूरज की तरह चमकता हूँ। हीराः मेरा मुल्य तुम दोनों से अधिक है और भार कम ।

पेटीः- रक्षक इस दुनिया में बड़ा होता है।

तुम सब मेरे पेट में रहते हो मैं तुम्हारी संरक्षिता हूँ।

तालाः- लेकिन पेटी की रक्षा मेरे हाथ में है इसलिए बड़ा मैं हूँ।

चाबीः तु तो मेरे इशारे पर ही खुलता और बन्द होता है, फिर घमण्ड कै सा? हाथ : पगली! मेरे बिना तो तु हिल भी नही सकती । सुनार : तुम सब बेकार झगड रहे हो। पेटी, ताले ओर चांबी का अविस्कार मनुष्य के मस्तिष्कने किया है। जिस हाथ से चाबी घुमाई जाती है, वह भी मनुष्य ही करता है और ये सब भी मनुष्य के शरीर की शोभा बढाने के लिए ही विविध अलंकारों के रूप में परिवर्तित होते रहते हैं, इसलिए मनुष्य ही सबसे श्रेष्ठ है।

सफलता का नशा

किसी आश्रम में अनेक छात्र रहते थे। उनमें से एक छात्र को अपनी बुद्धि पर काफी अभिमान हो गया था। एक दिन गुरु ने उसे एक कथा सुनाई-घने जंगल में एक बकरी रहती थी। वह अपने को काफी चतुर मानती थी। उसके शरीर पर घने नर्म लंबे बाल थे, जिस कारण वह बहुत सुंदर दिखती थी। एक दिन वह घास चर रही थी। तभी कुछ शिकारियों की नजर उस पर पड़ी। उन्होंने उसका पीछा करना शुरू किया। बकरी भागती हुई जंगल में एक ऐसी जगह पहुँची, जहाँ अँगूर की घनी बेले थी। बकरी बेलो के पीछे जाकर छिप गई। जब पीछा करते शिकारी पहुंचे, तो वे बकरी को देख न सके । बड़ी देर तक वहाँ ढूंढने के बाद वे आगे बढ़ गये। बकरी अपनी चतुराई पर बहुत प्रसन्न हुई तभी उसका ध्यान अँगूर के कोमल पत्तो पर गया तो उसने अंगूर

की बेल को ही चरना आरंभ कर दिया। थोड़ी देर में ही उसने सारी झाड़ी साफ कर डाली। तभी शिकारी उसे ढूंढते वापस वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने बकरी को देख लिया और थोड़ी देर पीछा करने के बाद उन्होंने उसका शिकार कर लिया। शिकारी आपस में कह रहे थे कि यदि बकरी ने वह झाड़ी साफ न की होती तो उसे पकड़ना नामुमकिन था। बकरी ने अपना आश्रय स्वयं नष्ट किया और वह शिकार हो गई। गुरु ने कथा यही समाप्त कर कहा, सफलता के नशे में मनुष्य अपना विवेक खो देता है और स्वयं को संकट मे डाल लेता है। इसलिए अहंकार से बचना। शिष्य गुरु का आशय समझ गया।

पुत्रों में पैतृक परम्परा से भी गुण आते है

अकबर बादशाह का एक बहुत बुध्दिमान मन्त्री था–बीरबल। उसकी मृत्यु हो जाने से बीरबल का परिवार शोकमग्न हो गया था परिवार को सान्तवना देने के लिए स्वंय बादशाह बीरबल के घर गये। मन्त्री का उससे बढकर और क्या सम्मान हो सकता था? जब बादशाह घर पर बैठकर परिवार के बडे सदस्यो को धीरज बंधा रहे थे उसी समय उस घर का एक बालक बादशाह की गोद में आ कर बैठ गया। बादशाह ने प्यार से पुछाः बेटे! तुम्हारे पिता के साथ कितनी माताएँ सती हुई है? बताओंगे? बालक : क्यो नही? सुनिये! मेरी कुल चार माताएँ थी उनमें से तीन माता सती हो गई हैं, परन्तु एक माता परिवार का पालन–पोषण करने के लिए जीवित रह गई है, बादशाह इस्लाम धर्म में तो चार औरत से विवाह करने की छुट हैं, परन्तु तुम्हारे हिन्दू पिताने चार शादियाँ कैसे की? क्या तुम अपनी उन चारों माताओं के नाम बताओंगे? बालक : जहाँपनाह ! सुनिये! मेरी जो तीन माताएँ पिताजी के साथ सती हुई थी, उनके नाम वीरता, उदारता, बुद्धितामता : किन्तु मेरी जो चोथी माता जीवित रह गई है उसका नाम प्रतिष्ठा (नेकनामी) हैं। बादशाह इस उत्तर से बहुत–बहुत प्रसन्न हुआ और उसे पाँच स्वर्णमुद्राएँ पुरस्कार में देते हुए कहा, हो तो आखिर तुम बीरबल के ही बेटे! जैसा बाप बुद्धिमान था वैसे ही तुम भी हो। जल्दी – जल्दी बड़े हो जाओ । फिर मैं तुम्हे भी मन्त्री बना दूँगा। इस दृष्टांत से पता चलता है कि पुत्रों में पैतृक परमपरा से कई गुण आते हैं।

दोष दर्शन का स्वभाव बदलो

एक माली था । वह खाली टोकरी लेकर बगीचे में उगे हुए पौंधो के पास फूल तोडने के लिए गया। वहाँ कुछ देर तक चमेली, मोगरा, कनेर. गैंदा आदि के फूल तोड़–तोड़कर अपनी टोकरी में वह डालता रहा सहसा पास ही उसे हंसते हुए कुछ गुलाबी चेहरे दिखाई दिये। माली उनके पास जा पहुँचा। वे गुलाब के पौधे थे। एक गुलाब से माली ने प्रश्न किया क्या आप कृपया मुझे अपने

हँसने का कारण बताने का कष्ट करेंगे?

गुलाब : अवश्य परन्तु इससे पहले कि हम आपके प्रश्न का उत्तर दे, आपको हमारे एक प्रश्न का उत्तर देना होगा।

माली : अच्छी बात है। पूछिये।

गुलाब : आप इस फुलवारी में आकर फूल ही क्यों चुनते है? काँटे क्यों नही चुनते ?

माली : जिसके लिए ये फूल ही चुने जाते है, वह मनुष्य केवल फूलों से प्यार करता है, काँटो से नहीं।

गुलाब : यदि यह सच है तो फिर मनुष्य दूसरे मनुष्यों के जीवन से काँटे (दोष) ही क्यों चुनता है? फूल गुण क्यों नही? माली इस पश्न से निरूत्तर हो गया और तब उनको उन गुलाबी चेहरों के हंसने का कारण भी समझ में आ गया वे मनुष्य के स्वभाव की हंसी उडा रहे थे। मैं आशा करता हूँ कि मनुष्य दोष दर्शन का अपना स्वभाव बदलेगा गुण ग्राहकता को अपनायेगा और गुलाब के फूलों की तरह सर्वत्र अपने सद्गुणो की सुगन्ध को फैलता रहेगा, जिसमें भौंरी की तरह मित्र उसकी ओर आकर्षित हो।

भावे भावना भाविये भावे दिजे दान

दान का संबंध वस्तु की या धन की मात्रा से नहीं हैं बल्कि हमारी भावना से है। भावना से दिया गया अल्प दान भी महाफल देता है। जब की बिना भावनासे किया गया बहुत सारा दान भी अल्प फल प्रदाता है। अतः दान देते वक्त भावना का भी ख्याल रखे। हमारे शास्त्रो में जीर्ण श्रेष्ठि और पूर्ण श्रेष्ठी की घटना आती है, वह इसी बात का पुष्टी करता है। जीर्ण श्रेष्ठी भावना भाते रहे और पूर्ण श्रेष्ठी के यहाँ भगवान महावीर स्वामि ने पारणा किया ज्यादा लाभ किसे मिला? जीर्ण सेठ को क्योंकि पूर्ण सेठ ने यही सोचा की कोई भिक्षु आया है अतः इसे भिक्षा देनी चाहिए और नौकरों से भिक्षा दिलवा दी। जब की जीर्ण सेठ ने सोचा की आज प्रभु महावीर को पारणा हैं मैं चार माह से उन्हें पारणे हेतु पधारने का आग्रह कर रहा हूँ, आज प्रभु मुझ पर अवश्य ही कृपा करेंगे। उसने सारी तैयारी की। गली में सुगन्धि जल का छिड़काव किया। घर में आसोपालव के तोरण बांधे और प्रभु के आगमन की राह देखकर आँगन में खड़े-खड़े भावना भा रहे हैं। अभी प्रभु पधारेंगे मैं उन्हे व्होराकर लाभ लुंगा और प्रभु पूर्ण सेठ यहा पारण कर लेते है , देवदुन्दुगी बज गई जीर्णसेठ की भावना में रूकावट आ गई। शास्त्रकारों ने तो यहाँ तक कह दिया की यदि थोड़े समय प्रभु के पारणा में विलम्ब हो जाता तो दान देने की भावना से जीर्ण सेठ को केवल ज्ञान हो जाता। अब आप ही देखियें , कि दान देने वाली कोई खास लाभ नही मिला, दान देने की भावना वाले सेठ को अमूल्य लाभ मिला।

मातृ देवो भव

एक बार माँ और बेटे के बीच झगड़ा हुआ। ताव में आकर बेटे ने माँ से कहां, "तुमने मुझे बड़ा किया, यह तुम्हारा उपकार, लेकिन मुझे बड़ा करने में जो-जो तुमने किया उसका बदला आज मैं चुका दूँगा। बोलो! मेरे लिए तुमने कितना खर्चा किया? कितने रूपये कपड़ों के लिए खर्च किये? कितनी रकम तुने दवा दारू के लिए खर्च की? सब सब लिखा दो। आज मैने फैसला किया हैं कि मेरे लिए खर्च की गयी रकम सूद सहित वापस कर दूँ। हिसाब पूरा लिखा दो।"

"लिखवा तो दूँगी। बेटे! लेकिन कब से लिखाउं?
क्यों? जब मेरा जन्म हुआ तबसे ! पहले दिन से ही"!
पहले दिन मैने तुझे सीने से लगाया था ओर दूध पिलाया था।

फिर तुझे गोद में लेकर आनंद विभोर होकर मैं तेरी ओर देखते ही रही थी। आँखों से आँसू बहाये थे। बोलो? वह दूध जो पहले दिन मैने तुम्हे पिलाया था, उसका प्रति लिटर मूल्य तुम क्या तय करोगे? और कौन से कॉम्प्युटर पर तुम उन आँसू की बूंदो की गिनती करोगे? और आँसू की हर बूँद के लिए कितने सिक्के तुम मुझे दोगे?

बेटे का सारा गुस्सा हवा हो गया। माँ के कंधे पर उसने अपना माथा रख दिया और सिसकियाँ लेते हुए वह रोने लगा रोते रोते कहने लगा मुझे माफ कर दो माँ। गुस्से में न जाने मैने क्या क्या कह दिया।

जीवन में नम्रता का स्थान महत्त्वपूर्ण है

विनय, सेवा, सहायता आदि गुणों के समूह को ही धर्म कहते हैं। धर्म ही है जो पशु एवं मनुष्य के अन्तर को स्पष्ट करता है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये प्रवृत्तियाँ पशु और मनुष्य दोनों में होती है, परन्तु अकेला धर्म ही मनुष्यों में अधिक होता है। जो धर्म से रहित है, वे मनुष्य पशु, तुल्य, धर्म का पालन गुण है। नम्रता और विनय अगर आपके पास में ।

एक रूपक द्वारा विनय पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला गया है। समुद्र ने एक दिन नदी से कहा, "तू बहुत सी चीजें अपने साथ बहा-बहाकर भेंट करती है, परन्तु मुझे उनसे संतोष नहीं है"। नदी- "तो आप क्या चाहते हैं? जो भी चाहते हैं निःसंकोच बता दीजिए। आपको संतुष्ट करने के लिए मैं उसे ले आऊँगी"। समुद्र-"मैं वेत्रलता से मिलना चाहता हूँ। क्या उसे ला सकेगी तूं? नदी-क्यों नहीं? जब मैं बड़े-बड़े पेड़ों को अपने साथ बहाकर लाती हूँ। फिर नदी ने बाढ़ पर बाढ़ लाकर वेत्रलता को उखाड़ना चाहा, किन्तु उसमें उसे जरा भी सफलता नहीं मिली। वह अत्यंत निराश होकर समुद्र के पास आई और बोली, "जिसमें विनय होता है, नम्रता होती है उसे उखाड़ने की

शक्ति किसी में नहीं है"। मैंने बाढ़ के द्वारा उसे उखाड़ना चाहा और वह तत्काल झुक गई। मैं क्या करूं? उसकी नम्रता के सामने मेरी शक्ति कुछ भी काम नहीं आ सकी। मैं हार गई। क्षमा करें।

समर्पण के बिना सिद्धि संभव नहीं

गुरु के प्रति सर्मपण के भाव से ही भगवान की प्राप्ति संभव है जो मनुष्य समर्पित होकर गुरु के चरणों में पहुँचता है उसे गुरु अपनी सर्व सिद्धियाँ तक दे देते है। विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस के प्रति अपने को समर्पित कर दिया उनकी सेवा और शुश्रूषा के कारण ही अंतिम समय में अपना हाथ युवक नरेन्द्र के सिर पर रखा उस समय नरेन्द्र को विशेष अनुभूति हुई जिसके लिए विवेकानन्द ने कहा है कि उस समय जो तरंगे मुझमें प्रवाहित हो रही है उसका वर्णन शब्दाजीत है। स्वयं परमहंस ने कहा था कि आज मैंने अपनी सारी सिद्धियाँ को तुम्हें दे दी है। गुरु में ऐसी शक्ति होती है कि वे अपने ज्ञान नेत्रों से अन्तर्मन में बैठे चिदानन्द स्वरूप का दर्शन कर सकते हैं। जिसे धर्म का ज्ञान होता है, वह गुरु के प्रति पूर्णतः समर्पित होता है, और समर्पित शक्तियाँ अद्‌भुत होती है। आपको रुपक के माध्यम से समझाते हैं।

नदी के तट पर रखे घड़े को देखकर नदी की बहती हुई मिट्‌टी ने कहा–भाई घट! तुम और मैं तो एक ही जाती के हैं। एक ही स्थान पर हमारा जन्म हुआ है। फिर क्या कारण है कि मैं तो धारा के साथ बह चली जा रही हूँ और तुम धारा के जल को अपने में समेट कर तट पर बैठे इठला रही हो। यह सुनकर घट ने कहा, बहिन मैंने एक दिन स्वयं को कुम्हार के हाथों में समर्पित कर दिया। उसने मुझे तोड़ा, फोड़ा, रौंदा, जल के साथ मिलाकर मुझे पीटा और चाक पर चढ़ाकर खूब घुमाया। इसके बाद उसने मुझे आग के हवाले कर दिया। मगर मैं सारी पीड़ा सहती रही। आग में जला नहीं बल्कि तप कर ठोस हो गया उसी का परिणाम है कि मुझमें पानी को कैद करने की क्षमता पैदा हो गई है। नदी की बहती मिट्‌टी ने कहा–अरे! यह तो बड़ा कठिन कार्य है। इनमे तो कष्ट ही कष्ट है। घट ने कहा, बहिन! सरल मार्ग तो यही है कि धारा के साथ बहते हुए नष्ट हो जाओ। तुम्हारा मार्ग धीरे–धीरे तुम्हें नष्ट कर देगा। तुम भटकती हुई, अन्त में खारा समुद्र में गिर पड़ोगी जहाँ कोई तुम्हारी सुध लेने वाला नहीं होगा। जीवन में समर्पण का भाव कुछ करने के लिए, कुछ बनने के लिए आवश्यक है।

जीवन का लक्ष्य

एक बहरा, एक अंधा और एक लंगड़ा तीनों जा रहे थे। रास्तें में उन्हें एक नंगा भी मिल गया। चलते–चलते उन्हें शाम हो गई। अचानक बहरा बोला–अरे! मुझे डाकुओं की आवाज सुनाई दे रही है। अंधे ने रुक कर कहा–सुनाई क्यों दे रही है वे तो हमारी ओर ही आ रहे हैं। लंगड़ा बोला–

डाकुओं से बचने में ही फायदा है, मैं तो भागा। यह सुनकर नंगा बोला–तुम सब ने तो अपना बचाव कर लिया है। अब डाकुओं के हाथों लूटा तो मैं ही जाऊँगा। यही स्थिति संसारियों की हो रही है। जिसके पास कुछ भी नही होता। वे ही अपने सुरक्षा में लगे हैं। जिन्होंने सम्यक्त्व का सहारा ले लिया उन्हें किसका भय है। वे निर्भय होकर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकते हैं। जीवन का लक्ष्य मात्र मनो विनोद करना ही नहीं है। जीवन तो उच्च आचरण का निर्वाह करते हुए आत्म स्वरूप को जानकर लक्ष्य प्राप्ति का कर्म स्थल है।

माँ की ममता

महाभारत युद्ध के दौरान द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने एक रात चोरी–छिपे द्रौपदी के पांचो पुत्रों को मार दिया। सुबह उनके शव देखकर पांडव में हलचल मच गई। हर ओर रुदन व चीरव–पुकार के स्वर गूँजने लगे। द्रौपदी तो अपने पाँचों पुत्रों के शवों को देखकर विक्षिप्त सी हो गई। वह रह–रहकर अचेत हो जाती है। फिर जरा सा होश में आते ही जोर–जोर से विलाप करने लगती। उसके करूण क्रंदन से पूरे वातावरण में हाहाकार मच गया। पांडव यह देखकर हत्यारे की खोज में लग गये। कुछ ही देर में उन्हें पता चल गया कि पांडव पुत्रों का वध गुरु पुत्र अश्वत्थामा ने किया है। वे उसे पकड़कर द्रौपदी के सामने ले आए। उस समय द्रौपदी जड़वत बैठी थी। पांडव द्रौपदी की दयनीय दशा देखकर बोले,–पांचाली लो इस पापी का सिर धड़ से अलग कर दो। अपराधी तुम्हारे सामने है। सभी द्रोपदी की ओर देखने लगे। द्रौपदी ने यह सुनकर आंसुओं से भरा अपना चेहरा उठाया और एकटक अपराधी अश्वत्थामा को देखने लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उसने कहा, अश्वत्थामा को छोड़ दो इसे मारने पर आपके गुरु और गुरु पत्नी को तीव्र वेदना और पीड़ा होगी जैसा कि इस समय मुझे हो रही है। इसे मारने पर इसकी माँ का हृदय छलनी हो जाएगा । इसकी जान लेने से मेरे बेटे तो मुझे वापस नहीं मिलेंगे किन्तु एक माँ की ममता का खून अवश्य हो जाएगा । मैं एक माँ की गोद सूनी नहीं करुंगी। द्रौपदी की यह बात सुनकर पांडव और वहाँ उपस्थित सभी लोग हैरान रह गये।

अमृत मानव के हृदय में

मन मथुरा दिल द्वारका काया काशी जान। दशो द्वारका देह मा तामा ज्योत पिचान।।

हिरन की नाभि में सुगन्धित कस्तुरी रहती है। किन्तु वह कस्तूरी को अपनी नाभि में नहीं पर बाहर ढूँढती है। जिस दिशा से हवा आती है, उस दिशा में दौड़ता है, सौरभ पाने को, किन्तु उसके हाथ कुछ नही आता है आज मानव की भी यही दशा है। आज तक उसने सुख पाने के लिए अन्तर में डुबकी नहीं लगाई वह सुखों को बाह्य जगत में एवं पर पदार्थों में ढूंढता रहा । जैसे

कस्तूरी मृग कस्तूरी को बाहर ढूंढने में अपने प्राण तक गुमा देता है वैसेही हमारी आत्मा ने पर पदार्थों में से सुख ढूंढने के पीछे भवोभव बर्बाद कर दिये है।

शान्त चित्त से सोचिए कि सुख कहाँ से आता है? यह जानने के लिए एक रुपक देव और दानवों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया। उसमें से अमृत निकला वह देवो ने ले लिया किन्तु इस अमृत को रखना कहाँ? यह सवाल खड़ा हुआ।

देवों की सभा में यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि अमृत रखना कहाँ? जिससे वह सुरक्षित रहे और दानव एवं मानव के हाथ न लगे...एक देव ने सुझाव दिया ऐसा करो, पर्वत के उच्च शिखर पर ले जाकर रख दो किन्तु दूसरे देव ने कहा-जिस मानव ने माउण्ट एवरेस्ट को पारकर लिया वह किस शिखर पर नहीं पहुँच सकता। तो फिर कहाँ छुपाएं अमृत.....?

किसी देव ने कहा-पर्वत की गुफा में या खाई में छुपा दो।

अरे! भाईया, जिस मानव ने मीलों लम्बी खाईयाँ खोद ली। वह गुफा में अमृत रहने देगा क्या। एक समझदार देव ने अमृत रखने का स्थान दर्शाते हुए कहा-मित्रों अमृत ऐसे स्थान पर रखो कि जहाँ मनुष्य को ढूँढने की इच्छा ही नहीं हो। तो ऐसा स्थान कौन सा है? देवो ने पूछा, तब देव ने कहा-वह स्थान है मानव का हृदय। यदि हम मानव के हृदय में अमृत रख देंगे तो वह सदा के लिए सुरक्षित हो जाएगा। कदापि मानव उसे अपने हृदय में नहीं ढूंढेगा। सभी देवों को यह सुझाव पसंद आय और उसी दिन अमृत मानव के हृदय में रख दिया। उसी दिन से मानव अमृत को बाहर ढूंढ रहा है। परन्तु अपने हृदय में कभी भी अमृत नहीं ढूंढता है। उसने कभी अपने हृदय में झांककर नहीं देखा कि अमृत यहाँ पड़ा है। मात्र बाह्य दुनियां में अमृत की शोध कर रहा है। किन्तु आज तक मानव अमृत प्राप्त नहीं किया।

हृदय की पवित्रता से ही यात्रा सफल बनती है

हृदय की पवित्रता के बिना तीर्थयात्रा या अन्य धर्माराधना भी फलदायी नहीं होती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सर्वप्रथम पापों से मुक्त बनों । पापों से शुद्ध होकर ही अन्य धर्मानुष्ठान करो क्योंकि पाप में लिप्त मानव अन्य धर्माराधना करता है तो वह शुद्ध कैसे होगा । एक कुल पुत्र था। उसने अपने माता से कहा - माँ! मैं अड़सठ तीर्थों की यात्रा करने जा रहा हूँ। तुम मेरी चिन्ता मत करना।

माता ने कहा की तूं खुशी से यात्रा करना किन्तु मेरी एक तुम्बडी साथ में लेते जाना। सभी तीर्थों में उसे स्नान कराना और जब तूं लौटे तब मेरी तुम्बडी मुझे लाकर देना। माता ने पुत्र को एक तुम्बडी दे दी। तुम्बडी लेकर कुल पुत्र तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ा। सभी तीर्थों में वह माता

द्वारा प्रदत तुम्बडी को अवश्य ही स्नान करवाता। जब अड़सठ तीर्थों की यात्रा हो गयी। तब कुल पुत्र घर लौट आया उसने माता को वह तुम्बडी देते हुए कहा तेरी आज्ञानुसार सभी तीर्थों में मैने इस तुम्बडी को स्नान करवाया है।

माता ने कहा–अच्छा किया तूने। आज मैं इसी तुम्बडी की सब्जी बनाकर सभी को खिलाती हूँ। माता ने तुम्बडी की सब्जी बनाई। जब कुल पुत्र खाना खाने बैठा तब उसे वह तुम्बडी परोसी। तुम्बडी की सब्जी का एक कवल मुँह में डालते ही कुल पुत्र थू...थू... करने लगा। तब माँ ने पूछा– क्या हुआ बेटा.....? यह तुम्बडी तो कड़वी जहर है। कुल पुत्र ने मुँह बिगाड़ने हुए कहा। माता बोली...वत्स.....! इस कड़वी तुम्बडी को अड़सठ तीर्थों में स्नान करने से भी यह मीठी नहीं हुई। कड़वी ही रही। क्योंकि तुम्बडी को यात्रा से कोई मतलब नहीं था। ठीक उसी प्रकार से हृदय की पवित्रता के बिना तीर्थ यात्रा या अन्य धर्माराधना भी फलदायी नहीं होती है। सबसे पहले पवित्र बनो, शुद्ध बनो, तब ही आपके तीर्थ यात्रा या अन्य जप, तप, सफल होता है।

प्रेम दया करुणा के फूलों से जग को महकाया
लाखों लोग के जीवन में धर्म का रस बरसाया।

संगति का प्रभाव

स्वाति नक्षत्र की जल बूंद में मोती बनने की क्षमता रही हुई हैं, परन्तु इतने मात्र से ही वह मोती नहीं बन पाती। वह बूंद सीप के मुँह में गिर तो ही मोती बन सकती हैं, वरना नहीं। यदि वह बूंद सागर में पड़े तो खारा बना देती हैं उसी बूंद को नाली गंदा बना देती हैं, सर्प उसे जहरीला बना देता हैं, मिट्टी उसे कीचड़ बना देती है। वही बूंद सीप के मुँह में गिरे तो ही मोती बन जाती है, वास्तव में योग्यता होने पर जैसी संगति बनती हैं वैसा ही फल प्राप्त हो पाता है।

पहले लायक बनो ?

एक बड़े नगर के मेन बाजार की एक दुकान ऊपर बोर्ड लिखा था कि यहाँ मन पसन्द लड़कियाँ मिलती है। एक मनचाहा युवक वहाँ पहुँचा। दरवाजा बंद पाया दरवाजा खोला उसे दो दरवाजे मिले एक पर लिखा काली लड़की, दूसरे पर लिखा गोरी लड़की। युवक ने गोरी लड़की वाला दरवाजा खोला वहाँ दो दरवाजे और नजर आये। वहाँ लिखा हुआ था एम. ए. पास दूसरे पर लिखा था अनपढ़। युवक ने एम.ए. पास दरवाजा खोला वहाँ फिर उसे दो दरवाजे नजर आए। एक पर लिखा कामवाली दूसरे पर लिखा बिना कामवाली । युवक ने काम वाली का दरवाजा खोला। वहाँ उसको दो दरवाजे और मिले। एक पर लिखा दो हजार मासिक कमाने

वाली, दूसरे पर लिखा बिना कमाने वाली। लड़के ने दो हजार वेतन वाली का दरवाजा खोला। सामने एक बड़ा शीशा (कांच) लगा हुआ। नीचे लिखा था अनेक गुणवाली बीबी चाहिए परन्तु पहले शक्ल तो आईने में देखिए क्या आप लायक है।

मृत्य क्या है?

मृत्यु है क्या? परमात्मा के दरबार से आने वाली इन्कम टैक्स की तारीख है। प्रभू के घर जीवन का हिस्सा देने का दिन है। अगर हिसाब में घोटाला होगा तो मृत्यु से घबराहट तो होगी पता है। मृत्यु से कौन घबराता है। जिसके जीवन का हिसाब गड़बड़ होता है। इन्कम टैक्स के ऑफिस में वही घबराता है। जिसका बही खाता गलत है।

अभिमान का चूरा

एक किसान बहुत घमण्डी था। किसी के घर में मौत होती तो वह घोड़े पर चढ़कर उसके घर जाता। सभी लोग तो अर्थी को कंधा देते चलते मगर वह बड़ी शान के साथ घोड़े पर चलता। लोगों को बहुत बुरा लगता। मगर करे क्या? ऐसे मौके पर कोई कुछ कह भी तो नहीं सकता था। एक दिन ऐसा भी आया कि लोगों को उसे सबक सिखाने का मौका मिल गया। हुआ यूं कि उसकी माँ का देहावसान हो गया। गाँव के लोगों को पता चला तो उन्होंने उसे ठीक करने की सोची। सबसे सलाह-मशविरा किया और उस समय तो वह किसान हैरान रह गया कि गाँव के लोग एक-एक करके घोड़ियों पर बैठकर उसके घर आने लगे थे। कुछ ही देर में वहाँ घोड़ियाँ ही घोड़ियाँ हो गई। वह किसान परेशान। उसके घर में उसकी माँ और वह दो ही सदस्य थे। कहीं कोई रिश्तेदार तक नहीं था। अर्थी उठाने का वक्त हो गया मगर उठाएं कौन? गाँव के लोग तो घोड़ियाँ पर बैठे थे। उस किसान को अक्ल आ गई। उसने सबसे माफी मांगी और कहा आज के बाद ऐसा बर्ताव में कभी नहीं करुंगा। उसका चूर-चूर हो गया।

खुली आँख का सपना

तीन दोस्त घूमने गये। सांझ हो गई थी सोचा की यहीं खाना बना लें। और कुछ तो बना नहीं सकते थे। अतः विचार किया कि खीर बना लेते हैं, खीर बनाना सबसे सरल है। दूध उबालों चावल डालो चावल पक जाये तो शक्कर डाल दो बस खीर तैयार। ऐसा ही किया पेट भर तीनों ने खीर खाई, खाने के बाद आलस आने लगा। तीनों ने विचार किया कि आज यहाँ ही जाते हैं। कल सुबह अपने गाँव चले जायेंगे। खीर उन्होंने पेट भरकर खाई थी फिर भी एक प्याला खीर बच गई थी। अब तो पेट में जगह नहीं थी सुबह उठकर खा लेंगे, एक ने कहा। दूसरा बोला लेकिन खीर तो एक प्याला है और खाने वाले तीन, फैसला हो जाए की सुबह कौन खायेगा। दोस्त ने कहा

की अब इसमें फैसला क्या करना? रात में जिसको अच्छा सपना आएगा वही खीर खा लेगा। सुबह सब अपने-अपने सपने सुना देंगे। यह तो बहुत अच्छी बात थी। तीनों को जम गई और तीनों सो गये। रात को तीन-चार बजे होंगे एक मित्र उठा सोचा पता नहीं कौन? कैसा? क्या? सपना बताए और कौन निर्धारण करेगा कि किसका सपना अच्छा? बस खिड़की में से उसने खीर का प्याला उठाया और सारी खीर खा गया। खीर खाकर फिर सो गया। सुबह हुई दोस्तों ने कहा, अपने अपने सपने सुनाओ, एक दोस्त ने कहना शुरु किया, रात को सपने में मुझे भगवान राम अयोध्या ले गये थे। माता-सीता के दर्शन कराये। पिता दशरथ से मिलवाया और पूरी अयोध्या नगरी का भ्रमण कराया। माता सीता ने अपने हाथ से मुझे भोजन कराया मैं कितना पवित्र हो गया। मेरे से अच्छा सपना किसी ने नहीं देखा होगा। मैंने सभी के दर्शन कर लिए। अब खीर का प्याला मैं खाऊँगा दूसरे ने कहा, अब तू बैठ जा, तूने मेरा सपना अभी कहाँ सुना जरा मेरा सपना भी तो सुन। रात को भगवान शिव आए और मुझे हिमालय ले गए। वहाँ उन्होंने मुझे सभी तीर्थों के दर्शन कराए। चारो धाम दिखाए, माँ पार्वती के दर्शन भी कराये। मैं तो सभी तीर्थों के दर्शन करके आया हूँ। कैलाश के दर्शन, अष्टापद पर आदिनाथ के दर्शन मेरे जैसा तो तेरा सपना नहीं है। इसलिए खीर मैं खाऊँगा। दोनों झगड़ने लगे। दोनों अपने-अपने सपने को श्रेष्ठ बताने लगे। इतने में तीसरे ने कहा, तुम दोनों शांत हो जाओ मेरा सपना भी सुन लो उसने कहना शुरु किया, मैं तो रात भर आराम से सोया था कि अचानक हनुमान जी गदा लेकर आए और धमकी देकर कहने लगे कि खड़ा हो जा। मैंने कहा कि हनुमानजी आपकी अप्रसन्नता का कारण क्या है? उन्होंने मुझे गदा दिखाई मैं चुपचाप हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। दोस्तों ने पूछा, फिर क्या हुआ? चल खिड़की के पास हनुमान जी बोले मैं खिड़की के पास गया। हनुमान ने कहा, चल उठा खीर का प्याला खा । मैंने कहा हनुमानजी क्षमा करें मेरे दो दोस्त और है वे बुरा मानेंगे। हनुमानजी ने गदा दिखाते हुए कहा कि खाता है या नहीं...मैं तो एक दम डर गया। प्याला उठाकर खीर खा गया। दोस्तों ने कहा, तुम सपने की बात कर रहे हो या...? वे जल्दी से खड़े हुए और खिड़की के पास गए और देखा कि खीर का प्याला खाली है। उन्होंने कहा कि तुने तो गजब कर दिया। सपने को हकीकत में बदल दिया लेकिन तुने हनुमानजी से यह क्यों नहीं कहा कि मेरे दो दोस्त और हैं उन्हें भी खीर खिला दूँ। मैंने तो कहा था बिल्कुल यह कहाँ की मेरे दो दोस्त और हैं। तो हनुमानजी ने कहा, एक तो अयोध्या गया दूसरा कैलाश पर्वत गया यहाँ पर तूं अकेला है। खाले तुम सपनों को भी सच समझ लेते हो। इसलिए भगवान कहते हैं कि जो सोता है उसके अर्थ नष्ट हो जाते हैं। सोए हुए कुछ भी हासिल नहीं होता। यहाँ लोग खुली आँखों से सोते है। पंतजली ने योगशास्त्र में मनुष्य के चित की तीन दिशाएँ कहीं हैं । (1) सुम्त (2) जाग्रत (3) स्वप्न हम स्वप्न की दिशाएं में है।

पद प्रतिष्ठा स्वप्न यानी संसार

पद और प्रतिष्ठा पाने के चक्कर में हमारा अपना जीवन नरक बना जा रहा है। पद की राजनीति का बड़ा छिछलापन है। इस राजनीति में तो संकल्प भले ही हम देश–सेवा का दोहराएं लेकिन शायद ही किसी नेता का आचार व्यवहार ऐसा बोलता होगा की देश कितना सुरक्षित है। उसकी उन्हें चिंता नहीं। हाँ अपनी कुर्सी कितनी सुरक्षित हैं, उसकी चिंता सताए जा रही, हमारी संस्कृति के विकास की किसको परवाह हैं? सब अपनी जेबों को भरने में लगे समाज और देश के कल्याण की बातें करने वाले सिवा स्वार्थी गोरख धंधे के नेता पर तो सारी व्यवस्था के दायित्व होते हैं। नेता को तो ऐसा नेतृत्त्व प्रदान करना चाहिए जिस पर समाज, देश, गौरव कर सके, देश को समाज को खुशहाल बना सके। समृद्धि की नई दिशाएँ दिखा सके।

पद पाने की लालसा अब तो समाज में भी इतनी बढ़ गई है कि धार्मिक या सामाजिक संस्थाओं में भी चुनावों में खड़े होने की होड़ लगी रहती है। अपनी अहम पूर्ति के लिए ये समाज के नेता लोग अपने पद को बचाने के लिए समाज के दो टुकड़े करने में भी नहीं चूकते हैं। यह प्रतिष्ठा पाने के पीछे अगर धर्म समाज में विभेद होता हैं। तो वह पद त्याज्य हैं। हमें अपने जीवन को छिछली राजनीति का मुखौटा नहीं पहनाना हैं। अन्यथा कुर्सी पाने के चक्कर में तुम अपने सारे गिरा बैठोगे।

कथाः– ऐसा हुआ एक बार दो नेता पर यात्रा कर रहे थे। जहाज में करीब 400 यात्री और भी थे। एक दिन अचानक जहाज हिलने लगा। सभी परेशान नाविकों ने देखा कि एक बड़ा सा मगरमच्छ जहाज को नीचे से धक्का मार रहा है, वह संभवतः भूखा होगा, लेकिन जहाज में इतना भोजन नहीं था कि उसे मगरमच्छ को डाला जा सकें एकाएक किसी यात्री को न जाने क्या सुझी उसने जहाज के डेक पर पड़ी एक कुर्सी समूह में फेंक दी मगरमच्छ उसी कुर्सी को साबुत ही निगल गया। इसके बावजूद भी उसका जहाज को धक्का मारना नहीं रुका। मारने का क्रम जारी रहा तो लोगों ने न जाने क्या सोचकर एक नेता को फेंक दिया। मगरमच्छ उसे साबुत ही निगल गया। मगर उसकी हलचल बंद न हुई तो जहाज के यात्रियों ने दूसरे नेता को भी समुद्र में फेंक दिया। पता नहीं क्यों उन दो नेताओं को खाकर मगरमच्छ शांत हो गया।

इधर मल्लाहों ने जाल डालकर उस मगरमच्छ को पकड़ लिया। उसे खींचकर जहाज के डेक पर लाया गया। मल्लाहों ने यह सोचकर कि संभव है इस के पेट में दोनों में कोई जीवित हो। उन्होंने मगरमच्छ का पेट काटा और जब मगरमच्छ का पेट काटा गया तो वहाँ खड़े लोगों ने दांतो तले अंगुलियाँ दबा ली उन्होंने देखा कि दोनों नेता आपस में गुत्थम–गुत्थी कर रहे थे। क्योंकि वहाँ नेता दो थे, कुर्सी एक थी। यह है पद की लौलुप्ता।

जिये अन्तर्हृदय से

अन्तर हृदय की पुकार के लिए एक प्यारी–सी घटना है। भक्त सूरदास एक हाथ से करताल बजाते हुए और दूसरे हाथ से इकतारे पर तान छेड़ते हुए अपने नटखट लाल की भक्ति में लीन थे। पंचम सुर में आलाम चल रहा था। एक अंधे व्यक्ति की आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी प्रेम और श्रद्धा से पूरित धार। अन्तर–हृदय से उठने वाली वह पुकार, वह आँसुओं की धार इतनी कसक भरी थी कि राधा और कृष्ण को उस भक्ति के सामने साकार होना पड़ा। राधा–कृष्ण ने सूरदास से कहा–भक्त हम तुम्हारे सामने हैं। आँखें खोलो। जीवन में पहली बार सुर को अपने अंधत्व का अहसास हुआ। एक भगवान भक्त के द्वार पर खड़े है और कह रहे हैं कि अपनी आँखें खोलों मगर भक्त मजबूर है। तभी कृष्ण राधा को देखकर मुस्कुराये और कहने लगे राधा तुम्हें मालूम नहीं है कि सूरदास के पास आंखे नहीं जिससे कि वे तुम्हें देख सके। राधा को बात समझ में आ गई और राधा ने कहा सूरदास तुम अंधे हो। हम तुम्हारे द्वार तक पहुँचे है और हमारा आना व्यर्थ नहीं जाता । माँगों भक्त, तुम क्या मांगते हो? सूरदास ने कहा– माँ मुझे आप कुछ देना ही चाहती है तो वे आँखे दीजिए जिनसे मैं अपने राधा और कृष्ण को देख सकूं मैं अपने प्राणाहार को निहार सकूं। राधा ने कहा तथास्तु और सूरदास को आँखे मिल गई। आँखे पाकर सूरदास की खुशी की सीमा न रही। खुशी इस बात की नहीं थी कि आँखे मिल गई पर खुशी इसलिए थी कि आज उसने भगवान को देखने का मार्ग पा लिया था। वह बहुत रोया। उसका हिया उमड़–घुमड़कर रो रहा था। वह रोना नहीं था पर आनन्द की अश्रुधारा थी, प्रसन्नता और आनंद में बहते आँसुओं की छलछलाहट थी हृदय के फूलों की खिलावट थी। सूरदास ने अपने आँसुओं से राधा कृष्ण के पांवों को धोया और अपने गालों से उन्हें पोंछा। कृष्ण यह सब भाव विह्वल होकर देख रहे थे उन्होंने सूरदास से कहा भक्त इतना काफी है। मैं जानता हूँ कि तेरे रोम–रोम में मैं समाया हुआ हूँ। राधा जब मुझे यहाँ लेकर आई थी तो इस वचन के साथ कि आज आप भी सूरदास को कुछ न कुछ अवश्य देंगे। इसलिए राधा की प्रसन्नता के लिए माँगों कुछ भी माँगो में देने का वचन देता हूँ। तो सूरदास ने कहा, प्रभु अगर आप मेरी इच्छा–पूर्ति ही करना चाहते हैं तो राधा द्वारा दी गई आँखे वापस ले लो, कृपा होगी। राधा चौकी कि यह क्या सूर आँखे लौटा रहे है। सूरदास ने कहा कि हे माता, जिन आँखों ने परमात्मा को साक्षात देख लिया हो, मैं नहीं चाहता हूँ कि वे आँखे संसार के किसी और तत्त्व को देखने में काम आए। कृष्ण ने कहाँ सूर तुम धन्य हो। लोगों की दृष्टि में तुम भले ही दृष्टिहीन बनके रहोगे पर तुम्हारी आँखे देखती रहेगी और मेरा वास तुम्हारे नेत्र में रहेगा। इस घटना पर इतिहास विश्वास करे या नहीं करे लेकिन एक हृदयवान व्यक्ति इस पर कभी अविश्वास नहीं कर सकता। भक्ति का सम्बंध इतिहास से नहीं होता भक्ति का सम्बंध तो हृदय से होता है।

सज्जनता का काठा

यदि आप सज्जन बनना चाहते हैं, तो निम्नलिखित काठे का सेवन करने से अपने आप सज्जनता आते देर नहीं लगेगी–

(1) सच्चाई के पत्ते 1 तोला
(2) ईमानदारी की जड़ 2 तोला
(3) उदारता का अर्क 3 तोला
(4) परोपकार का बीज 5 तोला
(5) सत्संग का रस 1 तोला
(6) रहम दिल का छिलका 4 तोला
(7) स्वदेश का प्रेम का रस 5 तोला
(8) दान–शीलता का सिरका 7 तोला

बनाने की विधि– उपर्युक्त सब चीजों को एक साथ मिलाकर, परमात्मा की हांडी में मिलाकर स्नेह भाव के चूल्हे पर रखकर प्रेम की अग्नि में पकायें। फिर अच्छी तरह से पक जाने पर नीचे उतारकर ठण्डा करें, फिर शुद्ध मन के कपड़े से छान कर मस्तिष्क की शीशी में भर लें।

सेवन विधि– इसको प्रतिदिन संतोष के गुलकंद के साथ इन्साफ की चम्मच से तीन बार सुबह, दोपहर एवं शाम को सेवन करें।

परहेज रखना – क्रोध की मिर्च, अहंकार का तेल, लोभ की मिठाई, स्वार्थ का घी, धोखे का पापड़, इन सबसे सावधान एवं दुराचार की भावना से बचना।

जीवन में स्वीकारे

सफेद बाल निवृत्ति के प्रतीक हैं। जब तुम भोजन करने बैठते हो तो अंत में चावल आते हैं। चावल आने का अर्थ है– भोजन पूरा हुआ। अब रस–मलाई और मिठाई नहीं आयेगी, केवल पानी आएगा। अतः अब पानी पीकर और हाथ–मुँह धोकर उठ जाना हैं। इस प्रकार जब तुम्हारे मस्तिष्क रूपी थाली में सफेद बालरूपी चावल परोस दिये गये हों तो संसार से हाथ जोड़कर सन्यास ले लेना चाहिए।

गुरु बिना सब अनर्थ

रावण बड़ा शक्तिशाली था रावण में शक्ति तो थी मगर भक्ति नहीं। बिना भक्ति की शक्ति कितना अनर्थ करती है। यह रावण से सीखें....

रावण ने सोचा था-

समुद्र का पानी मीठा कर दूँगा
चन्द्रमा का कलंक निकाल दूँगा
स्वर्ग तक सीढ़ी लगा दूँगा।
पर कुछ नहीं कर पाया ।
रावण के पास सब कुछ था
तख्त, ताज, वैभव-विलास, अगर नहीं था तो
रावण का कोई गुरु नहीं था।
बिना गुरु की शक्ति, बिना गुरु की बुद्धि,
बिना गुरु की संपत्ति-कितना अनर्थ करती है,
इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है-रावण

धर्म का आचारण

महावीर वाणी है :- जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं। वे फिर वापस नहीं लौटते। जो मनुष्य अधर्म करता है, उसके वे दिन-रात बिल्कुल निष्फल हो जाते हैं। लेकिन जो मनुष्य धर्म करता हैं, उसके वे रात-दिन सफल हो जाते हैं। इसलिए जब तक बुढ़ापा नहीं सताता जब तक व्याधियां नहीं बढ़ती । जब इंद्रियाँ अशक्त नहीं होती तब तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए। सेवा करनी हैं तो पद-वद के चक्कर में मत पड़ना।

बिना पद के ही सेवा में लग जाना, क्योंकि पद और मद दोनों सगे भाई हैं। पद के आते ही आदमी में मद भी आ जाता है और फिर अहंकारी आदमी सेवा कैसे कर सकता है।

पद शाश्वत नहीं है, पद से उतरते ही आदमी भूत हो जाता है, जैसे भूतपूर्व मुख्यमंत्री । संत-मुनि कभी पद नहीं लेते, इसलिए वे कभी भूत नहीं होते । क्या तुमने कभी सुना? भूतपूर्व रामचंद्रजी, भूतपूर्व महावीरस्वामीजी। पद में राजी होने वाला भूतपूर्व और प्रभु में राजी होने वाला अभूतपूर्व हो जाता हैं।

धर्म और धन दोनों औषध

लेकिन धर्म टॉनिक है। धर्म केवल पीने की दवा है। धन मलहम हैं, वह बाहर में लगाने की दवा हैं। दोनों का सही प्रयोग ही जीवन को स्वस्थ बनाता है। परन्तु दुर्भाग्य से आज कुछ उल्टा हो रहा है। धर्म को बाहर लगाया जा रहा हैं, उसका प्रदर्शन किया जा रहा है और धन पिया जा रहा है। उसे जिया जा रहा हैं, यह विसंगति ही जीवन के तनाव का कारण हैं।

महावीर से गौतम ने पूछा

हम सब कौन हैं, और संसार से हमारा क्या सम्बंध है। यहाँ याद रखने जैसा क्या है? महावीर ने कहा–गौतम? हम सब यात्री हैं। हमारा सम्बंध नदी–नाव संयोग जैसा है, देर–अबेर तो विदा होना ही हैं। मिलन के क्षण में भी विदाई न भूलो। किसी से हाथ मिलाओं तो यह मत भूलो कि कल हमें अलविदा कहना है।

फूल खिले तो खिले फूल में मुरझाये, फूल को देख लेना ।
जीवन मिले तो मिले, जीवन में मिली मौत को मत भूल जाना।

कौन जाने पिड़ पराई

हम दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर जिएं।
अपने दुःखों से दुःखी होकर तो हर कोई आँसू बहा लेता हैं।
लेकिन धर्मात्मा और ज्ञानी तो वहीं हैं जिसकी आँखें दूसरों के दुःख और पीड़ा को जाने ।

विनय का गुण

वृद्ध व्यक्ति ने अपने गाँव में नये व्यक्ति को देखा। जिज्ञासा वश पूछाः आप श्रीमान् कौन? मैं आपके गाँव के स्कूल में टीचर हूँ। आपके परिवार में कौन–कौन हैं? मैं हूँ, मेरी पत्नी है। मेरे दो बच्चे हैं, बूढ़ी माँ है। उसको हमने अपने पास ही रख लिया है। कुछ समय पश्चात् फिर एक नया व्यक्ति गाँव में दिखाई दिया वृद्ध ने फिर पूछाः आप श्रीमान् कौन हैं? मैं आपके गाँव के पोस्ट ऑफिस में नया कर्मचारी हूँ आपके परिवार में कौन–कौन है। मेरी माँ हैं पत्नी है, दो बच्चे हैं। हम अपनी माँ के पास रहते हैं। एक परिस्थिति दो मनः स्थिति

कैसा जीवन

आदमी की जिन्दगी खाने–पीने में जा रही है,
सुबह उठते ही पहला प्रश्न होता है–चाय बन गई क्या?
रात को 2 बजे तक खाता रहा, पीता रहा,खाते–पीते सो गया।
सुबह उठा तो उठते ही बोला, चाय बन गयी क्या?
मै पूछता हूँ– यह आदमी हैं या भूखमरा?
याद रखे भोजन जरूरी है,
मगर भोजन से पहले भजन जरूरी है। भजन आत्मा की खुराक है,
हमें जीने के लिए खाना है,खाने के लिए नहीं जीना है।

हे गुरुदेव !
२६ वर्षों के बाद आज भी
हर पल हर दिन आपकी यादो में
हमारी आँखे नम हो जाती है ।

...हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई (मेवाड़)

गुरुदेव के चरणो की
अगर धूल जो मिल जाये...
सच कहता हूँ ,
उनकी तकदीर बदल जाये ...

प्रकाशचंद भंवरलालजी रिसोदिया
मचिन्द (राज.)

अनिल भंवरलालजी पामेचा
झालों की मंदार (राज.)

राजेश छोगालालजी पामेचा
झालों की मंदार (राज.)

राजू भैरुलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)

दिनेश सागरमलजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)

निलेश गेहरीलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)

चंद्रेश भैरुलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)

अहिंसा का अर्थ

एक सकारात्मक मूल्य है। वह प्रेम की पराकाष्ठा है। भारतीय संस्कृति का प्राण, धर्म और दर्शन का मूल आधार है। अहिंसा अभय में जीती है, अभय अनाग्रही के पास ही ठहर पाता है। विषमता की गहरी खाई को पाटने वाला जीवन सूत्र अहिंसा है। अहिंसा महावीर का धर्म है। सत्य धर्म के विकास में अहिंसा चंदन में सुगंध का कार्य करती है। अहिंसा मनुष्य का स्वभाव है, हिंसा पशु का स्वभाव। विवेक अहिंसा को जन्म देता है, जबकि हिंसा से प्रति हिंसा होती है। प्रकृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की रक्षा अहिंसा से ही सम्भव है। अहिंसा जीवन का एक सरस संगीत है। यह वह अमोघ शक्ति है, जिसके सम्मुख संसार की सभी संहारक शक्तियाँ हार जाती हैं। इससे मैत्री और आत्म साम्य की शक्तियाँ हार जाती हैं। इससे मैत्री और आत्म साम्य की विराट हितकारी दृष्टि मिलती है। राग, द्वेष आदि अशुद्ध भावों का आत्मा में प्रकट न होने का भाव अहिंसा है। अहिंसा माता के समान समस्त प्राणियों का हित करने वाली हैं। यह संसार रूपी मरूस्थल में अमृत की नहर है। अहिंसा से हृदय परिवर्तन होता है। यह मारने का नहीं सुधारने का सिद्धान्त है। अहिंसा का अर्थ अन्याय या हिंसा के प्रति मौन नहीं है। अहिंसा एक प्रचंड शस्त्र है जिसमें परम पुरषार्थ की चिनगारियाँ है।

इसी अहिंसा के अर्थ से प्रेरित होकर हमने अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल की स्थापना की । जिसमे सात सक्रिय सदस्य है । प्रति पूनम अलग -अलग श्री पार्श्वनाथ भगवान के तीर्थो पर जाकर पूजा-अर्चना करते है । हमारे लक्ष्य 108 पार्श्वनाथ भगवान की पूजा-अर्चना करना है ।

अहिंसा पार्श्व पूनम मंडल-मुंबई (मेवाड़)

(झालों की मंदार-मचींद)

Contact

प्रकाशचंद भंवरलालजी शिसोदिया
मचिन्द (राज.)
मो.: 09820709106

अनिल भंवरलालजी पामेचा
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09821220251

राजेश छोगालालजी पामेचा
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09820388699

राजू भैरुलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09930156660

दिनेश सागरमलजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09819832793

निलेश गेहरीलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09892998610

चंद्रेश भैरुलालजी सिंघवी
झालों की मंदार (राज.)
मो.: 09867058889